



सत्यमेव जयते

वीरांगना

राजभाषा पत्रिका - 74वां अंक
वर्ष 2023-24



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-द्वितीय, मध्य प्रदेश,
लेखा भवन, झांसी रोड़, ग्वालियर - 474002

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केंद्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से; अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से; प्रशिक्षण और प्राइज़ से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाये रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे; अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए; अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा - हिंदी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे। हम राजभाषा के संवर्द्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

जय राजभाषा ! जय हिंद !

वीरांगना

राजभाषा पत्रिका - 74 वाँ अंक

वर्ष 2023-24



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) - द्वितीय, मध्य प्रदेश, ग्वालियर

लेखा भवन, झांसी रोड, ग्वालियर - 474002

ई-मेल : agaemadhyapraesh2@cag.gov.in

वीरांगना पत्रिका परिवार

मुख्य संरक्षक

श्री रवीन्द्र पत्तार

प्रधान महालेखाकार

संरक्षक

श्री श्याम सुंदर शर्मा

उप-महालेखाकार/प्रशासन

परामर्शदात्री समिति

सुश्री सरिता कुमारी गुप्ता, वरिष्ठ उप-महालेखाकार/निधि

श्री परमानंद आर्य, वरिष्ठ लेखा अधिकारी

श्री रमेश कुमार मेंदीरता, वरिष्ठ लेखा अधिकारी

संपादक मंडल

प्रधान संपादक

श्री रवींद्र सिंह बिष्ट

वरिष्ठ लेखा अधिकारी/प्रशासन

संपादिका

सुश्री प्रीति सिंह

वरिष्ठ अनुवादक

सह संपादक एवं पत्रिका अभिकल्पन

श्री रूपेंद्र कुमार कौशल

कनिष्ठ अनुवादक

संपादन सहयोग

सुश्री पुष्पा साहू

कनिष्ठ अनुवादक

सुश्री दीप्ती वर्मा

कनिष्ठ अनुवादक

श्री देवेंद्र कुमार मिश्रा

लेखापाल

-: अस्वीकरण :-

रचनाकारों के विचार उनके व्यक्तिगत विचार हैं। उनसे मुख्य संरक्षक, संरक्षक, परामर्शदात्री समिति तथा संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

अनुक्रमणिका

हिंदी दिवस 2023 के अवसर पर माननीय गृह मंत्री का संदेश	01
प्रधान महालेखाकार का संदेश	03
वरिष्ठ उप महालेखाकार/निधि का संदेश	04
उप महालेखाकार/प्रशासन का संदेश	05
संपादकीय	06
आपके पत्र	07
मुख पृष्ठ परिचय	10

गद्य संकलन

01	हिंदी के प्रचार - प्रतिष्ठा में अहिंदी भाषियों की भूमिका	लेख	सुश्री प्रीति सिंह, वरिष्ठ अनुवादक	12
02	अनोखा इंटरव्यू	व्यंग्य	श्री जे.जे. श्रीवास्तव, से.नि. पर्यवेक्षक	17
03	मंजिल	कहानी	श्रीमती पुष्पा, पत्नी श्री रूपेन्द्र कुमार कौशल	20
04	रंगोली - भारतीय संस्कृति की अमूल्य विरासत	लेख	श्रीमती अनिता करकरे, अतिथि रचनाकार	25
05	काल: क्रीडति - समय का खेल	व्यंग्य-संस्मरण	श्री रूपेन्द्र कुमार कौशल, कनिष्ठ अनुवादक	29
06	नवार्बों का शहर 'लखनऊ'	लेख	सुश्री काजल वर्मा, लेखापाल	32
07	कृतज्ञता	लेख	सुश्री दीप्ती वर्मा, कनिष्ठ अनुवादक	25
08	बयानों के थप्पड़	व्यंग्य	श्री मदनगोपाल शर्मा, से.नि. वरिष्ठ लेखापाल	37
09	संगति का जीवन में महत्व	लेख	श्री लालमणि शर्मा से.नि. टी.आई.	38

पद्य संकलन

10	ग्लोबल वार्मिंग की चैतावनी	श्री देवेन्द्र कुमार मिश्रा, लेखापाल	40
11	धुआँ - धुआँ	सुश्री ज्योति सिंह, अतिथि रचनाकार	42
12	अंतर्मन	श्री कृष्ण कुमार जांगिड़, सहायक लेखा अधिकारी	43
13	हिंदी से पहचान हमारी	श्री सूर्यकांत भारद्वाज, सहायक लेखा अधिकारी	44
14	तुम	श्री रूपेन्द्र कुमार कौशल, कनिष्ठ अनुवादक	45
15	दुर्भाग्य	श्री गौरव कुमार पाण्डेय, सहायक लेखा अधिकारी	46
16	चरित्रहीन	श्री राहुल मैत्रेय, वरिष्ठ लेखापाल	48
17	हाशिये पर बैठी हूँ...	सुश्री ब्यूटी अंकिता, अतिथि रचनाकार	49
18	म्हारे राजस्थान	श्रीमती वंदना अग्रवाल, पत्नी श्री विवेक सिंघल	50
19	स्त्री	श्रीमती रंजना ठाकुर, अतिथि रचनाकार	51
20	तनहाई	श्री आविद खान, एम.टी.एस.	52
21	मेरी माँ	श्री आविद खान, एम.टी.एस.	52
22	चार लोग	श्री रूपेन्द्र कुमार कौशल, कनिष्ठ अनुवादक	53
23	जीवन की यह गंगा धारा !	डॉ. ईश्वरचंद्र रामचंद्र करकरे, अतिथि रचनाकार	54
24	हिसाब	श्रीमती रंजना ठाकुर, अतिथि रचनाकार	55
25	बिटिया	श्री विवेक सिंघल, लेखापाल	56
26	कानपुर	सुश्री सुष्मिता श्रीवास्तव, आशुलिपिक	57
27	कामकाज	श्री सितांबर हाँसदा, वरिष्ठ लेखापाल	58
28	पेंशन	श्री विद्या प्रकाश, सहायक लेखा अधिकारी	59
29	बिल	श्री गौरव गुप्ता, वरिष्ठ लेखापाल	60
30	हिंदी	डॉ. ईश्वरचंद्र रामचंद्र करकरे, अतिथि रचनाकार	61
31	झुक नहीं सकता	श्री मदनगोपाल शर्मा, से.नि. वरिष्ठ लेखापाल	62
32	मनमानी	श्री मदनगोपाल शर्मा, से.नि. वरिष्ठ लेखापाल	62
33	एतबार मत करना	श्री ए.एच. खान, से.नि. सहायक पर्यवेक्षक	63

कार्यालयीन गतिविधियाँ

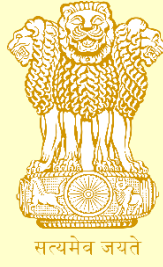
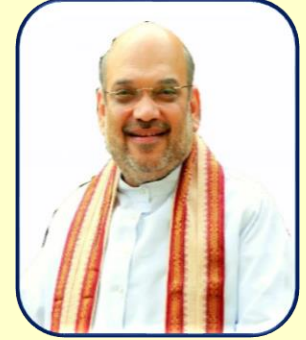
35	हिंदी पखवाड़ा – 2023	64
36	हिंदी पखवाड़ा समारोह – 2023 के प्रतियोगिताओं के परिणाम	65
37	नारा लेखन प्रतियोगिता के विजेता	66
38	जी-20 का सफल आयोजन – भारत की बढ़ती प्रतिष्ठा निबंध, प्रथम पुरस्कार, श्री कृष्ण कुमार जांगिड़, सहायक लेखा एवं नेतृत्व क्षमता का प्रमाण अधिकारी	67
39	आत्मनिर्भर भारत – स्वदेशी उत्पादन का महत्व निबंध, द्वितीय पुरस्कार, सुश्री रून्हा कुमारी, सहायक लेखा अधिकारी	69
40	आत्मनिर्भर भारत – स्वदेशी उत्पादन का महत्व निबंध, तृतीय पुरस्कार, सुश्री श्रुति पांडे, सहायक लेखा अधिकारी	71
41	खेलकूद एवं सांस्कृतिक गतिविधियाँ	73
42	कंठस्थ 2.0 – कार्यशाला	76
43	हिंदी प्रोत्साहन योजना वर्ष 2022-23 के विजेता	76
44	स्वतंत्रता दिवस - 2023	77
45	हिंदी पखवाड़े की झलकियाँ	78
46	अंतरराष्ट्रीय योग दिवस	80
47	सतर्कता जागरूकता सप्ताह	81
48	ऑडिट सप्ताह - 2023	82
49	अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस समारोह - 2024	85
50	नराकास, ग्वालियर द्वारा आयोजित प्रतियोगिताओं में कार्यालय की उपलब्धियाँ	86

“यह भारत ही है जिसने हमें सभी संख्याओं को दस प्रतीकों द्वारा व्यक्त करने की सरल विधि दी, जिनमें से प्रत्येक की स्थिति के साथ-साथ एक पूर्ण मूल्य प्राप्त होता है, एक गहरा और महत्वपूर्ण विचार जो अब हमें इतना सरल लगता है कि हम इसकी वास्तविक महत्ता को अनदेखा कर देते हैं। लेकिन इसने बहुत ही सरलता से सभी गणनाओं को बड़ी सहजता प्रदान की है, जो अंकगणित को हमारे उपयोगी आविष्कारों की पहली श्रेणी में रखते हैं और हम भारत की इस उपलब्धि की श्रद्धा की तब और अधिक सराहना करेंगे जब हम याद करेंगे कि यह इतिहास द्वारा निर्मित दो महानतम आविष्कारक आर्किमिडीज और अपोलोनियस की प्रतिभा से परे है।”

– प्रियरे साइमन डी लाप्लास (फ्रांसीसी गणितज्ञ और दार्शनिक)

हिंदी दिवस 2023 के अवसर पर माननीय गृह मंत्री का संदेश

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार



प्रिय देशवासियों!

आप सब को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत भाषिक विविधता का देश रहा है। दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र की भाषिक विविधता को एकता के सूत्र में पिरोने का नाम **‘हिंदी’** है। हिंदी भाषा अपनी प्रवृत्ति से ही इतनी जनतांत्रिक रही है कि इसने भारतीय भाषाओं और बोलियों के साथ-साथ कई वैश्विक भाषाओं को यथोचित सम्मान देते हुए उनकी शब्दावलियों, पदों, वाक्य विन्यासों और व्याकरणिक नियमों को आत्मसात किया है।

हिंदी भाषा ने स्वतंत्रता आंदोलन के मुश्किल दिनों में देश को एकता के सूत्र में बाँधने का अभूतपूर्व कार्य किया। अनेक भाषाओं और बोलियों में बँटे देश में ऐक्य भावना से पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता की लड़ाई को आगे बढ़ाने में संवाद भाषा हिंदी की महत्वपूर्ण भूमिका रही। इसीलिए, लोकमान्य तिलक हों, महात्मा गांधी हों, लाला लाजपत राय हों, नेताजी सुभाषचंद्र बोस हों, राजगोपालाचारी हों; हिंदी के शुरुआती पैरवीकारों में बहुसंख्यक उन प्रदेशों के लोग थे, जिनकी मातृभाषाएँ हिंदी नहीं थी।

किसी भी देश की मौलिक सोच और सृजनात्मक अभिव्यक्ति सही मायनों में सिर्फ उस देश की अपनी भाषा में ही की जा सकती है। प्रसिद्ध साहित्यकार भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने लिखा है कि, **“निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति कौ मूला”** यानि कि, अपनी भाषा की उन्नति ही सभी प्रकार की उन्नति का मूल है। राष्ट्र की पहचान इस बात से भी होती है कि उसने अपनी भाषा को किस सीमा तक मजबूत, व्यापक एवं समृद्ध बनाया है। यही कारण है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद संविधान निर्माताओं ने अनुच्छेद 343 द्वारा संघ की भाषा राजभाषा के रूप में हिंदी और लिपि के रूप में देवनागरी को अपनाया।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं को राष्ट्रीय से वैश्विक मंचों तक यथोचित सम्मान मिला है। हमारी सभी भारतीय भाषाएँ और बोलियाँ हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं।

अपनी भाषा में सुनी हुई अवांछनीय बातें भी बहुत बुरी नहीं लगती। कवि **विद्यापति** की शब्दावली में कहूँ तो **‘देसिल बयना सब जन मिट्टा’** यानि देशी भाषा सभी जनों को मीठी लगती है। गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग निरंतर प्रयत्नशील है कि शहद समान मीठी भारतीय भाषाओं को आधुनिक तकनीक के माध्यम से अत्याधुनिक और वैज्ञानिक प्रयोग के अनुकूल उपयोगी बनाया जा सकें।

सरकार और जनता के बीच भारतीय भाषाओं में संवाद स्थापित कर जनकल्याणकारी योजनाओं को प्रभावी तौर पर लागू किया जा सकता है। दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र जन-जन तक उनकी ही भाषा में उनके हित की बात पहुँचाकर आदर्श लोकतंत्र निर्माण का सबसे अच्छा उदाहरण हो सकता है। राजभाषा विभाग ने इसी उद्देश्य से राजभाषा हिंदी के प्रयोग को सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से सहज बनाने की दिशा में काम करते हुए स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली **‘कंठस्थ’** का निर्माण और विकास किया है। फिजी में संपन्न **‘विश्व हिंदी सम्मेलन’** में **‘न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन’** के साथ इसके नए वर्जन (कंठस्थ 2.0) के मोबाइल ऐप का भी लोकार्पण भी किया गया है।

राजभाषा विभाग की एक नई पहल **‘हिंदी शब्द सिंधु’** शब्दकोश का निर्माण है। इस शब्दकोश में संविधान की 8वीं अनुसूची में अधिसूचित भारतीय भाषाओं के शब्दों को शामिल कर इसे निरंतर समृद्ध किया जा रहा है। साथ ही, विभाग ने **‘लीला हिंदी प्रवाह’** मोबाइल ऐप भी तैयार किया है, जिसे अपनाकर विभिन्न भाषा-भाषी 14 भारतीय भाषाओं के माध्यम से अपनी-अपनी मातृभाषाओं से स्तरीय हिंदी निःशुल्क सीख सकते हैं।

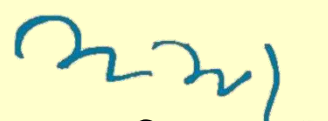
भाषा परिवर्तन का सिद्धांत यह कहता है कि भाषा जटिलता से सरलता की ओर जाती है। मेरे विचार से हिंदी के सरल और सुस्पष्ट शब्दों को कार्यालयी कामकाज में प्रयोग में लाना चाहिए। टिप्पणी, पत्राचार, ई-मेल, विज्ञप्ति आदि के लिए आम बोलचाल के शब्दों व वाक्यों के प्रयोग से हिंदी के प्रयोग का चलन बढ़ेगा।

हमारे लिए हिंदी का प्रश्न सिर्फ एक भाषा का प्रश्न नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्वाभिमान व सांस्कृतिक गौरव का विषय है। मुझे विश्वास है कि राजभाषा विभाग के उपरोक्त प्रयासों से सभी मातृभाषाओं को आत्मसात करते हुए लोकसम्मत भाषा हिंदी विज्ञानसम्मत व तकनीकसम्मत होकर संपन्न राजभाषा के रूप में स्थापित होगी।

पुनश्च, आप सभी को हिंदी दिवस की शुभकामनाएं।

नई दिल्ली,

14 सितंबर, 2023


(अमित शाह)

प्रधान महालेखाकार का संदेश



मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता है कि हमारे कार्यालय की राजभाषा पत्रिका 'वीरांगना' का 74वां अंक प्रकाशित किया जा रहा है। हिंदी के प्रचार-प्रसार, प्रयोग और प्रोत्साहन में ऐसी पत्रिकाओं की एक विशेष भूमिका है। यह पत्रिका न केवल हिंदी में कार्य करने और हिंदी को उपयोग में लाने के लिए प्रेरित करती है वरन् एक रचनात्मक भूमि भी प्रदान करती है।

हिंदी भाषा की यह एक बड़ी ही अद्भुत विशेषता है कि हिंदी अपनी बोलियों एवं उप-बोलियों के साथ ही अन्य भारतीय भाषाओं के अनेक शब्दों को भी अपने भीतर समाहित किए हुए है। संघ की राजभाषा होने के कारण यह हमारा संवैधानिक दायित्व भी है कि हम हिंदी के विकास के लिए कार्य करें तथा इसे और सरल - सहज बनाएं।

मुझे यह आशा ही नहीं अपितु अटल विश्वास है कि "वीरांगना" का यह अंक भी हिंदी के प्रचार और प्रयोग में प्रेरणादायक सिद्ध होने के साथ इसे इसके पाठकों का असीम स्नेह भी प्राप्त होगा। मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल तथा सभी रचनाकारों को बधाई देता हूँ।

रवीन्द्र पत्तार
प्रधान महालेखाकार

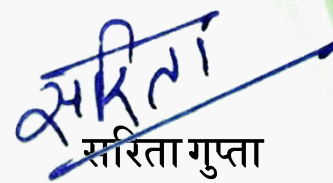
वरिष्ठ उप महालेखाकार/निधि का संदेश



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) - द्वितीय, मध्य प्रदेश, ग्वालियर की राजभाषा पत्रिका 'वीरांगना' के 74वें अंक के सफल प्रकाशन पर मैं प्रसन्नता का अनुभव कर रही हूँ। राजभाषा पत्रिका कार्मिकों की लेखन क्षमता और कौशल को प्रोत्साहित करने का सघन साधन है। मैं सभी रचनाकारों को बधाई देती हूँ जिन्होंने अपनी लेखनी से पत्रिका के इस अंक को अधिक आकर्षक व रोचक बनाने में सार्थक योगदान दिया है। पत्रिका को सुंदर रीति से प्रस्तुत करने के लिए मैं पत्रिका के संपादन से जुड़े अधिकारियों/कर्मचारियों को हृदय के अंतरतम स्तर से बधाई देती हूँ।

आशा है कि भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन एवं हिंदी के प्रचार-प्रसार में पत्रिका 'वीरांगना' सहायक सिद्ध होगी एवं राजभाषा की सेवा में सभी को अग्रसर करेगी।

पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति एवं स्वर्णिम भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।


सरिता गुप्ता

वरिष्ठ उप महालेखाकार/निधि

उप महालेखाकार/प्रशासन का संदेश



कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'वीरांगना' के नवीनतम (74वें) अंक का प्रकाशन असीम हर्ष का विषय है। कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रति निष्ठा की भावना को मजबूत करने एवं इसे समृद्ध बनाने में 'वीरांगना' की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

कार्यालय में हिंदी न केवल कामकाज की भाषा है अपितु कार्मिकों की सृजनात्मकता को अभिव्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम भी है। कार्यालय में अधिक से अधिक कार्यों को हिंदी में निष्पादित करना हमारा संवैधानिक दायित्व है जिसका पालन हमारे कार्यालय में पूरी प्रतिबद्धता से किया जा रहा है। पत्रिका का प्रकाशन राजभाषा को पल्लवित और पुष्पित करने का सफल प्रयास है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन में अपना अमूल्य योगदान देने वाले कार्मिकों, संपादक मंडल एवं अन्य सदस्यों को हार्दिक बधाई प्रेषित करता हूँ। आशा है कि राजभाषा हिंदी पत्रिका 'वीरांगना' का यह अंक सुधी पाठकों के हृदय को स्पंदित करेगा।

श्याम सुंदर शर्मा

श्याम सुंदर शर्मा

उप महालेखाकार/प्रशासन

संपादकीय



राजभाषा हिंदी के प्रति समर्पित कार्यालय की हिंदी पत्रिका “वीरांगना” के नवीनतम अंक के प्रकाशन पर अत्यधिक प्रफुल्लित हूँ।

हिंदी एक समृद्ध भाषा है जो भारत की सामाजिक संस्कृति और सभ्यता की सच्ची परिचायक और संवाहक है। अपनी सहजता, सरलता, सुग्राहिता और भौगोलिक विस्तार के कारण हिंदी देश की राजभाषा बन गई है। राजभाषा का सम्मान करना, पठन और पाठन में व्यवहार कर उसका संवर्धन और विकास करना हम सब का परम कर्तव्य होना चाहिए। कार्यालय की हिंदी पत्रिका “वीरांगना” का सतत प्रकाशन राजभाषा के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने की दिशा में प्रशंसनीय प्रयास है। इससे कार्मिकों को अपनी रचनात्मक कौशल अभिव्यक्त करने का सुअवसर मिलता है। भाषा जितनी सहज और सरल होगी, उसका प्रवाह भी उतना ही निर्बाध होगा। इस अंक में शामिल सभी लेख, कहानी, व्यंग्य, कविता आदि की भाषा यथासंभव सरल और सुबोध बनाए रखने की चेष्टा की गई है। पत्रिका के इस अंक में महत्वपूर्ण योगदान देनेवाले सभी सेवारत एवं सेवानिवृत्त कर्मियों तथा अतिथि रचनाकारों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ। मैं, संपादक मंडल के सभी सदस्यों तथा पत्रिका के प्रकाशन में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े सभी कर्मियों को भी धन्यवाद प्रेषित करता हूँ जिनके अप्रतिम सहयोग से पत्रिका को मूर्तिमान किया जा सका है।

आशा करता हूँ कि पत्रिका का यह अंक विगत अंकों की भांति पाठकों की प्रशंसा दृष्टि पाने में सफल होगा। पाठकवृंद से अनुरोध है कि पत्रिका की समीक्षा कर अपने बहुमूल्य सुझावों से अवगत कराएं जिससे कि पत्रिका के आगामी अंक को और अधिक रुचिकर और उपयोगी बनाया जा सके।


रवींद्र सिंह बिष्ट
प्रधान संपादक

आपके पत्र

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा गृह-पत्रिका “वीरांगना” के सयुक्तांक (72वां एवं 73वां) की ई-प्रति हमारे कार्यालय को प्राप्त हुई। एतदर्थ धन्यवाद!

पत्रिका के आवरण-पृष्ठ पर छायांकित छायाचित्र एवं अन्य विभिन्न कार्यालयीन गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र काफी अच्छे लगे। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक एवं संग्रहणीय हैं। विशेषकर श्री देवेन्द्र कुमार मिश्रा की कहानी “अतीत” ने हृदय को छू लिया। सुश्री प्रीति सिंह की कहानी “एकल परिवार का दंश” द्वारा एकल परिवार में होने वाली दिक्कतों को दिखाया गया है। सुश्री पुष्पा साहू के लेख “कुछ बातें महिलाओं के मन की” में जीवन में नारी के योगदान और महत्व को दिखाया गया है। श्री सूर्यकांत भारद्वाज के लेख “जीवन में हॉबी का महत्व” में हॉबी से मिलने वाले लाभों को बखूबी व्यक्त किया गया है। श्री गौरव कुमार पांडेय की कविता “मैं भारत हूँ” में हमारे देश की विशेषताओं को सुंदर ढंग से दिखाया गया है। श्रीमती रंजना ठाकुर की कविता “बेटियाँ” ने मन को द्रवित कर दिया। श्री भूपेन्द्र ‘भोजराज’ भार्गव की कविता “रोटी” ने जीवन में रोटी के महत्व को दर्शाया है। इसके अलावा श्रीमती पुष्पा कौशल का लेख “स्त्री शक्ति”, श्री हरिवंश सिंह कुशवाह का लेख “पत्रकारिता प्रभाव एवं प्रसार”, श्री हरिओम कुमार की कविता “किस बात पर हँसना है, किस बात पर रोना है”, श्रीमती रंजना ठाकुर की कविता “छोटा सा ख्वाब” आदि रचनाएँ अत्यंत ही सराहनीय हैं। साथ ही विविध कार्यालयीन गतिविधियों से संबंधित चित्र सुंदर लगे।

पत्रिका के सफल संपादन एवं संकलन हेतु संपादन मंडल की सभी सदस्यों को साधुवाद तथा पत्रिका की निरंतर प्रगति हेतु हमारी हार्दिक शुभकामनाएँ।

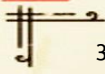
- चंदन कुमार बड़ई, हिंदी अधिकारी/प्रशा. हिंदी सेल, प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक.), पश्चिम बंगाल



आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका “वीरांगना” का 72वां एवं 73वां अंक इस कार्यालय में मेल के माध्यम से प्राप्त हुआ। धन्यवाद। पत्रिका की संरचना आकर्षक एवं सटीक है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ पठनीय, प्रेरक, ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। सभी रचनाएँ एक से बढ़कर एक हैं विशेषतः सुश्री प्रीति सिंह कृत “एकल परिवार का दंश”, सुश्री पुष्पा साहू कृत “कुछ बातें महिलाओं के मन की” एवं श्री गौरव कुमार पांडेय कृत “मैं भारत हूँ” अत्यंत प्रशंसनीय एवं सराहनीय हैं।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए सभी रचनाकार एवं संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं।

- हिंदी अधिकारी, प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चेन्नै का कार्यालय



आपके कार्यालय पत्र दिनांक 16.05.2023 के द्वारा हिंदी गृह-पत्रिका ‘वीरांगना’ के 72-73वें सयुक्तांक के प्रेषण की प्राप्ति सधन्यवाद हुई है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उच्चस्तरीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में समाविष्ट सुश्री प्रीति सिंह का लेख ‘एकल परिवार का दंश’, श्री गिरधारीलाल गोयल का लेख ‘दहेज प्रथा भारतीय समाज का अभिशाप’, श्री सूर्यकांत भारद्वाज का लेख ‘जीवन में हॉबी का महत्व’ तथा श्री हरिवंश सिंह कुशवाहा का लेख ‘पत्रकारिता प्रभाव एवं प्रसार’ ज्ञानवर्धक हैं। इसके अतिरिक्त श्री गौरव कुमार पांडेय की कविता ‘मैं भारत हूँ’, सुश्री ब्यूटी अंकिता की कविता ‘सफर’, श्री भूपेन्द्र ‘भोजराज’ भार्गव की कविता ‘रोटी’ श्रीमती रंजना ठाकुर की कविता ‘आपदा’ तथा श्री मदन गोपाल शर्मा की कविता ‘मर्यादा की खूँटी’ पठनीय हैं।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक-मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

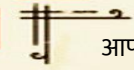
- पूजा सिंह, (हिंदी अधिकारी), प्रधान महालेखाकार (ले. व हक.) हरियाणा, चंडीगढ़



उपरोक्त विषय पर आपके द्वारा प्रेषित कार्यालय की राजभाषा पत्रिका 'वीरांगना' के एवं 73वें संयुक्तांक की ई-प्रति प्राप्त हुई है जिसमें प्रकाशित सभी रचनाएँ उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। हिंदी भाषा की सृजनशीलता के उत्थान हेतु आपका यह प्रयास सराहनीय है जिसके लिए आपका राजभाषा परिवार बधाई का पात्र है।

आशा है पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साग-साथ कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ

- वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिंदी कक्ष), कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) हिमाचल प्रदेश, शिमला



आपके द्वारा प्रेषित हिंदी गृह पत्रिका "वीरांगना" का 72वाँ एवं 73वाँ अंक प्राप्त हुआ, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का कलेवर व रूपरेखा अत्यधिक आकर्षक है। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और रोचक हैं, विशेषकर निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएँ अत्यधिक प्रशंसनीय हैं:-

- | | | |
|--------------------------------|---|---------------------|
| 1. सुश्री प्रीति सिंह | - | एकल परिवार का दंश |
| 2. श्री देवेन्द्र कुमार मिश्रा | - | अतीत |
| 3. श्रीमती पुष्पा कौशल | - | स्त्री शक्ति |
| 4. श्री रूपेंद्र कुमार कौशल | - | इंसान कितना भोला है |
| 5. श्री भूपेंद्र भोजराज भार्गव | - | रोटी |

इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटि बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

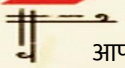
- कीर्ति श्री, हिंदी अधिकारी, महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय, भुवनेश्वर, ओडिशा



आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित हिंदी ई-पत्रिका 'वीरांगना' के 72वें एवं 73वें संयुक्तांक की एक ई-प्रति प्राप्त हुई। रचनात्मकता से परिपूर्ण पत्रिका का मुखपृष्ठ अत्यंत ही मनोरम व मनमोहक है। श्रीमती पुष्पा का लेख 'स्त्री शक्ति', सुश्री प्रीति सिंह का लेख 'एकल परिवार का दंश', श्रीमती रंजना ठाकुर की कविता 'बेटियाँ', श्री भूपेंद्र भोजराज भार्गव की कविता 'रोटी' आदि रचनाएँ रुचिकर एवं सराहनीय हैं। अन्य सभी रचनाएँ भी पठनीय एवं विचारणीय हैं।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगा।

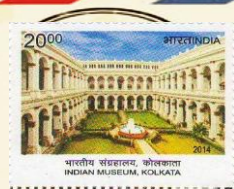
- वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशा.), कार्यालय निदेशक, वित्त एवं संचार लेखापरीक्षा, बेंगलूरु



आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका "वीरांगना" के 72वें एवं 73वें संयुक्तांक की ई-प्रति प्राप्त हुई। सर्वप्रथम इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है तथा मुद्रण एवं प्रकाशन उत्तम है। संकलित समस्त लेख एवं रचनाएँ सरस एवं पठनीय हैं। विशेषकर श्री देवेन्द्र कुमार मिश्र का आलेख 'अतीत', सुश्री प्रीति सिंह का आलेख 'एकल परिवार का दंश', श्री गिरधारी लाल गोयल का आलेख 'दहेज प्रथा-भारतीय समाज का अभिशाप', श्री हरिवंश सिंह कुशवाहा की कविता 'मानव और गुलाब', श्री गौरव कुमार पांडेय की कविता 'मैं भारत हूँ' और श्री विवेक सिंघल की कविता 'नारी की व्यथा' अत्यन्त ही उत्कृष्ट एवं सराहनीय है।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल के सभी सदस्य बधाई के पात्र हैं। आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "वीरांगना" इसी तरह निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, यह हमारी शुभकामना है।

- वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा), कार्यालय महानिदेशक, लेखापरीक्षा, पर्यावरण एवं वैज्ञानिक विभाग, कोलकाता शाखा

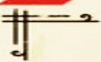




आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका “वीरांगना” के 72वें-73वें संयुक्तांक की प्राप्ति हुई, पत्रिका की साज-सज्जा एवं विषयवस्तु का सुन्दर प्रस्तुतिकरण अत्यन्त प्रशंसनीय है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनायें उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और संग्रहणीय हैं। पत्रिका में मौलिक सोच और सृजनात्मक अभिव्यक्ति की गहनता समाहित है। पत्रिका में समाहित चित्रकारी एवं रचनाएं बहुत ही मनमोहक और शिक्षाप्रद है।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं। कृपया अपना यही सार्थक प्रयास निरंतर रखें।

- **वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी**, राजभाषा अनुभाग, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) राजस्थान, जयपुर



पत्र क्र.प्रशासन/हिंदी/वीरांगना-72वां एवं 73वां (संयु.) /फा.सं.-45/डी-57 दिनांक 09.05.2023 के द्वारा आपके कार्यालय की राजभाषा हिंदी पत्रिका 'वीरांगना' के 72-73वें संयुक्तांक की ई-प्रति प्राप्त हुई है। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्च कोटि की हैं। रचनाओं के मध्य छायाचित्र अत्यंत ही आकर्षक हैं। 'अधिक मान बढ़ाई-श्रेष्ठ मानवता के लिए हानिकारक', 'दहेज प्रथा भारतीय समाज का अभिशाप', 'कुछ बातें महिलाओं के मन की', 'स्त्री शक्ति', 'मैं भारत हूँ' एवं 'नारी की व्यथा' आदि रचनाएं विशेष रूप से पठनीय एवं रुचिकर हैं। उत्तम संयोजन एवं संपादन के लिए संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

- **हिंदी अधिकारी** (हिंदी कक्ष), कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) हरियाणा, चंडीगढ़



पत्र सं. प्रशासन/हिंदी/वीरांगना-72वां एवं 73वां (संयु.) /फा.सं.-45/D-57 दिनांक 09.05.2023 के माध्यम से आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका “वीरांगना” के 72वें एवं 73वें संयुक्तांक की सॉफ्ट प्रति प्राप्त हुई। धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं आंतरिक साज-सज्जा सुंदर एवं आकर्षक है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं विशेष रूप से सुश्री प्रीति सिंह की रचना ‘एकल परिवार का दंश’, श्री गिरधारीलाल गोयल की रचना ‘दहेज प्रथा भारतीय समाज का अभिशाप’, श्री हरिवंश सिंह कुशवाह की रचना ‘पत्रकारिता प्रभाव एवं प्रसार’, श्री गौरव कुमार पांडेय की कविता ‘मैं भारत हूँ’, श्री रूपेंद्र कुमार कौशल की कविता ‘इंसान कितना भोला है’ आदि काफी रोचक, सुंदर और ज्ञानवर्धक है। आशा है कि यह पत्रिका हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति की हार्दिक शुभकामनाएं।

- **वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी** (हिंदी), कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I), पश्चिम बंगाल, कोलकाता



आपके कार्यालय की पत्रिका “वीरांगना” का 72-73 वां संयुक्तांक प्राप्त हुआ। इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। ये अंक अपने कलेवर, साज-सज्जा, मुद्रण स्पष्टता के कारण बहुत ही आकर्षक और मनोहारी बन पड़ा है। पत्रिका में सम्मिलित सामग्री उच्च स्तर की है। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ उच्च कोटि की अत्यंत रोचक, ज्ञानवर्धक, मनोरंजक, पठनीय एवं सराहनीय है। इस अंक में प्रकाशित श्री देवेंद्र कुमार मिश्रा द्वारा लिखित “अतीत”, सुश्री प्रीति सिंह द्वारा लिखित “एकल परिवार का दंश”, श्रीमती पुष्पा कौशल द्वारा लिखित “स्त्री शक्ति”, श्रीमती रंजना ठाकुर द्वारा लिखित “बेटियाँ” और श्री विवेक सिंघल द्वारा लिखित “नारी की व्यथा” विशेष रूप से उल्लेखनीय है। राजभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार में विभागीय रचनाकारों को उत्कृष्ट सृजनात्मक मंच प्रदान करने में आपकी इस पत्रिका की भूमिका महत्वपूर्ण बन रही है। यह बहुत ही सकारात्मक प्रक्रम है। पत्रिका भविष्य में और बेहतर करे यही कामना है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।



- **सुभाष चंद यादव**, हिंदी अधिकारी, कार्यालय महालेखाकार (ले एवं हक), तमिलनाडू, चेन्नई



मुख पृष्ठ परिचय

सुश्री प्रीति सिंह, संपादक

इस पत्रिका का मुख पृष्ठ इतिहास की धरोहरों को अपने में समेटे, 'ग्वालियर' को समर्पित है। यह शहर गुर्जर-प्रतिहार राजवंश, तोमर तथा कछवाहों की राजधानी रहा है। केवल ऐतिहासिक ही नहीं, हिंदी में अपभ्रंश शब्दों के चलन की जो महत्ता है, वह इस शहर में साकार रूप में दिखाई देती है। उदाहरण के तौर पर यहां स्थित प्रसिद्ध "सहस्रबाहु" मंदिर का नाम अपभ्रंशता के चलते "सास-बहू" मंदिर के नाम से जाना जाता है। अंग्रेजों के शासनकाल के दौरान ग्वालियर में उनकी एक "बटालियन थर्ड फॉर" जगह का नाम वर्तमान में "थाटीपुर" है। सन् 1803 में अंग्रेजों की एक टुकड़ी के कमान अधिकारी "अलैक्जेंडर" की सेना का कैंप के स्थान को "सिकंदर कैंप" कहा जाता है। ग्वालियर में दर्शनीय स्थलों की भरमार है हालांकि, इस लेख में मुखपृष्ठ पर दर्शाए गए स्मारकों का ही वर्णन किया जा रहा है।

तेली का मंदिर

दक्षिण की द्रविड़ शैली और उत्तर भारत की नागर शैली के अनूठे मेल से बना तेली का मंदिर अपनी शानदार वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है। ग्वालियर दुर्ग परिसर में स्थापित यह मंदिर प्रतिहार कालीन विष्णु मंदिर है, जिसकी ऊँचाई लगभग 30 मीटर है। इस मंदिर का निर्माण नौवीं शताब्दी में प्रतिहार शासक मिहिर भोज के शासन काल में, तेल के व्यापारियों द्वारा दिए गए धन से हुआ था, इसलिए इस मंदिर को तेली का मंदिर कहते हैं।



सास-बहू का मंदिर

यह दो मंदिरों का समूह है, जिसका शाब्दिक अर्थ सास-बहू के मंदिर के रूप में बड़ा और छोटा मंदिर माना जाता है। वास्तव में ये मंदिर विष्णुजी को समर्पित थे, इसका वास्तविक नाम सहस्रबाहु मंदिर था। समय के साथ कालांतर में 'सहस्रबाहु' नाम का अपभ्रंश

होकर 'सास-बहू का मंदिर' कहा जाने लगा। इन मंदिरों का निर्माण कछवाहा राजवंश के राजा महिपाल ने 11वीं शताब्दी के दौरान करवाया था। नागर शैली में निर्मित इन मंदिरों में त्रिदेव ब्रह्मा, विष्णु और महेश की मूर्तियाँ हैं। पूर्ण रूप में विकसित मंदिर का निर्माण पंक्तिबद्ध रूप से उत्तर-दक्षिण दिशा में हुआ है जिसमें गर्भगृह, अंतराल, महामंडप तथा अर्धमण्डप दक्षिण से उत्तर की ओर हैं।



मध्य में गोलाकार जगती पर मुख्य मंदिर स्थित है, जिसके गर्भगृह में दो शिवलिंग स्थापित हैं। इस मंदिर का निर्माण गुर्जर प्रतिहार राजा देवपाल ने 14वीं ईस्वी में कराया था। माना जाता है यह मंदिर सूर्य गोचर के आधार पर ज्योतिष और गणित विद्या के अध्ययन का प्रमुख केंद्र था। यह मंदिर भारतीय संसद भवन जैसा दिखता है। ऐसी धारणा है कि संसद भवन की रूपरेखा या डिजाइन इसी मंदिर से प्रेरित है, हालांकि इसका कोई अभिलेख कहीं प्राप्त नहीं है।

मितावली/इकोत्तरसो महादेव मंदिर

ग्वालियर से लगभग 40 किमी दूर मितावली ग्राम की पहाड़ी पर निर्मित है चौंसठ योगिनी मंदिर, जिसे स्थानीय लोग इकोत्तरसो महादेव मंदिर कहते हैं। इस मंदिर की विशेषता यह है कि मुख्य मंदिर के चारों ओर वृत्ताकार में छोटे-छोटे 64 प्रकोष्ठ बने हुए हैं। प्रत्येक प्रकोष्ठ में शिवलिंग स्थापित है। इन प्रकोष्ठों के



सूर्य मंदिर

लाल बलुआ पत्थर और मोती सफेद संगमरमर से निर्मित सूर्य मंदिर आधुनिक युगीन वास्तुशिल्प का प्रतीक है। इस मंदिर का निर्माण श्री जी.डी. बिड़ला द्वारा सन् 1988 में करवाया था। इसलिए इस मंदिर को बिड़ला सूर्य मंदिर भी कहा जाता है। यह मंदिर ओडिशा के कोर्णाक में स्थित सूर्य मंदिर की अनुकृति है। मंदिर के मुख्य द्वार पर सात घोड़ों की आकृति बनी हुई है जो सूर्य के रथ को

खींचते हुए प्रतीत होते हैं। यद्यपि इस मंदिर का इतिहास अधिक पुराना नहीं है फिर भी यह ग्वालियर के ऐतिहासिक महत्व की संरचनाओं में शुमार है एवं पर्यटकों के लिए प्रमुख दर्शनीय स्थल है।



हिंदी के प्रचार - प्रतिष्ठा में अहिंदी भाषियों की भूमिका

सुश्री प्रीति सिंह, वरिष्ठ अनुवादक

‘भारत में विभिन्न भाषाएँ बोली जाती हैं। नवीनतम आँकड़ों के अनुसार भारत में मातृभाषा के रूप में लगभग 9500 भाषाएँ बोली जाती हैं, जबकि भारत के संविधान द्वारा मात्र 22 भाषाओं को आधिकारिक भाषा माना गया है। इनमें से जनसंख्या और क्षेत्र के विस्तार की दृष्टि से हिंदी सर्वाधिक बोली जाती है।

2011 की जनगणना के अनुसार भारत में 43.63% लोगों की मातृभाषा हिंदी है।

यह उत्तर प्रदेश, बिहार,

झारखंड, राजस्थान,

मध्य प्रदेश,

छत्तीसगढ़,

हिमाचल प्रदेश,

हरियाणा,

दिल्ली तथा केंद्र

शासित प्रदेश अंडमान

निकोबार में बोली जाती है।

इन हिंदी भाषी प्रांतों के साथ

हिंदी को दूसरी भाषा के रूप में

प्रयोग करने वाले भारतीयों को

मिला लिया जाए तो देश में लगभग

75 प्रतिशत लोग हिंदी बोल सकते हैं।

भारत के इन 75 प्रतिशत हिंदी भाषियों सहित पूरे

विश्व में तकरीबन 80 करोड़ लोग हिंदी बोल और

समझ लेते हैं। भारत के बाहर नेपाल, मॉरीशस,

त्रिनिदाद और टॉबैगो, कनाडा, युगांडा, फिजी,

घाना, सूरीनाम, दक्षिण अफ्रीका, मालदीव,

म्यांमार, इंडोनेशिया, जापान, सिंगापुर, थाईलैंड, चीन, ब्रिटेन, जर्मनी, भूटान, बांग्लादेश, श्रीलंका, पाकिस्तान एवं अमेरिका में इसे बोलने और समझने वालों की संख्या अच्छी खासी है।

हमारे देश में हिंदी युगों-युगों से विचार विनिमय का माध्यम रही है। यह केवल उत्तर भारत की ही भाषा नहीं, अपितु दक्षिण भारत के प्राचीन आचार्यों जैसे बल्लभाचार्य, विट्ठल, रामानुज, रामानंद के सिद्धांतों एवं विचारों की भी भाषा रही

है। सूरदास,

कबीर,

तुलसीदास,

मीराबाई

इत्यादि हिंदी

भाषी संत कवियों

के साथ असम के शंकरदेव,

महाराष्ट्र के नामदेव और ज्ञानेश्वर,

गुजरात के नरसी मेहता, बंगाल के

चैतन्य प्रभु आदि संत कवियों ने भी अपने

धार्मिक उपदेशों और साहित्य का माध्यम हिंदी को

ही बनाया।

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन से पहले ही

हिंदी अखिल भारतीय स्वरूप में विकसित हो चुकी

थी। भारतीय चिंतकों, मनीषियों, धर्मगुरुओं,

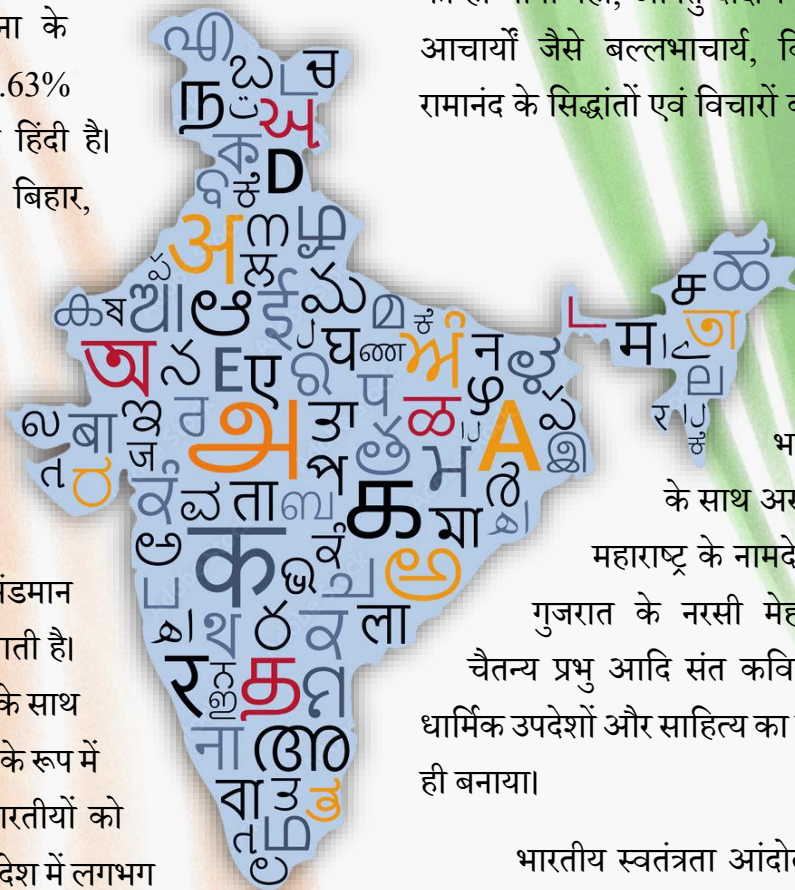
विद्वानों, गुरुओं एवं राजनेताओं ने देश को एक

धागे में पिरोने के लिए एवं जन संपर्क से संवाद के

लिए हिंदी का ही चयन किया। स्वामी दयानंद

सरस्वती ने आजादी का अलख जगाते हुए सन्

1876 में ‘स्वराज्य’ का नारा दिया। उन्होंने



स्वराज्य और स्वभाषा के घनिष्ठ संबंध को समाझते हुए देश को एक सूत्र में बांधने के लिए तथा अपने विचार जन-जन तक पहुंचाने के लिए हिंदी को माध्यम चुना। वे स्वयं गुजराती भाषी थे और संस्कृत के विद्वान भी, फिर भी, अपने सबसे प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना उन्होंने हिंदी में की। उन्होंने अपने आध्यात्मिक विचार और मत हिंदी में ही दिए।

विलक्षण व्यक्तित्व के धनी महात्मा गांधी जी ने दक्षिण अफ्रीका में प्रवास के दौरान रंगभेद और नस्लभेद के विरुद्ध सत्याग्रह, अहिंसा, सविनय आंदोलन चलाया और उनकी जीत हुई। जब भारत में उनका पदार्पण हुआ तब स्वतंत्रता आंदोलन अपने चरमोत्कर्ष पर था। अपने राजनीतिक गुरु गोपाल कृष्ण गोखले के परामर्श पर भारत की सक्रिय राजनीति में जुड़ने से पहले पूरे देश का भ्रमण किया तथा हिंदी की व्यापक और व्यावहारिक शक्ति की क्षमता का गहराई से अनुशीलन किया। राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान जन सामान्य से संवाद के लिए हिंदी को अपनाया। उन्होंने राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी को अपनाने पर जोर दिया। उनका मानना था कि हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जो देश के विशाल जनसमूह की सभ्यता और संस्कृति की न केवल संवाहक है अपितु उसमें भारत को एक सशक्त राष्ट्र बनाने की क्षमता और सामर्थ्य भी है। उन्होंने 'हरिजन' नामक हिंदी पत्रिका का प्रकाशन भी किया। गांधी जी गुजराती थे। वे अंग्रेजी के अच्छे जानकार थे किंतु हिंदी भाषा उनके हृदय में इस तरह छाई थी कि वे राष्ट्रीय आंदोलन के नेताओं को भाषण एवं व्याख्यान हिंदी में देने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित करते थे। उनकी अनुप्रेरणा से महाकवि रवींद्रनाथ टैगोर ने सन् 1925 के कांग्रेस अधिवेशन

में अपना भाषण हिंदी में पढ़ा और उनके उस भाषण की बहुत सराहना भी हुई।

हिंदी को देश की भाषा मानने वालों में श्री माधव सदाशिव गोलवलकर का नाम भी अग्रगण्य है। वे मराठी भाषी थे। विज्ञान का विद्यार्थी होने के कारण उन्होंने उच्च शिक्षा अंग्रेजी में प्राप्त की थी। वे विधि और अध्यात्म के भी अच्छे ज्ञाता थे। किंतु राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसंघचालक के रूप में उन्होंने अपने अभिव्यक्ति का माध्यम हिंदी को बनाया। उनके मतानुसार गैर हिंदी भाषी भारतीयों को अंग्रेजी की अपेक्षा हिंदी अधिक समझ में आती है। गैर-हिंदी भाषी क्षेत्रों में हिंदी के शिक्षण के प्रसार में उनका सदा समर्थन रहा। उन्होंने हिंदी को विश्वभाषा बनाने का आह्वान किया।

ब्रह्म समाज के संस्थापक राजा राममोहन राय भी हिंदी भाषा के पैरोकार थे। उनके अनुसार भारत एक राष्ट्र है तथा उसकी अपनी एक राष्ट्रभाषा होनी चाहिए। हिंदी की गौरव-गरिमा को पहचानते हुए बाबू केशवचंद्र सेन ने लिखा "हिंदी भाषा प्रायः सर्वत्र ई प्रचलित" राजा राममोहन राय, केशवचंद्र सेन एवं भूदेव मुखर्जी के प्रयास से ब्रह्म समाज के विचारों की अधिकांश पुस्तकें हिंदी में प्रकाशित हुईं। प्रार्थना समाज के सहसंस्थापक श्री गोविंद रानाडे भी राष्ट्रीय चेतना लाने के लिए हिंदी में ही साप्ताहिक प्रवचन दिया करते थे। हिंदी के बढ़ते कदम और उसकी लोकप्रियता को देखते हुए लाला लाजपत राय ने 1875 में हिंदी को 'आर्यभाषा' की संज्ञा दी और आर्य समाजी सदस्यों के लिए हिंदी पढ़ना अनिवार्य कर दिया। बंगाल के महान विचारक व विद्वान ईश्वरचंद्र विद्यासागर का मानना था कि हिंदी से ही समग्र भारत को एक सूत्र में बांधा जा सकता है। वे हिंदी की महत्ता को समझते थे और इसीलिए हिंदी

साहित्य के अमूल्य रत्न भारतेन्दु हरिश्चंद्र के साथ हिंदी में पत्राचार करते थे। बंकिमचंद्र चटर्जी ने भारत में हिंदी की अनिवार्यता को भांपते हुए कहा कि “हिंदी एक दिन भारत की राष्ट्रभाषा होकर रहेगी क्योंकि हिंदी भाषा की सहायता से भारत के विभिन्न प्रदेशों में ऐक्य-बंधन स्थापित कर सकेंगे, वे ही सच्चे भारत बंधु की संज्ञा पाने योग्य होंगे।”

किसी भी भाषा के उत्थान एवं विकास में उस भाषा में प्रकाशित पत्र-पत्रिकाओं की अहम भूमिका रहती है। पत्र-पत्रिकाएं समसामायिक घटनाएं, राजनीति, खेल-कूद, व्यक्तित्व, विज्ञापन इत्यादि जानकारीयाँ सहज और सुबोध भाषा में जनसामान्य तक संचारित करने का उत्तम साधन हैं। इनके माध्यम से ही स्वतंत्रता आंदोलन को मुखर रूप दिया जा सका था। हिंदी का पहला समाचार पत्र “उदंत मार्तण्ड” था जो पंडित जुगल किशोर शुक्ल के संपादन में पहली बार 30 मई 1826 को कोलकाता से प्रकाशित किया गया था। हिंदी पत्रकारिता में गैर-हिंदी भाषी पत्रकारों के अमूल्य योगदान को भुलाया नहीं जा सकता है। इनमें सबसे अग्रणी नाम पंडित बाबूराव विष्णु पराडकर का है। पराडकर जी को हिंदी पत्रकारिता का भीष्म पितामह कहा जाता है। उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन के समय हिंदी पत्रकारिता को जनजागरण का जरिया बनाया। सहज और सरल भाषा में गंभीर विषयों को जनता तक पहुंचाने में उनका कोई सानी नहीं था। उन्होंने हिंदी पत्रकारिता की भाषा का गठन किया। हिंदी के अनेक शब्द उन्होंने स्वयं गढ़े। उन्होंने ‘भारत मित्र’, ‘आज’ और ‘संसार’ नामक हिंदी पत्रों का संपादन किया। वे भगवद् गीता की हिंदी टीका और बांग्ला पुस्तक ‘देशेर कथा’ के हिंदी अनुवाद के लिए भी जाने जाते हैं। हिंदी प्रेमी पत्रकार श्री लक्ष्मण नारायण गर्दे ने हिंदी में ‘भारत मित्र’ समाचार-पत्र के प्रकाशन में योगदान दिया।

उन्होंने ‘महाराष्ट्र रहस्य’ नाम से हिंदी में लेख-माला लिखी। लखनऊ में जब ‘नवजीवन’ का प्रकाशन शुरू किया गया तो श्री गर्दे को उसका प्रथम संपादक बनाया गया। स्वराज के लिए स्वभाषा की अनिवार्यता को स्वीकार करते हुए लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने सन् 1903 में मराठी के साथ-साथ हिंदी में भी ‘केसरी’ पत्र का प्रकाशन आरंभ किया।

मुंबई में भारतीय विद्या भवन के संस्थापक कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी का नाम भी हिंदी प्रेमियों में बहुत श्रद्धा के साथ लिया जाता है। वे स्वतंत्रता सेनानी, राजनेता, कानून विशेषज्ञ तथा गुजराती और हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकार थे। हिंदी तथा देवनागरी लिपि को भारतीय संघ की राजभाषा का स्थान दिलाने में मुंशी जी ने प्रमुख भूमिका निभाई थी। उन्होंने मुंशी प्रेमचंद के साथ मिलकर ‘हंस’ पत्रिका का संपादन किया। उनके मार्गदर्शन में मुंबई से ‘नवनीत’ का प्रकाशन किया गया। साहित्य और संस्कृति के प्रचार-प्रसार में इस पत्रिका का उल्लेखनीय योगदान रहा है। गुजराती भाषी मुंशी जी एक राजनेता और महामहिम राज्यपाल रहते हुए वे अधिकांश कार्य हिंदी भाषा में ही किया करते थे।

हिंदी को राजभाषा घोषित कराने तथा दक्षिण भारत में हिंदी का प्रचार करने में तेलुगु भाषी श्री मोटूरि सत्यनारायण का अविस्मरणीय योगदान रहा है। वे अपनी मातृभाषा के साथ तमिल, अंग्रेजी, उर्दू, हिंदी तथा मराठी में अभिव्यक्ति की क्षमता रखते थे। उन्होंने दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा को अपनी सेवाएं दीं। उनके अनुसार “हिंदी आंदोलन हिंदी भाषा का आंदोलन नहीं, बल्कि यह हिंदुस्तान के सांस्कृतिक पुनरुत्थान का आंदोलन, हिंदुस्तान की सभ्यता और संस्कृति को ठीक-ठाक

दिग्दर्शन कराने की प्रवृत्तियों को फिर से पुनर्जीवित कराने का आंदोलन है।” उन्होंने मद्रास में हिंदी विकास समिति की स्थापना की, जहाँ से उनके संपादन में हिंदी में सामाजिक विज्ञान विश्व कोश प्रकाशित किया गया। उन्होंने ही “प्रयोजन मूलक हिंदी” की संकल्पना दी। उन्होंने आगरा में ‘अखिल भारतीय हिंदी परिषद’ की स्थापना के साथ-साथ केंद्रीय हिंदी संस्थान का भी निर्माण किया। वे समस्त भारतीय भाषाओं के विकास के पक्षधर थे।

तमिल भाषी चक्रवर्ती राजगोपालाचारी हिंदी को प्रतिष्ठा दिलाने के लिए आजीवन संघर्षरत रहे। गैर-हिंदी भाषी राज्यों में से एक तत्कालीन मद्रास प्रांत में हिंदी की शिक्षा अनिवार्य करने का श्रेय उन्हें ही जाता है। हिंदी के प्रति अपने विचारों को उन्होंने कुछ इस प्रकार व्यक्त किया “हिंदी ही एकमात्र भाषा है जो देश को एक सूत्र में बांधे रख सकती है।” राजाजी के नाम से प्रसिद्ध रहे राजगोपालाचारी जी दक्षिण भारत में हिंदी के प्रचार-प्रसार में लगे रहे और मद्रास में हिंदी को माध्यमिक स्तर की शिक्षा में अनिवार्य कराया।

मलयालम के प्रसिद्ध हिंदी साहित्यकार डॉ. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर का हिंदी के प्रचार-प्रतिष्ठा में अक्षुण्ण योगदान रहा है। उनके द्वारा रचित ‘केरल में हिंदी भाषा और साहित्य का विकास’ प्रथम ग्रंथ है जो केरल राज्य में हिंदी भाषा और साहित्य के समग्र विकास का चित्र हमारे समक्ष प्रस्तुत करता है। प्रसिद्ध ओड़िया कवि, लेखक, पत्रकार सामाजिक कार्यकर्ता, सुधारक, इतिहासकार एवं राजनीतिज्ञ डॉ. लक्ष्मी नारायण साहू ने ओड़िया के अलावा हिंदी में भी लेखन कर हिंदी को संवर्धित करने का प्रशंसनीय कार्य किया है।

दक्षिण भारत के अनेक साहित्यकारों ने मातृभाषा के साथ ही हिंदी भाषा में साहित्य सृजन एवं अनुवाद कर हिंदी की सेवा पूरी निष्ठा और आत्मीयता से की है। श्री कामाक्षीराव ने डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी के प्रसिद्ध ऐतिहासिक उपन्यास “बाणभट्ट की आत्मकथा” का तेलुगु में अनुवाद कर हिंदी साहित्य का क्षेत्र विस्तृत करने में अप्रतिम योगदान दिया है। डॉ. पांडुरंग राव जी ने हिंदी के छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद के ‘आंसू’ का पद्यानुवाद तेलुगु में ‘कन्निरू’ शीर्षक से किया। उन्होंने प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानंदन पंत की प्रसिद्ध कृति ‘चिदंबरा’ तथा जयशंकर प्रसाद का महाकाव्य ‘कामायनी’ का तेलुगु में सफल अनुवाद किया। इसके साथ ही भगवतीचरण वर्मा के ‘भूले बिसरे चित्र’ उपन्यास का तेलुगु में अनुवाद ‘स्मृति रेखलु’ नाम से किया। श्री आरिगपुडी रमेश चौधरी ने हिंदी में उपन्यास, कहानी, नाटक कविता आदि लिखकर दक्षिण की हिंदी परंपरा को समृद्ध किया। वे दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा से प्रकाशित होने वाली मासिक पत्रिका “दक्षिण भारत” के संपादक भी रहे। “चंदामामा” बाल पत्रिका की प्रगति में उनका सराहनीय योगदान रहा। आंध्र विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर जी. शंकर रेड्डी हिंदी के सफल निबंधकार, आलोचक एवं चिंतक थे। उन्होंने “हिंदी और तेलुगु : एक तुलनात्मक अध्ययन” ग्रंथ की रचना की जो पूरे दक्षिण भारत में तुलनात्मक स्तर में पहला ग्रंथ माना गया है।

प्रसिद्ध मराठी साहित्यकार डॉ. अनंत सदाशिव उल्तेकर, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में भारतीय संस्कृति विभाग के अध्यक्ष थे। वे सदैव अपना शोधपत्र हिंदी में प्रस्तुत करते थे। श्री कृष्ण जी हरिपंत देशपांडे महाराष्ट्र तक हिंदी का प्रचार-प्रसार करते रहे। मराठी भाषी पत्रकार अनंत गोपाल

शेवडे के प्रयास से 10 जनवरी 1975 को नागपुर में पहला विश्व हिंदी सम्मेलन आयोजित किया गया। 12वाँ विश्व हिंदी सम्मेलन फरवरी 2023 में फिजी में आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में जहाँ एक ओर हिंदी की वैश्विक पहुंच हुई वहीं दूसरी ओर विश्व भर के हिंदी विद्वानों, साहित्यकारों और राजभाषा अधिकारियों के लिए सम्मेलन गहन चिंतन-मनन और विचार-मंथन का सशक्त मंच साबित हुआ।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि हिंदी का स्वरूप चाहे साहित्यिक हो अथवा प्रयोजन मूलक, उसके उत्थान, विकास और संवर्धन में हिंदी भाषियों के साथ ही अहिंदी भाषी साहित्यकारों, मनीषियों, विचारकों की भी प्रशंसनीय और अविस्मरणीय भूमिका रही है। हिंदी जनभाषा से क्रमिक विकास करती हुई विश्व पटल पर अपनी पहचान बना रही है। हिंदी के वैश्विक स्वरूप को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार निरंतर प्रयासरत है। हमारे देश के माननीय प्रधानमंत्री जी एवं माननीय गृहमंत्री जी, दोनों ही गुजराती भाषी हैं, पर दोनों का हिंदी के प्रति प्रेम और लगन सर्वविदित

है। हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा बनाए जाने के लिए माननीय प्रधानमंत्री की अनुप्रेरणा एवं प्रोत्साहन से विदेश मंत्रालय द्वारा अविरत प्रयास किए जा रहे हैं। हिंदी अभी हमारे देश की अघोषित राष्ट्र भाषा है, यदि हिंदी संयुक्त राष्ट्र की भाषा बन जाती है तो उसे देश की राष्ट्रभाषा के पद पर आसीन होने में अधिक समय नहीं लगेगा।

संदर्भ:-

01. हिंदी भाषा – डॉ. हरदेव बाहरी
02. राजभाषा भारती पत्रिका – अंक 45
अप्रैल-जून 1989
03. राजभाषा भारती पत्रिका – अंक 21-22,
अप्रैल-सितंबर 1983
04. <https://hindi.webduniya.com>
05. <https://hindivivek.org>
06. <https://infoshindi.com>
07. <https://abhivyakti.life>
08. <https://www.makehindi.com>

संस्कृत भाषा, चाहे यह कितनी भी प्राचीन हो, लेकिन यह अद्भुत संरचना वाली, ग्रीक से अधिक परिपूर्ण, लैटिन से अधिक प्रचुर और दोनों की तुलना में अधिक उत्कृष्ट रूप से परिष्कृत है।

– सर विलियम जोन्स (अंग्रेजी विद्वान)



अनोखा इंटरव्यू

श्री जे.जे. श्रीवास्तव, सेवानिवृत्त पर्यवेक्षक

दुनिया में काम की कोई कमी नहीं है। कमी है तो बस यह सोचने की, कि कुछ न कुछ काम किया जाए। कुछ लोगों का काम बस यही सोचने का होता है कि काम आखिर किया कौन सा जाए। वह काम के बारे में दिन-भर सोचते रहते हैं और रात को उन्हें काम मिल ही जाता है, तारे गिनने का!! वह काम के बारे में सोचते-सोचते रात भर तारे गिनते रहते हैं और तब तक गिनते रहते हैं, जब तक सारे तारे अपने-अपने घरों को वापस नहीं चले जाते। सुबह आसमान में ज्योंही सूर्य

की किरण रूपी झाड़ू ने तारों का कूड़ा बटोरा, वह फिर तल्लीन हो जाते हैं, काम ढूँढने में। दूरदर्शन, रोजगार समाचार से लेकर, लोकल

समाचार-पत्र के रोजगार तक को चाय छानने की बारीक छलनी से छान मारते हैं, ये लोग। ऐसे लोगों को रोजगार फोबिया हो जाता है। किसी ने कह भर ही दिया कि भइया मैं जे.के. टायर कंपनी में लग गया हूँ। बस पहुंच गए उसके स्कूटर के टायर के पीछे-पीछे दौड़ते हुए उसके घर। दरवाजा खटखटाया और दरवाजा खुलते ही उसके हाथ की कोहनी के नीचे से निकलकर ड्राइंगरूम के कोने में पड़े सोफे के कुन्न में समाते हुए बोले – “गुरु अपना भी कुछ करो ना”

“क्या करूं। आखिर तुम्हारा करना क्या है” वह ऐसे पूछता है, जैसे पूछ रहा हो कि तेरा अचार

डालना है या मुरब्बा।

“मेरा मतलब, अपना भी कुछ जे.के. टायर कंपनी में जुगाड़ चला दो ना।”

“कैसा जुगाड़ चला दूँ?”

“जैसे जुगाड़ से सरकार चल रही है।”

“अरे भईये। सरकार चलाना बहुत सरल होता है इन प्राइवेट कंपनियों में काम करने की तुलना में। “जिन्न” को काम करने कराने के लिए आदेश देना पड़ता है, लेकिन वहां बिना आदेश मिले जिन्न

से भी ज्यादा काम करना पड़ता है और जरा सी लापरवाही, मतलब दूसरे दिन से बिना रुपए पैसे की पेंशन शुरू। कुछ प्राइवेट कंपनियों में तो कुछ लोग काम की

अधिकता के कारण घर ऐसे लौट जाते हैं, जैसे अपनी क्रिकेट टीम के कई खिलाड़ी पिच पर जाते समय बल्ला ऐसे घुमाते हुए जाते हैं, जैसे एक ही घंटे में डेढ़ दो हजार रन बना लेंगे, लेकिन डेढ़ दो बॉलों पर ही अपने तीनों विकेट और दोनों गिल्लियां को ऐसे देखते हैं, मानो दर्शकों से कह रहे हो कि वाकई मैं आज डेढ़-दो हजार रन बनाकर ही रहता, अगर यह विकेट्स यहां पर नहीं होते।

स्पष्ट लिख रहा हूँ, कि यह कहानी मेरी ही है। देश के करोड़ों बेरोजगारों की सूची में मेरा भी नाम



था। अतः मैं जानता हूँ कि दिल्ली की सरकारी बसों और मुंबई की लोकल ट्रेन के धक्कों से कहीं अधिक तकलीफ देते हैं “ये बेरोजगारी के धक्के।” ट्रेन और बसों के धक्कों से व्यक्ति को तकलीफ होती है, लेकिन बेरोजगारी के धक्कों से पूरे परिवार को तकलीफ होती है। इस दौर से प्रत्येक व्यक्ति को गुजरना ही पड़ता है।

जब हम भी बी.कॉम, द्वितीय वर्ष की खिड़की से बी.कॉम, फायनल के आंगन में झांकने का प्रयास कर रहे थे, तब हमारे एक असली दुश्मन जैसे, सगे रिश्तेदार ने हमें कमअक्ल का बंदा समझकर गंभीर मजाक कर दिया था कि ग्रेजुएट होते ही टी.सी.एस., विप्रो जैसी कई कंपनी के एम.डी. स्वयं हमारे घर आकर हमसे रिव्यू करेंगे कि हम उनकी कंपनी में नौकरी ज्वाइन कर लें। हमें इस मजाक का पता तब लगा जब ग्रेजुएट होने के बाद कई सावन, कई पतझड़ और कई बसंत हमें टाटा करके आगे बढ़ गए, किंतु विप्रो कम्प्यूटर क्या विप्रो गोली बिस्कुट की लोकल कंपनी का कोई चपरासी तक हमारे घर के सामने से गुजरा तक नहीं।

एक दिन वही दुश्मन रिश्तेदार ने तेजी से स्कूटर पर जाते-जाते पूछा – “क्यों, अभी तक कुछ काम मिला कि नहीं?”

हमें उसे देखकर बेहद गुस्सा आया। वो तो हम अपने पिताजी की पैंतीस वर्षीय पुरानी साइकिल पर सवार थे, अगर किसी ट्रक पर सवार होते तो भगवान कसम उस ट्रक से उसे ऐसा कुचलते कि नगर निगम वाले उसे कढ़ईया में जले दूध की तरह खुरच-खुरच कर निकालते और भैंसा गाड़ी में भरकर ले जाते। फिर भी हमने उसके पीछे, अपनी औकात से कहीं अधिक, हिसाब से उसे सैकड़ों भद्दी-भद्दी गालियां, दस गाली प्रति सैकंड के हिसाब से दे डाली। मन तो कर रहा है कि मैं वह सभी गालियाँ

यहाँ लिख दूँ, किंतु क्या करूँ, है तो वह मेरा रिश्तेदार ही।

खैर। हम गुस्से में घर आकर फिर न्यूज पेपर को चाटने लगे, जो हमारे लिए सिर्फ “रोजगार समाचार पत्र” था। उस दिन समाचार पत्र को हम पर कुछ तरस आ गया। उसके “आवश्यकता है” कॉलम के एक विज्ञापन में वही खूबियाँ मांगी गई थी, जो ले-देकर हममें विद्यमान थीं। विज्ञापन एक शराब की फैक्ट्री में “स्टोर कीपर” की नौकरी का था। वैसे मैं शराब से बेहद घृणा करता था, किंतु उससे कहीं अधिक प्यार करता था, नौकरी से। अतः मैं वक्त की नजाकत को देखते हुए पहुंच गया उस फैक्ट्री में इंटरव्यू देने, जिसे करोड़ों घरों को फूंकने का गौरव प्राप्त था।

इंटरव्यू शुरू होने में अभी एक घंटा शेष था, अतः हमने सोचा, क्यों न तब तक फैक्ट्री घूमकर उसके इतिहास, भूगोल को पढ़ लिया जाए। हमने बहुत देर तक शराब बनने से लेकर शराब भरने तक की ‘रामलीला’ देखी और पुनः आकर अपना इंतजार कर रहे स्टूल पर आकर बैठ गए। न जाने हम कब और कैसे स्टूल के पीछे गिरकर साढ़े पांच फुट का एरिया नाप गए। कुछ साथियों ने हमें उठाया। हमारे सिर पर एक सुंदर सा गूमड़ा पड़ चुका था। इसी बीच हम बिना किसी के बताए यह जान चुके थे कि शराब के बीच एक घंटा रहने से, वह हम पर हावी हो चुकी है। हमें शराब का ठीक-ठाक नशा हो चुका है।

जब हम इंटरव्यू के लिए अधिकारियों के सामने पहुंचे तो एक अधिकारी ने उठकर हमें दोनों हाथों से पकड़कर कुर्सी पर बिठाया। दूसरे ने तुरंत प्रश्न दागा – “मिस्टर श्रीवास्तव। इस शराब के नशे में धुत रहोगे तो काम कैसे करोगे?”

हमने कोई उत्तर नहीं दिया, क्योंकि उत्तर तो हम तब देते, जब हमें प्रश्न समझ में आता।

तीसरे अधिकारी ने पूछा – ‘नाम?’

हमने कहा “बी. कॉम”

उसने पूछा “कहां रहते हो?”

हमने कहा “जे. जे. श्रीवास्तव”

उसने पूछा “किस कॉलेज से”

हमने कहा “चिक संतर मुरार, गली नंबर एक”

उसने कहा – “भाफ कीजिए। हम यह नौकरी आपको नहीं दे सकते।”

हमने कहा – “थैंक्स”

भगवान जाने हमारा इंटरव्यू कितने देर तक चला। हमें बस यह याद है कि दो चपरासी जैसे लोग हमें एक ऑटो में बोरे की तरह फेंकते हुए बोले – “ओ भैया! जरा ज्यादा टुन्न है। घर के अंदर जाकर, घरवालों के हाथों में देकर आना।”

वही ऑटोवाला हमसे रास्ते भर घर का पता पूछता रहा और हम उसे अपने घर का पता ऐसे बताते रहे, जैसे अपने घर जीवन में पहली बार जा रहे हों।

जब काफी देर हो गई तो ऑटो वाले का हम पर विश्वास ही उठ गया। अब वह रास्ता चलते लोगों से हमारी मुंह दिखाई करवाकर पूछने लगा – “अरे भाई साहब! क्या आप जानते हैं कि यह दरूआ (शराबी) कहां पर रहता है?”

जब किसी ने हमारा पता नहीं बताया और हमें उस ऑटो वाले पर तरस आ गया, तो हमने बड़े एहसान के साथ कर्फ्यू में खुले आंशिक बाजार की तरह अपनी आंख कुछ खोली (ताकि हम उस ऑटो वाले की कुछ मदद कर सकें) तो सामने ही अपना घर खड़े हुए पाया। सामने ही पिताजी और भाइयों को देखकर हम खुश हो गए कि चलो घंटे भर बाद ही सही, घर मिल तो गया। हमने पूरी ताकत लगाकर कहा – “यही है हमारा घर।”

“चुप कर दुरुए” – इतना कहकर ऑटो वाला आगे बढ़ गया। लगभग डेढ़ घंटे बाद हमारे उसी दुश्मन रिश्तेदार ने हमें पहचान लिया और ऑटोवाले से बोला – “हाँ मैं इसे जानता हूँ। बहुत अच्छी तरह जानता हूँ। यह देश के करोड़ों बेरोजगारों में से एक है। करोड़ों बेरोजगार इसी तरह भटक रहे हैं, बिना शराब के नशे में डूबे हुए हैं, जिन्हें न अपना घर दिख रहा है, न मंजिला। वह तो बस दौड़े चले जा रहे हैं, लंबी पथरीली राहों पर कि कहीं तो मिलेगी, उन्हें उनकी मंजिला। उनमें से कुछ खुशनसीबों को उनकी मंजिल मिल भी जाती है किंतु दौड़ने वालों की संख्या ज्यामितीय अनुपात में बढ़ती ही जाती है। कभी-कभी दुःख होता है कि क्यों बढ़ रही है देश में शिक्षितों की संख्या, जब उनके लिए रोजगार नहीं है देश में। यह उत्तर उस प्रश्न का भी है कि शिक्षित अपराधियों, शिक्षित आतंकवादियों की संख्या क्यों बढ़ रही है। ये किसकी जिम्मेदारी है, किसका दायित्व है उन्हें रोजगार देने का। कब? आखिर कब खत्म होगी शिक्षित बेरोजगारों की यह दौड़।”

मैंने आंखें खोली। उस रिश्तेदार को देखा और पलकें झपकाकर उसे धन्यवाद दिया, मेरे घाव पर मरहम लगाने के लिए। वह भी समझ गया। उसने मुझे सहारा देकर बड़े प्यार से ऑटो से उतारा और घर के अंदर छोड़कर मेरी तरफ देखते हुए बोला – “जे.जे. – कह दो तूफानों से अपनी औकात में रहें, मैं पंखों से नहीं, हौसलों से उड़ा करता हूँ।”

उनके चन्द शब्दों ने मुझे हौसला दिया। कुछ दिन बाद मैंने कर्मचारी चयन आयोग की परीक्षा दी, उत्तीर्ण हुआ और मेरी नियुक्ति महालेखाकार कार्यालय, ग्वालियर में ही हो गई और आज जैसा भी हूँ, आपके सामने हूँ।



मंजिल

श्रीमती पुष्पा, पत्नी - श्री रूपेंद्र कौशल

सड़क के किनारे पीपल के वृक्ष की छाया में रात्रि के प्रथम पहर में अंकुश और कामिनी चाय की चुस्की लेते हुए बात कर रहे हैं। कामिनी अपने दिनचर्या के विषय में बता रही है लेकिन अंकुश उदास मन लिए कामिनी की बात अनसुना कर रहा है।

कामिनी, अंकुश की ओर देख कर कहती है “कहां खोए हो? मेरी बातें तुम्हें अच्छी नहीं लग रही क्या?” जिस पर अंकुश कहता है, “अरे नहीं नहीं, बस कुछ सोच रहा था।” और कहते-कहते फिर उदास हो जाता है। जिस पर कामिनी पूछती है, “क्या हुआ?” अंकुश सोचते हुए कहता है, “मंजिल जीवन में कितना महत्व रखती है?” कामिनी जवाब देती है “बहुत, अगर मंजिल मिल जाए तो जीवन सफल हो जाता है।”

अंकुश जिज्ञासु होकर फिर पूछता है, “परंतु मंजिल किसे कहते हैं?” कामिनी सोचते हुए बोली, “जो व्यक्ति अपने जीवन में चाहता है, जिससे वह अपने भविष्य को सुंदर और सफल मानता है, शायद उसे ही मंजिल कहते हैं।” परंतु यह आवश्यक नहीं है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी रुचि के अनुसार मंजिल चुने, क्योंकि कभी-कभी प्रतिकूल परिस्थितियां भी उसे मंजिल चुनने को बाध्य कर देती हैं”, अंकुश ने जवाब दिया। कामिनी सोचते हुए बोली, “परिस्थितियां सिर्फ भाग्यवादियों को ही उनके मंजिल से डिगा सकती हैं किंतु कर्मवादी व्यक्ति प्रतिकूल परिस्थितियों से

लड़ते हुए अपने मंजिल तक जाता ही है कर्म से भाग्य बनता है ना कि भाग्य से कर्मा।”

अंकुश यह सुनकर खड़े होते हुए बोला कि तुम जैसी दोस्त कहां मिलेगी जो हमेशा मेरे मानसिक तनाव को सकारात्मक ऊर्जा में परिवर्तित कर देती हो। कामिनी कुछ कहने को हुई कि अंकुश तत्परता से फिर कहता है, “खैर अब चलो, आज “स्पेक्ट्रम” समाप्त करना है। कामिनी ने कहा, “हाँ चलो, मैं तो अभी “एम. लक्ष्मीकांत पढ़ रही हूँ।”

दोनों अपने-अपने घर के लिए चले जाते हैं। अंकुश आज स्वयं को बहुत सकारात्मक महसूस करता है क्योंकि उसे आज लग रहा है कि उसे मंजिल का रहस्य पता चल गया है, सोचता है “मंजिल प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में कल्पना युक्त संसार है और कर्म से वह मंजिल को अपना भाग्य बना सकता है।”

अंकुश के मोबाइल की घंटी बजती है, वह कॉल उठाकर अपने पिताजी को प्रणाम करता है। उसके पिताजी उसके और पढ़ाई के बारे में पूछ कर मोबाइल फोन उसकी माँ को दे देते हैं। उसकी माँ उसे नसीहत देते हुए कहती है “बेटा बहुत अच्छे से मेहनत करना और बेटा ध्यान रखना कि यह तुम्हारा अंतिम चांस है फिर हम इतना खर्च न उठा पाएंगे।” “ठीक है मम्मी रखता हूँ” और अंकुश फोन रख देता है।

अंकुश का मन उदास हो जाता है, वह चलते

-चलते सोचता है - “मनुष्य का जीवन कितना संघर्षपूर्ण है, कहीं अपने सपनों से संघर्ष है, कहीं समाज से, तो कहीं आर्थिक समस्याओं से संघर्ष है। समाज में वर्ग-भेद कितना है, कोई जन्म से राजा के समान है, कोई जन्म से भूख से परेशान, क्या जन्म से पूर्व भी कोई कर्म करना होता है, क्योंकि कर्म से भाग्य बनता है। फिर अचानक रुककर स्वयं से कहता है कि मैं हमेशा ही नकारात्मक हो जाता हूँ। “फोकस अंकुश फोकसा”

अंकुश पढ़ने बैठ जाता है। अगली सुबह उठता है, वही प्रतिदिन की दिनचर्या के अनुसार दोपहर तक पढ़ाई कर शाम को कोचिंग जाता है उसके बाद चाय की दुकान पर कामिनी से मिलता है। “और अब तो ‘प्री’ की डेट भी आ गई”, प्रसन्न होकर कामिनी से कहता है। कामिनी उदास मन से हाँ कहती है। अंकुश उदास होने का कारण पूछता है। कामिनी अनमने मन से कोर्स पूरा न होने की बात बताती है, जिस पर अंकुश कहता है कि बस इतनी सी बात कोचिंग बंद होने के बाद तो पूरा टाइम मिलेगा फिर वह कोर्स पूरा कर सकती है। “हम्म” कामिनी ने लंबी सांस छोड़ी।

अंकुश, कामिनी से पूछता है, “क्या हम सफल हो पाएंगे।” कामिनी जवाब देती है “परिश्रम और मेहनत करेंगे तो जरूर सफल होंगे।” अंकुश कामिनी की नजरों में आशावान निगाहों से देखता है। कामिनी मुस्कराते हुए कहीं घूमने के लिए कहती है “मन भी फ्रेश हो जाएगा और बाकी फिर कोचिंग के बाद कब मिलेंगे या नहीं, कुछ पता नहीं।” “मतलब क्या है? रोज शाम को इस पीपल के नीचे चाय पीने आएंगे, तुमसे बात कर मुझमें

आत्मविश्वास आता है” सकुचाते हुए अंकुश बोला।

कुछ दिन में कोचिंग समाप्त होने के बाद दोनों अपनी-अपनी पढ़ाई में लग जाते हैं, रोज शाम चाय पर मिलते हैं, एक - दूसरे की पढ़ाई पर बात करते हैं, एक दूसरे की समस्या को सुलझाते हैं और साथ में अपने प्रेम को भी। प्रेम अगर इंसान को प्रेरणा देने लगे तो वह इंसान की आवश्यकता बन जाता है और कभी यह आवश्यकता उन्नति में तो कभी अवनति में परिणत होती है।

‘प्री’ की परीक्षा के पूर्व वाली रात्रि को अंकुश और कामिनी बहुत बेचैन हो जाते हैं, दोनों को नींद नहीं आती है, कभी करवटें बदलते तो कभी छत को घूरते, अपने-अपने मस्तिष्क में परीक्षा भवन की तस्वीरें खींचते कि ऐसे करूंगा, ऐसे करूंगी, अगर प्रश्न न आए तो दिमाग को शांत रखना है, प्रश्न ध्यान से पढ़ना है... और ना जाने क्या-क्या! जैसा कि प्रत्येक विद्यार्थी परीक्षा से पूर्व वाली रात को सोचता है फिर कब नींद लग जाती है पता ही नहीं चलता है।

अगली सुबह अंकुश उठता है और कामिनी को कॉल करता है, “गुड मॉर्निंग” उधर से कामिनी पूछती है, “और कैसा लग रहा है?” “मैं तो समुद्र की लहरों के समान चंचलता महसूस कर रहा हूँ, कभी मन शांत हो जाता है मानो तूफान से पूर्व की शांति है, पर कोई न, आज तो अपने कर्मों से अपनी मंजिल को अपना भाग्य बनाना है” अंकुश हंसकर कहता है। कामिनी मुस्कराकर कहती हैं, “हां, यही तो एक खुशी है। चलो मैं तैयार होने जा रही हूँ, ऑल द बेस्ट ...शाम को मिलते

हैं” अंकुश भी “ओके, ऑल द बेस्ट” कहकर फोन रख देता है।

कामिनी से बात करने के बाद अंकुश आत्मविश्वास से ओतप्रोत हो जाता है, गाने गुनगुनाता हुआ नहाता है, खाता है और तैयार होता है, मानो किसी मछली को पानी से निकालकर फिर पानी में छोड़ दिया गया हो।

कामिनी शाम को चाय पीने वाले स्थान पर अंकुश की बेताबी से प्रतीक्षा कर रही होती है, “अंकुश अभी तक आया नहीं.... कहीं पेपर तो बुरा नहीं हुआ.... नहीं नहीं बहुत मेहनत की थी तो पेपर क्यों बुरा होगा... मोबाइल भी बंद था,” शायद अब ऑन हो, अब करूँ?? रूठे स्वभाव में फोन करती है, “हेल्लो, कहाँ हो मैं इंतजार कर रही हूँ।”

फोन की दूसरी तरफ से अजनबी आवाज आती है, “सॉरी मैम, सुबह इनका एक्सीडेंट हो गया था और उनके दाएं हाथ में फ्रेक्चर हो गया, लेकिन अभी चिंता की कोई बात नहीं है” इतना सुनते ही कामिनी के पैरो तले से जमीन सरक गई। वह छुईमुई के समान सिकुड़ गई, आंखों से आंसू, झरने के पानी के समान गिरने लगे और वह वहीं जमीन पर चेतनाशून्य अवस्था में बैठ गई, फिर हिम्मत जुटाते हुए हॉस्पिटल का नाम पूछा। “इंदिरा हॉस्पिटल, कमरा नंबर - 322” अजनबी ने बताया।

कामिनी अपने को संभालते हुए मानो आंसुओं से कह रही कि तू मेरे अधिकार क्षेत्र में आता है, तू मुझे कमजोर नहीं बना सकता। वह हॉस्पिटल पहुंचती है, अंकुश को देखकर रोने लगती है और पूछती है, “यह क्या हो गया?”

अंकुश कुछ नहीं बोलता बस उसकी

आंखों से आंसू निकल रहे हैं, मानो कह रहे हो – “सब समाप्त हो गया” और उसका हृदय चीख रहा हो- “कर्म का स्थान भाग्य से निम्न है और कर्म से भाग्य नहीं बदलता है।”

कुछ दिनों बाद जब ‘प्री’ का परिणाम आता है, कामिनी उत्तीर्ण हो चुकी होती है, पर खुश नहीं रहती है। अंकुश जो लगभग ठीक हो चुका है पर अभी वह लिखने में बस नाम-मात्र ही सक्षम है। अब वह सदैव दुखी ही रहता है। एक दिन, शाम को वह कामिनी से कहता है, “तुम मेरी चिंता ना करो अपने मेन्स पर ध्यान दो, मेरा तो भाग्य ही यही था, हां! एक बात जरूर कहूंगा कि कर्म और भाग्य एक तराजू के दो पलड़े हैं और भाग्य का पलड़ा सदैव भारी रहता है चाहे तनिक भर ही क्यों न हो!!!”

कामिनी को लगा कि शायद अंकुश उससे यह कहना चाहता है कि “तुम गलत थी, अगर कर्म से भाग्य बनता और मंजिल मिलती तो मैं भी आज तुम्हारे साथ मेन्स देने की तैयारी कर रहा होता, लेकिन...।” तभी फिर अंकुश अपने आंसुओं को रोकते हुए बोला कि वह गाँव जा रहा है और फिर कभी दिल्ली नहीं आएगा, वहीं कुछ करके अपना जीवनयापन कर लेगा। यह सुनकर कामिनी स्तब्ध हो जाती है और पूछती है, “फोन तो किया करोगे न?” अंकुश भारी मन से कहता है, “हां, लेकिन, अब मैं तुम्हें अपना नहीं कह सकता, क्योंकि...” (बोलते-बोलते गला रूंध जाता है)। “क्या? क्योंकि पर मैं तो मानती हूँ ना” कहते हुए कामिनी के आंसू छलक पड़े।

अंकुश दूसरी तरफ मुंह फेरकर बोला, “कुछ नहीं, बस तुम अपने जीवन पर ध्यान दो, अगर भाग्य में रहा तो फिर मिलेंगे।” कामिनी रोते

हुए चली जाती है और सोचती है, “जीवन कितना जटिल है, कब किसे सुख मिल जाए और कब उस पर दुखों का पहाड़ टूट जाए कुछ नहीं पता।” अगली सुबह कामिनी जब सामान्य महसूस करती है तो अंकुश को कॉल करती है पर कॉल नहीं लगता है और उसके कमरे पर जाने पर उसे पता लगता है कि अंकुश सदैव के लिए गांव चला गया। वह टूट जाती है, उसके कानों में अंकुश के सिर्फ वही शब्द सुनाई देते हैं – “कर्म से भाग्य नहीं बदलता है!!!”

5-6 वर्षों के बाद कामिनी की पोस्टिंग ‘रामपुर’ जिले में हो जाती है। वह अंकुश के जाने के बाद एक महीने तक अवसाद में रही फिर उसके पापा के समझाने पर धीरे-धीरे सामान्य हो गई और मेन्स एवं इंटरव्यू भी उत्तीर्ण कर दो-तीन वर्षों से आईएएस के पद पर कार्यरत है। काम में व्यस्त रहने के कारण वह ज्यादा अंकुश को याद नहीं करती लेकिन जब भी वह अकेले में अंकुश को याद करती है, उदास हो जाती है। मानो जीवन निस्सार है और कभी-कभी रो पड़ती है।

कामिनी को जिले में आए अभी दो ही दिन हुए हैं। आज उसे जिला न्यायालय के प्रमुख जज की बेटी की शादी में जाना है। जब वह शादी में पहुंचती है तो उसका बहुत सम्मान होता है और वह एक टेबल पर बैठकर चाय पी ही रही होती है तभी उसे अचानक अंकुश नजर आता है। अंकुश पूरी तरह बदल गया है, पहले लंबे-लंबे बाल, दुबले-पतले शरीर और बिना चश्मा वाला अंकुश, अब छोटे-छोटे बाल, पेट थोड़ा उभरा हुआ और चश्मा लगाकर अंकुश, ‘सर’ जैसा दिख रहा है। अंकुश को देखकर कामिनी अपने आप को रोक

नहीं पाती है और उसकी तरफ जाकर हंसते हुए “हाय, अंकुश सर” कहती है। अंकुश भी अचानक कामिनी को देखकर स्तब्ध हो जाता है, उसको अपनी आंखों पर विश्वास नहीं होता कि वह कामिनी जो कभी उसका आत्मविश्वास हुआ करती थी, आज उसके सामने एक बार फिर से खड़ी है।

अंकुश और कामिनी लोगों को अनदेखा करते हुए, एकांत में जाकर, लॉन में बैठ जाते हैं। कामिनी हँसते हुए कहती है, “तुम तो ‘सर’ दिखने लगे हो।” “और तुम, आई.ए.एस. कामिनी?” अंकुश भी हँसकर जवाब देता है। दोनों आपस में बातें करते हैं। कामिनी उदास होकर कहती है, “आई एम सॉरी, तुम सही थे! भाग्य का पलड़ा सदैव भारी रहता है।” “न!, कर्म का पलड़ा भारी होता है” अंकुश तपाक से बोला।

यह सुनकर कामिनी आश्चर्य से सोचती है- “क्या यह वही अंकुश है!!!” अंकुश समझाते हुए बोला, “कर्म के अनुरूप भाग्य बनता है और वह भाग्य हमें मंजिल तक लेकर जाता है और कभी-कभी हमें वह हमारी मंजिल तक न ले जाकर हमें और ज्यादा सफल बनाता है।”

कामिनी आश्चर्य के साथ पूछती है “कैसे?” अंकुश मुस्कराते हुए बोला, “अगर उस दिन मेरा एक्सीडेंट न हुआ होता तो आज शायद मैं अंकुश ‘सर’ न होता और अब मुझे अंकुश ‘सर’ होने में जितना आनंद प्राप्त होता है उतना शायद अंकुश ‘आईएएस’ होने में नहीं होता, क्योंकि मैं आईएएस सिर्फ स्वयं के लिए बनता पर आज मेरे पढ़ाए सैकड़ों बच्चे आईएएस हैं। मैं घर आया छह-सात महीनों तक कुछ नहीं किया फिर एक दिन इस कोचिंग में पढ़ाने के लिए आवेदन किया और

आज हमारी कोचिंग हर साल 10-12 आईएस दे रही है, बाकी सब कुछ तुम्हें पता चल जाएगा दो-चार दिन में।”

“अब बताओ मंजिल क्या है?” कामिनी ने प्रसन्नता से पूछा। अंकुश – “मंजिल व्यक्ति का लक्ष्य है लेकिन मंजिल कर्मों पर आश्रित है, अगर कर्म करोगे तो मंजिल जरूर मिलेगी और अगर मंजिल ना मिले तो पक्का है कि तुम उस मंजिल से भी ऊपर जाने वाले हो। तुम कहती थी ना कर्म से भाग्य बनता है और भाग्य से मंजिल।” “दैट्स राइट” कामिनी मुस्कराई।

फिर अचानक मौन छा जाता है, दोनों एक-दूसरे के पूर्व के प्रेम के विषय में बात करना

चाहते हैं, पूछना चाहते हैं कि तुमने मुझे कितना याद किया या नहीं, क्या शादी कर चुके या फिर से मुझे तुम्हें प्रेम करने का अधिकार मिल सकता है? मौन टूटता है....

कामिनी (धीरे से)- “शादी कर चुके?”

अंकुश (हंसकर)- “तुम्हारे बिना.....”

(दोनों हंसते हैं)

दोनों लॉन में बैठे महसूस कर रहे हैं कि मानो फिर उसी पीपल के वृक्ष के नीचे चाय की चुस्की के साथ परस्पर एक-दूसरे को अपने प्रेम के अधिकार-क्षेत्र में बांधने की कोशिश कर रहे हैं...



मुझे विश्वास है कि सब कुछ गंगा के तट से हमारे पास आया है, - खगोल विज्ञान, ज्योतिष, मेटामसाइकोसिस...

यह ध्यान रखना बहुत महत्वपूर्ण है कि पाइथागोरस लगभग 2500 साल पहले कम से कम ज्यामिति सीखने के लिए समोस से गंगा तक गए थे...लेकिन उन्होंने निश्चित रूप से ऐसी अजीब यात्रा नहीं की होती अगर यूरोप में भारतीयों के विज्ञान की प्रतिष्ठा लंबे समय तक स्थापित नहीं हुई होती। ...

- फ्रेंकोइस मैरी अरोफ्ट वोल्टेयर (फ्रांसीसी लेखक और दार्शनिक)



रंगोली - भारतीय संस्कृति की अमूल्य विरासत

श्रीमती अनीता करकरे, अतिथि रचनाकार

अनेक भारतीय कलाओं के समान ही रंगोली का भारतीय संस्कृति से गहरा नाता है। प्रागैतिहासिक काल से रंगोली के प्रमाण मिलते हैं। संस्कृति के विकास का प्रतिबिंब रंगोली में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। रंगोली जिस प्रकार प्राचीन भारतीय परंपरा का अभिन्न अंग है वैसे ही प्राचीन भारतीय तत्व-

चिंतन व लोक

मान्यताओं का भी

अभिन्न अंग है। रंगोली

द्वारा मूर्त एक रूप का निर्माण

किया जाता है और अमूर्त

संकल्पनाओं को भी साकार किया

जाता है। रंगोली कला का उद्गम,

धर्म की कोख से हुआ है,

यह बात ध्यान में लें

तो धर्मप्रवण

भारतीय समाज

में उसका क्या स्थान है, यह ध्यान में आता है। कहा जाता है कि प्राचीन काल में चित्रकला का प्रारम्भ रंगोली से हुआ है। रंगोली जैसे-जैसे विकसित होती गयी उसका उपयोग अमूर्त, निराकार संकल्पनाओं के प्रतीकों के लिये होने लगा। रंगोली द्वारा अमूर्त देवताओं के प्रतीकों एवं चिह्नों को निकालने से रंगोली का मानवीय जीवन में महत्व बढ़ गया है। उसे घर-घर में स्थान मिला और रंगोली हो गई पवित्रता तथा प्रसन्नता का प्रतीक स्वरूप। वनवासी समाज को तो रंगोली ने आकर्षित किया ही साथ ही अन्य सभी वर्ण पंथ के अनुयाइयों के

मन में भी रंगोली ने जगह बनाई। इस प्रकार रंगोली के अस्तित्व को एक नया अर्थ मिला, उसके रूप को विविध आयाम प्राप्त हुए।

रंगोली : कलात्मक अभिव्यक्ति - घर के साफ सुथरे समार्जित आंगन की छोटी सी रंगोली उस घर

का अलंकरण बन

सामने आती है। इस

छोटी सी कलाकृति में उस

घर के पारिवारिक भाव-सौंदर्य के

दर्शन होते हैं। “घर का अंतरंग सौंदर्य घर

के आंगन में ही प्रतिबिंबित होता है।”

ईंट, पत्थर, चूने से बनी चार दीवारों

से ‘घर’ नहीं बनता। आंतरिक

स्नेहभाव एवं संस्कार संपन्न

जीवन व्यवहारों से घर को

घरपन प्राप्त होता

है। द्वार के सम्मुख,

तुलसी वृंदावन के पास बनी रंगोली के चिह्न उस घर के भारतीयत्व के परिचायक होते हैं। गाय के गोबर या गेरू से लिपे हुए आंगन में सफेद संगमरमर का चूर्ण, नमक या आटे के बिन्दुओं को जोड़-जोड़ कर भिन्न-भिन्न आकृतियाँ एक-एक कर बनती हैं और संस्कृति के प्रतीक चिह्न साकार हो उठते हैं। चंद्र, सूर्य, शंख, गदा, पद्म, गोपद, कलश, श्रीफल, स्वस्तिक, ओंकार आदि चिह्न गृहलक्ष्मी की उँगलियों से सफेद चूर्ण के झरते-झरते बनते हैं; आकृतियों में साकार होते हैं, तब इन शुभ चिह्नों के

समूह से 'रंगोली' बन जाती है। इस रंगोली में घर के भाव सौंदर्य को संजोने वाली गृहिणी के सौंदर्य भाव के दर्शन होते हैं।

कालांतर के प्रवाह में भौगोलिक तथा सामाजिक परिवर्तन हुए। नगरों के महानगर बने। घर के आंगन विलुप्त हो गए। घरों के देवघर संकुचित हो गए। वृंदावन की जगह गमले आ गए, फिर भी द्वार के सामने या बरामदे में रंगोली कायम रही। हर रोज सूर्योदय के पूर्व हल्दी-कुमकुम से सजी आकृतियों की भावगंगा अक्षुण्ण बहती रही। यह रंगोली केवल आंगन की सजावट नहीं है, घरों के 'घरपन' का प्रतीक है। हमारी श्रद्धा है कि रंगोली के अस्तित्व मात्र से घर स्वच्छता, शुचिता, आरोग्य, भक्ति, ज्ञान एवं प्रसन्नता से भर जाता है। रंगोली कला पीढ़ी दर पीढ़ी परिवार में, माँ, दादी, नानी के द्वारा बेटियों-बहुओं तथा आस-पड़ोस की बेटियों को हस्तांतरित होती रही है। यही कारण है कि आज भी लोक कलाओं की विकास प्रक्रिया अबाधित है एवं जीवंत बनी हुई है। अपनी कला से भूमि का श्रृंगार करने वाली ललनाएँ परिवार का ही नहीं अपितु समाज और राष्ट्र के लिये कल्याण व मंगलकामनाएँ करती हैं। यही लोक कलाओं की विशेषता है, जो अपने सम्पूर्ण अस्तित्व को लिये माटी की गंध के साथ हमारी परंपराओं में छलकती है। हमारी परंपराएं हमारी संस्कृति का आधार हैं और परंपराओं को पुष्ट करती हैं "हमारी लोक कलाएँ।" लोक कलाएँ अगर आज अस्तित्व में हैं तो उन्हें जीवंत रखा है, भारत की गृहिणियों ने। एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक परंपराओं की अविरल धारा का प्रवाह अक्षुण्ण रखा है, भारतीय नारियों ने। अपने घर आंगन, द्वार-देहरी को शुभ चिह्नों से प्रेरित कर वे परमपिता परमात्मा से मंगलकामना

की प्रार्थना करती हैं। इस भूमि का एवं प्रकृति का वंदन कर आभार प्रगट करती हैं। इसी के साथ "अतिथि देवो भव" की परंपरा का निर्वाह अतिथि के स्वागत में द्वार - देहरी को शुभ चिह्नों से सजाकर करती है। गृहिणी के हाथों से बने ये शुभ चिह्न स्वागत और सम्मान का भाव जगाते हैं।

रंगोली का इतिहास - 64 कलाओं में रंगोली का उल्लेख वात्सायन के कामसूत्र में मिलता है। तीसरी शताब्दी में धान्यों - फूलों इत्यादि से रंगोली बनाई जाती थी। वरांग-चरित (सातवीं शताब्दी) में पंचरंगी चूर्ण, धान्यों, फूलों से विविध आकृतियाँ बनाये जाने का वर्णन है। जलपंच (10 वीं शती) में उत्सवों में घर के सामने रंगोली बनाने का उल्लेख मिलता है। इतिहासकारों के अनुसार यह कला 2000 वर्ष पूर्व भी प्रचलित थी। विष्णुधर्मोत्तर के 'चित्रसूत्रम्' में रंगोली का वर्णन है। शास्त्रों में इसे आलेखन भी कहा गया है। 64 कलाओं में चौथे स्थान पर 'आलेख्य' नाम से यह वर्णित है। विवाह के अवसर पर सप्तपदी में सात ग्रहों के अंकण की प्रक्रिया को 'आईपण' नाम दिया गया है। धार्मिक यज्ञादि अनुष्ठानों में चावल के चूर्ण से जो चित्र बनाये जाते थे उसमें इसके लिये 'आलेपत' 'अलिंपत' नाम का प्रयोग किया है। रंगोली की परंपरा के पीछे कृषि, संस्कृति की प्रधानता रही है। मनुष्य में भूमि के प्रति अनन्य निष्ठा रही है। विश्व की सारी प्राचीन संस्कृतियों में किसी न किसी रूप में मातृदेवी अथवा भूदेवी की पूजा का विधान रहा है। प्रकृति का विपुल सौंदर्य, पेड़-पौधे, पशु-पक्षियों का साहचर्य भूमि अलंकरण था रंगोली को प्रेरित करता रहा है। रंगोली में पर्याप्त विविधता है। प्रत्येक प्रांत का विशेष वातावरण, लोक कथाएँ, पौराणिक कथाएँ, स्थानीय देवी-देवता, पेड़-पौधे, पशु-पक्षी,

रीति-रिवाज, पर्व-त्यौहार उस क्षेत्र की रंगोली के प्रेरणा स्रोत बने। कहीं मिट्टी के रंग, कहीं चावल का चूर्ण, कहीं फूलों की सज्जा कहीं गोबर से सज्जा स्थान भिन्नता से रंग और रेखाएँ भी अलग हुई, नाम भी अलग हो गए, पर मूल भावना एक ही रही - अपनी संस्कृति, अपनी प्रकृति, लोकमंगल की सौन्दर्यपूर्ण अभिव्यक्ति।

रंगोली के प्रकार: भिन्न-भिन्न प्रांतों में इसे अलग-अलग नामों से पुकारा जाता है। बंगाल में इसे 'अल्पना', उड़ीसा में 'ओसा', गढ़वाल में इसे 'आफना' कहते हैं, तो उत्तर प्रदेश में 'सोन रखना' कहा जाता है। मध्य प्रदेश में 'चौक पूरना', राजस्थान में 'मांडणा', गुजरात में 'साथिया' के नाम से जाना जाता है। बृजप्रदेश और बुंदेलखंड में 'सांझी' नाम से तो तमिलनाडू में 'कोलम', केरल में 'ओणम्', आन्ध्रप्रदेश में 'मुग्गू' नाम से रंगोली को जाना जाता है और महाराष्ट्र की 'रंगोली' तो प्रसिद्ध है ही। अपने-अपने क्षेत्र में हर मांगलिक अवसर पर रंगोली के माध्यम से मनुष्य की प्रार्थना, भावना, आत्मीयता और आनंद अभिव्यक्त होता है। इनमें पूरे देश की आत्मा परिलक्षित होती है।

प्रतीक चिह्न - रंगोली के अंकण में प्रयुक्त होने वाले प्रतीक-चिह्नों का अपना महत्व होता है। पौराणिक आख्यान, धार्मिक कथाएँ, लोक कथाएँ, तो होती ही हैं। सारे प्राकृतिक प्रतीक, जिनका संबंध सौंदर्य, सृजन और लोकमंगल से हैं, चित्रित किए जाते हैं। रंगोली में बनने वाले वृत्त, सरल रेखा, गोपद, सरीखाओं का बहुत ही सारगर्भित प्रतीकों के रूप में प्रयोग होता है। रंगोली की लगभग सभी शैलियों में उपयोग होने वाले प्रतीक चिह्न अपना एक विशिष्ट महत्व रखते हैं। इन कल्याणकारी शुभ

प्रतीकों में गणेश जी व लक्ष्मी जी सुख समृद्धि के लिए, श्री तथा विष्णु पद शुभता के लिए, शंख, चक्र, स्वस्तिक एवं कलश, कल्याण व मंगलता के लिए बनाए जाने की परंपरा है। भारतीय साहित्य व चिंतन में निर्लिप्तता का प्रतीक कमल है। रंगोली में बनने वाले ये प्रतीक एक प्रकार की सांकेतिक भाषा की चित्रलिपि ही हैं। ये प्रतीक चिह्न मंगलकारी एवं कल्याणकारी तो होते ही हैं, कलात्मक व आकर्षक भी होते हैं।

शुभ चिह्नों के अर्थ

1. **ध्वज** - अथर्ववेद में अरुण केतु अर्थात् भगवा ध्वज। भगवा रंग - अग्नि का रंग है। अग्नि, तप, त्याग, तपश्चर्या का प्रतीक है। ध्वज का शाब्दिक अर्थ "फहराना" है। वैदिक काल में अग्नि ज्वाला को ध्वज या केतु कहा जाता था।
2. **बिन्दु** - अर्थात् "बीजरूप", बीज उत्पत्ति का प्रतीक है। मातृत्व एवं सौभाग्य का प्रतीक बिन्दु, स्त्रियों ने बिंदी के रूप में माथे पर लगाया है। दोनों भवों के बीच में भूमध्य चक्र पर तिलक लगाने से सात्विक गुणों का विकास होता है।
3. **सरल रेखा** - सरल स्वभाव, प्रबोधन का प्रतीक है। एक बिन्दु को दूसरे बिन्दु से जोड़ने का प्रतीक।
4. **अर्ध वर्तुल** - यह धारणशक्ति का प्रतीक है जो शक्ति, ज्ञान, विज्ञान, धर्म एवं संस्कृति को व्यवहार में धारण करता है।
5. **पूर्ण वर्तुल** - यह पूर्णत्व का प्रतीक है, पूर्णत्व पाने वाले का जीवन पूर्णिमा के चन्द्रमा के समान होता है।

6. गोपद - यह लक्ष्मी कारक है। यह लक्ष्मी पद की समृद्धि का प्रतीक है।

7. केन्द्रवर्धनी - विश्व की अनंतता का प्रतीक है।

8. स्वस्तिक - यह अति पवित्र चिह्न है। यह चार दिशाओं का प्रतीक है। विष्णु व ब्रह्मा जी की चार भुजाओं का प्रतीक है।

9. श्री - यह ब्रह्मा जी का अक्षर रूप प्रगटीकरण है।

10. शंख - समुद्र मंथन के समय चौदह रत्नों में शंख एक रत्न के रूप में निकला था। यह भगवान विष्णु का एक आयुध है। देव पूजा का महत्वपूर्ण उपकरण है। शंख ध्वनि ऊँकार जैसी होती है। शंख से यह ध्वनि द्विगुणित होकर बाहर निकलती है।

रंगोली मूलतः एक प्रार्थना

ऐसे अनेक शुभ चिह्न हैं। आशय संपन्न शुभ प्रतीक चिह्नों के माध्यम से कल्याण की भावना व विचारों की सौन्दर्यपूर्ण अभिव्यक्ति

करना ही रंगोली का मुख्य उद्देश्य है। विविध प्रांतों में, विविध माध्यमों के द्वारा, विविध नामों से बनने वाली रंगोली के माध्यम से हम सौन्दर्य, प्रसन्नता, शुद्धता, पवित्रता, प्रार्थना, भावना की अभिव्यक्ति करते हैं। रंगोली कला अल्पकालीन है जिसका अस्तित्व क्षणिक है। आनंदमय प्रसन्न व पवित्र वातावरण निर्माण करने के लिये समर्पित होने वाली यह कला परिणामतः बहुत बड़े सामाजिक उद्देश्य की पूर्ति करती है। सामूहिक भाव का निर्माण करना इसका प्रमुख ध्येय है। समूह में कार्य करने से परस्पर स्नेहभाव का निर्माण होता है। व्यक्ति का स्वतंत्र अस्तित्व बिंदु के समान है। साधारण, परन्तु स्नेह भाव की रेखा से जब बिन्दु - बिन्दु जोड़े जाते हैं, तब एकता का भाव सामूहिक रूप में प्रकट होता है। रंगोली के शुभ चिह्नों की पूजा नहीं होती पर इनमें पूजा का भाव निहित है। रंगोली मूलतः सुरक्षा, समृद्धि एवं दीर्घायु के लिए ईश्वर से की गई प्रार्थना है। संस्कृति की प्राणधारा कला माध्यमों से ही सरलता व तरलता के साथ प्रवाहित हो सकती है।





कालः क्रीडति - समय का खेल

श्री रूपेंद्र कौशल, कनिष्ठ अनुवादक

बात उस समय की है जब मैं कक्षा सातवीं का छात्र था, अगर हिसाब लगाऊँ तो शायद वर्ष 1997 या 1998 होता है, चूँकि बात इतनी पुरानी हो चुकी है तो यह भी सही से याद नहीं, इसलिए हिसाब लगाना पड़ रहा है। तो आज से करीब 25-26 वर्ष पहले की बात है (शायद समय कुछ ज्यादा ही हो गया)। उस समय मैं जिस विद्यालय में पढ़ता था वो दिल्ली सरकार के अंतर्गत चलने वाला एक सरकारी विद्यालय था। विद्यालय में कमरे कम और टैट ज्यादा थे, इसी वजह से मेरा वह विद्यालय “टैट वाला स्कूल” के नाम से कुख्यात था, आज उसमें बिल्डिंग बन चुकी है परंतु वह आज भी “टैट वाले स्कूल” के नाम से ही जाना जाता है।

“कुख्यात” इसलिये कहा क्योंकि यह विद्यालय अपनी शिक्षा के नाम से कम अपितु उसमें पढ़ने वाले ऐसे बच्चे, जो कि विद्यार्थी कम और उपद्रवी ज्यादा थे, उनके कर्मों से ज्यादा जाना जाता था। इसकी “कुख्याति” के पीछे एक अन्य कारण यह भी था कि थोड़ी दूर पर एक और सरकारी विद्यालय था जिसमें अच्छी खासी “बिल्डिंग” बनी थी और वह विद्यालय “बिल्डिंग वाले स्कूल” के नाम से विख्यात था। यहाँ के विद्यार्थी रईस या बड़े घर वाले तो नहीं कहूँगा, परंतु हाँ, यह कहा जा सकता है कि ठीक-ठाक घरों से आते थे, हर साल ज्यादा बच्चे भी इसी विद्यालय के उत्तीर्ण होते थे, कुल मिलाकर कहा जाए तो बड़े ही नाजुक और सभ्य बच्चे थे, तो वो “बिल्डिंग

वाला स्कूल – विख्यात” था और “टैट वाला स्कूल – कुख्यात”।

उस समय, विद्यालयों में संस्कृत के अध्यापक नहीं अपितु शास्त्री/आचार्य थे, जिन्हें संस्कृत का प्रगाढ़ ज्ञान था। मेरे विद्यालय में भी संस्कृत के ऐसे ही दो महारथी आचार्य थे। उनमें से एक का उपनाम ही शास्त्री था, सिर पर सारे बाल सफेद हो चुके थे और लम्बी सी चोटी थी, पहनावा अति श्वेत वर्णीय धोती-कुर्ता (बिल्कुल बी.आर. चोपड़ा की महाभारत में पितामह के जैसे ही लेकिन बिना दाढ़ी-मूँछों के), बड़े ही शांत चित्त और दिखने में तो वृद्ध लगते थे, परंतु थे नहीं, क्योंकि हम तो बच्चे थे, और बच्चों को ऐसे व्यक्ति वृद्ध ही लगते हैं। मजाकिया तौर पर हम उन्हें देख कर कहते थे कि उनकी उम्र 100-150 वर्ष तो होगी ही, आज की भाषा में कहा जाए तो “हैरी पॉटर” के “डंबलडोर”। विद्यालय में जब भी कोई सांस्कृतिक कार्यक्रम होता अथवा मौन धारण करना होता था तो ऐसे कार्यक्रमों का शुभारंभ शास्त्री जी से ही कराया जाता था। शास्त्री जी बड़े ही शांत चित्त के व्यक्तित्व के धनी थे, इतने शांत चित्त जैसे कि अगर मेनका भी धरा पर आ जाए तो वह भी उनका चित्त विचलित ना कर पाए।

और संस्कृत के दूसरे आचार्य जो कि मेरी कक्षा में संस्कृत के आचार्य थे, अब यह बात इतनी पुरानी हो चुकी है कि उनका पूरा नाम तक भी मुझे अब याद नहीं, बस उनका उपनाम जो कि “शर्मा”

था, बस वही याद रह गया है। उनका कद छोटा; करीब-करीब साढ़े चार से पांच फुट के आस-पास, काले बाल, उनकी भी वही लंबी सी चोटी और तीखी पैनी आवाज थी; शास्त्री जी से बिल्कुल विपरीत। ज्ञान के मामले में तो दोनों ही बराबर थे। अब शर्मा सर की बात करते हैं, उनसे मुझे ज्ञान प्राप्त करने का सौभाग्य केवल तीन वर्ष, कक्षा छह से आठ तक ही मिला। जितना अच्छा शर्मा सर पढ़ाते थे उतने ही अच्छे तरीके से कुटाई भी करते थे। जो पाठ वे आज पढ़ाते थे, उसे अगले दिन के लिए याद करने के लिए दिया करते थे और अगले दिन कक्षा की शुरुआत में सुना करते थे। जो छात्र सही अथवा पूर्ण रूप से नहीं सुना पाता था उसकी खैर नहीं होती थी। ज्यादातर छात्र कद में शर्मा सर से लंबे ही थे। तो उनका छात्रों को पिटाई का तरीका कुछ ऐसे होता था कि मारने के लिए उनके दोनों हाथ एक-साथ उठते थे, दाएं हाथ से गाल पर थप्पड़ मारने के लिए और बाएं हाथ से सिर के पीछे मारने के लिए। जिस बच्चे की पिटाई होनी होती थी, उसे लगता था कि पहले गाल पर थप्पड़ पड़ेगा, तो कद लंबा होने के कारण सिर को जैसे ही पीछे की तरफ खींचा, तो पहला थप्पड़ बाएं हाथ से पीछे से सिर को ऐसे झुन्ना देता था कि बस पूछो ही मत और सिर पर पीछे की तरफ से थप्पड़ लगने की वजह से छात्र आगे सिर को झुकाया तो दाएं हाथ से दूसरा थप्पड़ गाल पर पड़ते ही माँ-बाप, दादा-दादी, नाना-नानी सब-कुछ याद दिलाने के साथ यह भी याद दिला देता था कि अगली बार सब कुछ याद करके आना है। इस तरीके से मारने से छात्र का कद शर्मा सर के बराबर में अथवा नीचे तो हो ही जाता था और एक बार छात्र झुका तो पीठ पर भी उसी शालीनता के साथ झुन्नाटेदार थप्पड़

आता था। यह जो कुटाई करने की विधि एक छात्र पर मात्र दो-तीन बार और मात्र दो-तीन छात्रों पर ही आजमाई जाती थी जोकि बाकी कक्षा को आक्रांत और प्रोत्साहित एक ही साथ करने के लिए काफी होती थी। प्रोत्साहन इतना कि पूरे विद्यालय में छात्र शर्मा सर को कहीं भी देख लें, वहां से निकल लेने में ही अपनी भलाई समझते थे, चाहे पानी के लिए जा रहे हो या फिर अपनी “शंका” मिटाने। मुझे भी वह “प्रोत्साहन” अपनी पीठ पर प्राप्त करने का सौभाग्य तीन वर्षों में केवल एक ही बार कक्षा सात में हुआ था, उसके बाद फिर कभी वह सौभाग्य प्राप्त करने की चेष्टा तो दूर, सोचा भी नहीं। शर्मा सर के इसी प्रोत्साहन के चलते संस्कृत का ज्ञान मुझे भी ऐसा हो गया था कि मेरी आठवीं की परीक्षा में मेरे आगे बैठे एक ग्याहरवीं या बारहवीं कक्षा के छात्र की संस्कृत विषय की परीक्षा में मैंने उसकी बहुत सहायता की थी।

इन पिछले 25-26 वर्षों में संस्कृत का ज्ञान अब उतना नहीं रहा, जितने भी श्लोक, सुभाषितानि इत्यादि याद किए थे वे भी सभी धुंधला गए हैं, कभी कोई श्लोक कहीं सुनने या पढ़ने में आ जाता है तो याद आ जाता है कि यह श्लोक कब और कहां पढ़ा था। परंतु कक्षा सात में संस्कृत की पुस्तक में संस्कृत की एक कविता थी “कालः क्रीडति” उसका एक-एक शब्द और उन शब्दों का अर्थ स्मृति पटल पर आज तक धुंधला तो छोड़ो, इस तरह याद है कि जैसे इस कविता को अभी कल ही याद किया हो (प्रोत्साहन का प्रभाव)। वही कविता अब अपने स्मृति पटल से अर्थ समेत यहां उकेर रहा हूँ। इस कविता का जो सार है वह मनुष्य के मोह नहीं छोड़ने पर आधारित है कि कैसे मनुष्य अपना सारा जीवन, मोह के वशीभूत होकर व्यर्थ

में व्यतीत कर देता है और इस मोह से निकलने का एकमात्र रास्ता है, प्रभु का।

दिनमपि रजनी सायं प्रातः शिशिरवसन्तौ
पुनरायातः।

कालः क्रीडति गच्छत्यायुः तदपि न
मुञ्चत्याशावायुः॥

अर्थ: दिन के बाद रात्रि, सायंकाल के बाद सुबह और शिशिर, वसंत ऋतुएं पुनः आकर चली जाती हैं। समय के खेल में सारी आयु निकल जाती है परंतु फिर भी मनुष्य मोह नहीं छोड़ता है।

अग्रे वह्निः पृष्ठे भानुः रात्रौ चिबुकसमर्पितजानुः।
करतलभिक्षा तरुतलवासः तदपि न
मुञ्चत्याशापाशः॥

अर्थ: जैसे सर्दियों के दिनों में शरीर के पृष्ठ भाग को आग से, पीठ को सूरज की तपिश से और रात के समय में घुटनों के बीच में ठुड्डी रख कर समय बिताता है तथा दिन में भिक्षा मांगता है और पेड़ के नीचे आराम करता है, परंतु फिर भी मनुष्य मोह नहीं छोड़ता है।

यावद्वित्तोपार्जनसक्तः तावन्निजपरिवारो रक्तः।
पश्चाद्भावति जर्जरदेहे वार्ता पृच्छति कोऽपि न गेहे॥

अर्थ: जब तक शरीर में ताकत होती है, धन कमाता है, परिवार के भरण पोषण में खून-पसीना एक करता है। परिवार के लिए भागादौड़ी में शरीर जर्जर हो जाता है परंतु घर पर कोई उसको पूछता भी नहीं।

अङ्गं गलितं पलितं मुण्डं दशनविहीनं जातं तुण्डम्।
वृद्धो याति गृहीत्वा दण्डं तदपि न
मुञ्चत्याशापिण्डम्॥

अर्थ: सारे अंग शिथिल हो जाते हैं, सिर गंजा हो जाता है, मुंह के सारे दांत टूट जाते हैं। शरीर इतना वृद्ध हो जाता है कि अब डंडे/छड़ी के सहारे चलना पड़ता है परंतु फिर भी मनुष्य मोह नहीं छोड़ता है।

गेयं गीतानामसदृशम् ध्येयं श्रीपतिरूपमजस्रम्।
नेयं सज्जनसङ्गे चित्तम् देयं दीनजनाय च वित्तम्॥

अर्थ: गीता का हजारों बार गान, भगवान के अनंत रूप का मन में ध्यान करो, सदा सज्जनों के संग में रहो और दीनजनों को दान दो।

भज गोविन्दम् भज गोविन्दम्,
गोविन्दम् भज मूढमते।

अर्थ: हे मूर्ख मन... गोविंद की खोज कर, गोविंद का भजन कर और गोविंद का ही ध्यान कर, तभी इस सांसारिक मोह से पीछा छूटेगा।

कथ्य यह है कि अगर पीछे मुड़कर याद करें तो इस बात को लगभग ढाई दशक बीत चुके हैं, अध्यापकों के, पुस्तकों के नाम यहां तक कि उस समय जो दोस्त, सहपाठी थे, उनके नाम भी, एकाध को छोड़कर सभी कुछ धुंधला गए हैं। परंतु यह कविता मानस पटल पर इस तरह अंकित है जैसे पत्थर पर छैनी-हथौड़े से कुछ अमिट आकृति उकेर दी गई हो, जिसका कारण शर्मा सर का “प्रोत्साहन” रहा हो या फिर यह कि अंत में गोविंद नाम ही शेष रह जाता है एवं मनुष्य का जो मोह है उस से बचने का एक ही उपाय है “प्रभु शरणागति।”

॥ भज गोविन्दम् भज गोविन्दम्,
गोविन्दम् भज मूढमते ॥



नवाबों का शहर 'लखनऊ'

सुश्री काजल वर्मा, लेखापाल

‘लखनऊ’ वर्तमान में जनसंख्या की दृष्टि से भारत के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश की राजधानी है। इसे नवाबों का शहर क्यों कहा जाता है, इस बारे में कई कहानियाँ प्रचलित हैं। इस शहर को लेकर पौराणिक मान्यताएं भी हैं। कहा जाता है कि इस स्थान को भगवान राम ने अपने अनुज लक्ष्मण को उपहार स्वरूप दिया था। लक्ष्मण ने गोमती नदी के तट पर एक नगर बसाया था जिसे

अवध में नवाबों का इतिहास शुरू होता है वर्ष 1722 से जब सआदत अली खान ने यहां अवध राज्य की स्थापना की। लखनऊ की स्थापना नवाब आसफ़ुद्दौला ने वर्ष 1775 में की, उस वक्त लखनऊ का नाम अवध हुआ करता था। सन 1850 में लखनऊ के अंतिम नवाब वाज़िद अली शाह थे। 1857 के सिपाही विद्रोह के फलस्वरूप ये नगर ब्रिटिश साम्राज्य के हाथों में चला गया।

लक्ष्मणवटी, लक्ष्मणपुर या लखनपुर नाम से जाना गया। बाद में यही नाम भाषा एवं बोली में बदलाव के चलते अपभ्रंश होकर लखनऊ हो गया।

लखनऊ को नवाबों के शहर के अलावा तहजीब का शहर भी कहा जाता है। यहां का रहन-सहन, खान-पान, तौर-तरीके, भाषा, इमारतें, पहनावा आदि में राजसी जीवन की झलक दिखाई देती है। यहां की बोली की मिठास, मिठाई से भी ज्यादा मीठी है।

लखनऊ आज भी अपने पुराने आकर्षण के लिए विख्यात है, जो पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र है। संस्कृति के मामले में देश के बेहतरीन शहरों में से एक लखनऊ की संस्कृति का एक बड़ा विस्तृत दायरा है। अवध के नवाबों के संरक्षण में नृत्य, संगीत, साहित्य, उर्दू कविता और नाटक को यहां बहुत महत्व दिया गया जिसका प्रभाव यहां आज भी देखा जा सकता है।

लखनऊ को लजीज व्यंजन प्रेमियों के लिए स्वर्ग कहा जाता है। यदि आप नॉन-वेज के

शौकीन हैं तो लखनऊ आपके लिए स्वर्ग ही है। आपको यहां कबाब और मुगलई व्यंजनों की बहुत सारी किस्में मिल जाएंगी।

कुछ प्रमुख अवधी व्यंजनों में लखनवी बिरयानी, लखनवी कबाब, कुल्चा एवं रूमाली रोटी इत्यादि हैं। कबाबों में टुंडे कबाब सबसे ज्यादा प्रसिद्ध है। टुंडे कबाब के बारे में एक मशहूर कहानी है कि उस समय के नवाब वाजिद अली शाह खाने-पीने के तो बहुत शौकीन थे, परंतु बुढ़ापे में दांत नहीं रहने के कारण खाने के शौक कैसे पूरे हों, तो नवाब

खान जैसे कई अभिनेताओं की टुंडे कबाब खाते हुए की फोटो देखने को मिल जाएंगी। लखनवी बिरयानी के बारे में कहा जाता है कि उस समय 365 तरीके की बिरयानी बनाई जाती थी, आज एक खाओ तो उसका नंबर अगले वर्ष आता था।

लखनऊ की वास्तुकला अद्वितीय है। यहां विभिन्न प्रकार की इमारतें देखने को मिलती हैं। जैसे इमाम-बाड़ा, रूमी दरवाजा इत्यादि। हमारे लखनऊ शहर में पर्यटन स्थलों की भी कोई कमी नहीं है। इसलिए दुनिया भर के लोग यहां की खूब-



एक प्रतियोगिता आयोजित करवाई जिसमें एक खानसामा, हाजी मुराद अली जो कि एक हाथ से अपंग थे, उस समय एक हाथ से अपंग व्यक्ति को 'टुंडे' कहा जाता था, ने वह प्रतियोगिता जीती। इन टुंडे कबाब की खासियत यह है कि इन्हें खाने के लिए चबाना नहीं होता, मुंह में रखते ही घुल जाते हैं। टुंडे कबाब इस कदर प्रसिद्ध है कि बॉलीवुड के अभिनेता तक इनके लिए लखनऊ खिंचे चले आते हैं और टुंडे कबाब का लुत्फ उठाते हैं। अमीनाबाद के टुंडे कबाब में राजेश खन्ना से लेकर शाहरुख

-सूरी देखने आते हैं। लखनऊ में विभिन्न प्रकार के पार्क, विज्ञान म्यूजियम और लखनऊ का चिड़ियाघर संपूर्ण भारत में प्रसिद्ध है, पार्कों में अंबेडकर पार्क एवं जनेश्वर मिश्र पार्क प्रमुख हैं। अंबेडकर पार्क का निर्माण वर्ष 2008 में हुआ था। यहां पर डॉ. अंबेडकर की एक बड़ी सी मूर्ति भी स्थापित है। इस पार्क का निर्माण लाल बलुआ पत्थर से हुआ है जिसको राजस्थान से मंगवाया गया था, इस पार्क की खास बात यह है कि यहां अन्य पार्कों की तरह पेड़-पौधे नहीं बल्कि कई

अन्य कलाकृतियां हैं। वहीं दूसरी ओर जनेश्वर मिश्र पार्क को एशिया का सबसे बड़ा पार्क माना जाता है।

उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में शिक्षा केंद्रों की भी कोई कमी नहीं है। यहां पर बहुत सारे चिकित्सा संस्थान, प्रौद्योगिकी संस्थान के साथ-साथ छह विश्वविद्यालय भी हैं।

वैसे तो लखनऊ में छोटे-बड़े कई बाजार हैं जिनमें से एक है जनपथ मार्केट, जिसे मीना बाजार के नाम से भी जाना जाता है। यह बाजार लखनऊ के हज़रतगंज इलाके में स्थित है। इस जगह को 'लखनऊ का दिल' भी कहा जाता है। यह लखनऊ में सबसे ज्यादा घूमी जाने वाली जगहों में से एक है।

लखनऊ, लखनवी चिकन और जादोजी (सितारे का काम) के लिए बेहद लोकप्रिय है। ये दोनों अलग-अलग प्रकार की स्टाइलिश और खूबसूरत भारतीय कारीगरी है। इनका निर्यात शहर के राजस्व का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इन हस्तशिल्प कढ़ाइयों की मांग भारत में ही नहीं बल्कि विदेशी बाजारों में भी है। इसके साथ-साथ लखनऊ के अन्य प्रसिद्ध उद्योग भी हैं जैसे पतंग, इत्र और मिट्टी के बर्तन बनाना करना इत्यादि।

दशहरी आमों की मांग भारत के कोने-कोने में है। वहीं दूसरी ओर विदेशों में भी लोग इसे भारी मात्रा में पसंद करते हैं। इस दशहरी आम की शुरुआत भी लखनऊ में हुई थी। दरअसल, लखनऊ से 15 किलोमीटर दूर एक गांव है जिसका नाम दशहरी है, जहां से दशहरी आम की शुरुआत हुई थी। इस गांव में करीब दो सौ साल पुराना एक दशहरी का पेड़ है, जिसे देखने दूर-दूर से लोग आते

हैं। लेकिन जब भी दशहरी आम का जिक्र होता है तो लोगों को मलीहाबाद ही याद आता है। इस बात को लेकर दशहरी गांव के लोगों में थोड़ी नाराजगी भी है।

लखनऊ में एक इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम भी है जिसका नाम इकाना क्रिकेट स्टेडियम है। यहाँ पर कई अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मैच खेले जाते हैं। अब इस स्टेडियम का नाम बदलकर भारत रत्न श्री अटल बिहारी वाजपेयी स्टेडियम कर दिया गया है। आई.पी.एल. के भी कई मैच इस स्टेडियम में आयोजित किए जाते हैं।

इस शहर में आने वाले शख्स के कदम जैसे ही चारबाग रेलवे स्टेशन पर पड़ते हैं, यहां की खूबसूरती और भव्यता उसे दीवाना बना देती है। चार बाग रेलवे स्टेशन ऊपर से देखने पर शतरंज की बिसात जैसा लगता है। किसी चौसर की तरह चार नहरें बिछाकर चार कोनों पर चारबाग बनवाए गए थे। इस तरह के बागों को चाहर बाग कहा जाता था। बाद में यही चारबाग के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

लखनऊ अपने ऐतिहासिक और आधुनिक आकर्षणों के साथ "विविधता में एकता" की बात को सत्य साबित करता है। यह एक ऐसा शहर है जो इतनी तेजी से आधुनिकरण की ओर अग्रसर होने के बावजूद अपनी विरासत को संजोए हुए है, लखनऊ मात्र एक शहर ही नहीं अपितु यहां रहने वालों के लिए एक एहसास है जिसे कभी भुलाया नहीं जा सकता है। लखनऊ के बारे में जितना लिखा या कहा जाए कम ही है। यहां के लोगों के लिए लखनऊ एक प्रेम है और प्रेम ही जीवन का असली आधार है।

“मुस्कराइये, आप लखनऊ में हैं।”



कृतज्ञता

सुश्री दीप्ती वर्मा,
कनिष्ठ अनुवादक

कृतज्ञता हमारे जीवन को समृद्ध करने का एक सुंदर तरीका है। यह जीवन में प्राप्त होने वाली उपलब्धियों के लिए प्रशंसा और सद्भाव की भावना और दृष्टिकोण को संदर्भित करता है। हम प्रकृति के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त कर सकते हैं जिसने हमें अत्यंत बहुमूल्य संपदाएं - वायु, जल और भोजन प्रदान की हैं। कृतज्ञता किसी के लिए भी उत्पन्न हो सकती है जैसे

ईश्वर, समाज, प्राणी आदि,

जैसा कि जिग जिगलर

ने अपनी इन

पंक्तियों में कहा है

“आभार सभी

मानवीय

भावनाओं में

सबसे स्वस्थ

भावना है।

आपके पास जो

कुछ है उसके लिए आप

जितना अधिक आभार व्यक्त

करेंगे, उतनी ही अधिक संभावना होगी कि

आपके पास आभार व्यक्त करने के लिए और भी

अधिक होगा।”

एक बार एक बहुत ही नेक व्यक्ति जिसका नाम जानकीदास था, का निधन हो गया। उसके अच्छे आचरण के कारण एक देवदूत आया और उसे सम्मान के साथ अपने साथ स्वर्ग ले गया और

स्वर्ग के विभिन्न हिस्सों को दिखाने लगा। जैसे ही वे आगे बढ़े, उन्होंने पहली बार एक हिस्सा देखा जहां कई स्वर्गदूत काम में बहुत व्यस्त थे। जानकीदास ने इस पर ध्यान दिया और आश्चर्य से देवदूत से पूछा कि वे इतने व्यस्त क्यों हैं? देवदूत ने उत्तर दिया- यह प्रार्थना प्राप्त करने वाला हिस्सा है।

इनका काम उन सभी प्रार्थनाओं और

अनुरोधों का दस्तावेजीकरण

करना है जो पृथ्वी पर

लोग परमेश्वर से

मांगते हैं। चूंकि

बहुत सारी

प्रार्थनाएं और

अनुरोध हैं

इसलिए वे

बहुत व्यस्त हैं।

इसके पश्चात वे

दूसरे खण्ड में चले

गए, जहां फिर से कई

स्वर्गदूत एक दूसरे से बिना

बात किए पूरी तरह से काम में व्यस्त थे।

जानकीदास ने फिर पूछा, जिसके लिए स्वर्गदूत ने

जवाब दिया- यह वह अनुदान खण्ड है जिसके

लिए भगवान ने लोगों की प्रार्थनाओं के अनुरोधों

के लिए प्रतिक्रिया प्रदान की है। जैसा कि भगवान

कई अनुरोधों को पूरा करते हैं तो यह खण्ड हमेशा

व्यस्त रहता है। जैसे ही वे आगे बढ़े उन्होंने एक



छोटे से कमरे को देखा जिसमें केवल एक स्वर्गदूत बिना ज्यादा काम के आराम से बैठा था। यह देखकर जानकीदास ने आश्चर्यचकित होकर पूछा, यह स्वर्गदूत दूसरों की तरह व्यस्त क्यों नहीं है? इस पर देवदूत ने उत्तर दिया “यह धन्यवाद देने वाला अनुभाग है इनका काम धन्यवाद देने वाली प्रतिक्रिया को एकत्र करना और दस्तावेजीकरण करना है, जो लोग भगवान द्वारा अपनी इच्छा पूरा करने के लिए उनके अनुरोध के बाद भेजते हैं।” जानकीदास ने पूछा लोग “ऐसा कैसे कर सकते हैं?” देवदूत ने कहा “यह बहुत स्वाभाविक है, जब भगवान किसी की प्रार्थना पूरी करते हैं और यदि व्यक्ति कृतज्ञता के साथ अपना धन्यवाद प्रस्तुत करता है तो वह यहाँ पहुंचता है।”

इस पर जानकीदास ने पूछा “किन कारणों से भगवान के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करनी चाहिए?” देवदूत मुस्कराया और कहा “अगर आपके घर में आपके भोजन के लिए समस्या नहीं है, आपके पास आश्रय है और आपके पास पहनने के लिए उचित वस्त्र हैं तो आप दुनिया के भाग्यशाली लोगों में से एक हैं। जब आप स्वस्थ होने पर रोजाना उठते

हैं तब भी आपके पास अपने माता-पिता की सेवा करने का मौका होता है। यदि आप एक सुखी परिवार का हिस्सा हैं, यदि आप आत्मविश्वास के साथ अपना सिर उठा कर चल सकते हैं तो आप दुनिया के सबसे भाग्यशाली व्यक्तियों में से एक हैं। इन सभी कारणों से कोई भी परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता व्यक्त कर सकता है।”

अब जानकीदास को महसूस हुआ कि धन्यवाद देने वाले अनुभाग में वह स्वर्गदूत व्यस्त क्यों नहीं था क्योंकि लोगों की कृतज्ञता प्रकट करने की प्रतिक्रियाओं की संख्या बहुत कम थी और यह सोचकर वह बहुत दुखी हो गया। उसने मन ही मन सोचा इंसान इतना स्वार्थी क्यों बन जाता है?

इस प्रसंग में मुकुटधर पाण्डेय की पंक्तियाँ याद आती हैं-

है कृतज्ञता-पूर्णहृदय की महिमा अति विख्यात ।
कर्म और फल दोनों ही का यह अद्भुत अनुपात ॥

कृतज्ञता व्यक्त करना एक सभ्य व्यक्ति का प्रथम चरित्र है। मदद और मदद करने वाले को भूल जाना अपनी संस्कृति को भूलने जैसा है।



हम पश्चिम के लोग उस चौराहे पर अब पहुंचने वाले हैं जिस पर ईसा से सैकड़ों वर्ष पहले भारत के विचारक पहुंचे थे।

- हेनरिक ज़िगर (जर्मन भाषाविद्)



बयानों के थप्पड़

श्री मदनगोपाल शर्मा,
सेवा निवृत्त वरिष्ठ लेखापाल

इस में कोई शक नहीं कि बयान-वीर के रूप में हम लोकप्रियता के शिखर पर हैं, हमारे मुकाबले में शायद ही कोई और हो। कुछ भी बिना सोचे समझे कह देने में हम माहिर हैं और इसके परिणाम की कभी चिंता नहीं करते, क्योंकि अनावश्यक बकवास करना हमने अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझ रखा है। आश्चर्य की बात यह है कि बयान-वीरता का प्रदर्शन हर क्षेत्र, हर समाज, हर वर्ग व हर उम्र में दिखाई देता है, लगता है इसे सब का साथ मिला हुआ है। कुछ क्षेत्रों में तो शायद एकाधिकार है, संसद, विधानमंडलों में हमारे जन प्रतिनिधि आए दिन उल्टे-सीधे बयान शायद इसलिए निःसंकोच देते हैं, क्योंकि वहां के कथन पर उनके खिलाफ कानूनी कार्रवाई नहीं होती, ज्यादा से ज्यादा उनके बयान पर उनको कार्यवाही से बाहर निकाल दिया जाता है। तथाकथित बाहुबली लोग तो बयानों के थप्पड़ के साथ असल में भी थप्पड़ लगाने का अधिकार रखते हैं। उनसे किसी मर्यादा या गरिमा की अपेक्षा भी नहीं रखनी चाहिए। गुस्से में आम आदमी भी अक्सर बयानों के थप्पड़ जड़ देता है, भले ही कुछ देर के पश्चात उसे पछतावा होता हो।

असल में बयानों के थप्पड़ जड़ने के पीछे कोई ठोस कारण नहीं होता, अक्सर जोश और उत्साह में लोगों के मुंह से ऐसी बातें निकल जाती हैं। यही बात शालीनता और विनम्रता से भी कही जा सकती है, इसमें व्यंग्य का सहारा भी लिया जा सकता है, जिससे सांप भी मर जाए और लाठी भी ना टूटे। क्रोध के समय स्वयं पर नियंत्रण रखना बहुत मुश्किल काम है, यदि कोई व्यक्ति स्वयं पर नियंत्रण रख सके तो फिर यह समस्या ही पैदा नहीं होगी। बातों का इतिहास अपने आप में अनोखा है, बातें चलती हैं, उड़ती हैं, बहकती हैं, अड़ती हैं, लड़ती हैं। इन्हीं सब क्रियाकलापों के बीच लोग बयानों के थप्पड़ जड़ने लग जाते हैं, क्या कहते हैं, खुद ही नहीं समझते।

बयानों के थप्पड़ चूंकि केवल बातों तक सीमित रहते हैं इसलिए यह शारीरिक चोट तो नहीं पहुंचाते हैं पर मानसिक संताप को संक्रमण की तरह फैलाते हैं, कभी-कभी ऐसे हमले बहुत गहरा घाव मन के भीतर तक कर देते हैं, जिसके भरने में काफी समय लगता है। ज्यादातर समझदार लोग ऐसी बातों पर ज्यादा ध्यान नहीं देते हैं और एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल देते हैं। दुर्भाग्य की बात यह है कि जुबानी जंग मर्यादा विहीन होती जा रही है। लोग कल्पना भी नहीं कर सकते कि इस तरह के जुबानी थप्पड़ लोग लगा सकते हैं। पहले लोग उच्च पदस्थ लोगों, सम्माननीय रिश्तेदारों, आदरणीय लोगों के प्रति अशोभनीय और अमर्यादित शब्दों का प्रयोग करने से डरते थे। समाज निगरानी रखता था और दोषी लोगों को दंडित करता था तथा सामाजिक बहिष्कार भी किया जाता था।

आज तो माहौल ही बदल गया है, कोई किसी का लिहाज ही नहीं रख रहा है, यहां तक कि देश, समाज, सेना, गुरुजन, माता-पिता के खिलाफ भी लोग बयानों के थप्पड़ लगाने से नहीं हिचकते। इस मामले में लगता है लोग निर्भय हो गए हैं। यह ठीक है कि कानूनी नजर से यह ठीक नहीं है और शिकायत करने जाने पर कार्रवाई भी की जाती है पर यह समस्या का समाधान नहीं है। लोगों को संयम बरतने और हमेशा सोच विचार कर मर्यादित होकर कोई भी बात मुंह से निकालनी चाहिए। बयानों के थप्पड़ जड़ने वाले लोगों को समझा बुझाकर सीमा में रहना सिखाना चाहिए तथा न मानने वाले लोगों को सामाजिक दंड का भय दिखाना चाहिए। न्यायालय में कितने प्रकरण जाएंगे, हमारे यहां तो लोग हर पल-हर क्षण बातों के थप्पड़ जड़ते ही रहते हैं और लाख समझाने पर भी उनपर कोई असर नहीं होता।



संगति का जीवन में महत्व

श्री लालमणि शर्मा, सेवा निवृत्त टी.आई.

भगवान प्रत्येक मनुष्य को एक मति प्रदान कर संसार में पैदा करते हैं। पैदा होने के बाद मनुष्य का दायित्व बनता है कि वह अपनी मति को किस ओर ले जाता है। यदि वह अच्छी संगति में जाएगा तो उसकी मति सुमति बन जायेगी और यदि वह कुसंगति में जाएगा तो उसकी मति कुमति बन जाएगी। अतः अपनी मति को सुमति या कुमति बनाने का दायित्व मानव पर निर्भर रहता है। संगति का मानव पर बहुत गहरा असर पड़ता है। संगति के बारे में श्री सूरदास जी ने लिखा है, कि स्वाती नक्षत्र की एक पानी की बूंद सर्प के मुंह में जाने पर विष, कमल की डंठल में गिरने पर कपूर और समुद्र की सीप के ऊपर गिरने पर मोती बन जाती है।

अहि मुख पड़्यो सो विष भयो, कदली भयो कपूर।
सीप पड़्यो मोती भयो संगत के फल सूर।

दुर्जन का संग रखने पर व्यक्ति प्रतिदिन पतन की ओर अग्रसर होता है। श्री रामचन्द्र शुक्ल का कहना है कि कुसंगत का ज्वर सबसे भयानक होता है “कहावत है कि महिमा घट समुद्र की रावण बसो पड़ोसा।” दुष्ट लोगों का स्वभाव होता है कि अच्छी बातों में भी दोष निकालते हैं और सज्जन व्यक्ति दोषों में भी अच्छाई निकालते हैं। अंग्रेजी में विलियम शेक्सपीयर की एक कहावत है:-

Neither is good nor is bad. But thinking make it. So, each and every thing of world is good if you know the right use of it. “अर्थात्, अच्छा या बुरा कुछ भी नहीं होता, लेकिन सोच उसे ऐसा बनाती है।

यदि सही उपयोग करना जानते हैं तो संसार में सभी कुछ अच्छा है।”

कुसंगति में जाने से हमारा अन्तःकरण मैला हो जाता है। संसार में सच्चाई को ही आदर मिलता है। मगर दुर्भाग्य है कि आज के बहुत से लोग दुर्जन व्यक्तियों को ही पसंद करते हैं किसी ने ठीक ही कहा है।

बसै बुराई जासु तन, ताही को सनमानु,
भलौ भलौ कहि छौड़ियै, खोटे ग्रह जपुदानु॥

मानव की यह प्रवृत्ति एक आदर्श समाज के लिये बड़ी घातक और विनाशकारी है। गोस्वामी श्री तुलसीदास जी कहते हैं-

बरू भल बास नरक कर ताता।
दुष्ट संग नहि देइ विधाता॥

इतिहास में ऐसे कई उदाहरण हैं कि सत्संग के प्रभाव से कई व्यक्तियों ने महानता को प्राप्त किया है। कुख्यात डाकू रत्नाकर श्री नारद जी के संपर्क में आने से महान ऋषि वाल्मीकि बन गए। कामी श्री तुलसीदास जी अपनी पत्नी रत्नावली के संपर्क में आने से श्री राम के एक परम भक्त बन गए। उन्होंने स्वयं अपने शब्दों में कहा है

एक प्रीति रघुनाथ संग, बांध जटा सिर केस।
तुलसी चाखा प्रेमरस, पत्नी के उपदेश॥

श्री रामचरितमानस में लेख है-

बिनु सतसंग बिबेक न होई।
राम कृपा बिनु सुलभ न सोई।
सतसंगत मुद मंगल मूला।

सोई फल सिधि सब साधन फूला॥
 सठ सुधरहिं सतसंगति पाई।
 पारस परस कुधात सुहाई॥
 बिधि बस सुजन कुसंगत परहीं।
 फनि मनि सम निज गुन अनुसरहीं॥

श्री कबीर दास जी भी साधुओं की संगति के बारे में कहते हैं-

कबीरा संगत साध की, हरै और की व्याधि।
 संगत बुरी असाध की, आठौं पहर उपाधि॥

कुसंगत का प्रभाव कैसे पड़ता है, श्री रहीम जी कहते हैं-

कहु रहीम कैसे निभै, बेर केर को संग,
 वे डोलत रस आपने, उनके फाटत अंगा॥

मानव को श्रेष्ठ एवं एक आदर्श मनुष्य बनने के लिये अच्छी संगति की ही परम आवश्यकता होती है कहा भी जाता है कि

जैसा करोगे संग - वैसा चढेगा रंग,
 जैसी मति होती है- वैसी ही गति होती है ॥

सत्संग व्यक्ति को अज्ञान से ज्ञान की ओर, जड़ता से चैतन्यता की ओर, असत्य से सत्य की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर, घृणा से प्रेम की ओर, ईर्ष्या से सौहार्द की ओर तथा अविद्या से विद्या की ओर ले जाता है। कहावत भी है- “संगत ही गुण उपजे, संगति ही गुण जाय” सुसंगति ही सब सुखों का मूल है। श्री तुलसीदास जी कहते हैं-

नहीं दरिद्र सम दुःख जग माही,
 संत मिलन सम सुख जग नाही॥

मोहर में उल्टे अक्षर लिखे रहते हैं। जब इस मोहर को कागज पर लगाते हैं तो वही उल्टे अक्षर सीधे हो जाते हैं। उसी प्रकार हमारे मस्तिष्क में जो दुर्भाग्य के उल्टे अक्षर लिखे रहते हैं, सज्जन एवं सद्गुरुओं के संपर्क में आने से दुर्भाग्य भी सौभाग्य में बदल जाता है। सद्गुरु एवं संतों के बारे में कहा जाता है-

संत न छोड़े सन्तई, चाहे कोटक मिले असंत।
 चन्दन भुवंगा बैठिया, तऊ सीतलता न तजंत॥



भारत एक अविकसित देश नहीं है अपितु अपने इतिहास और सांस्कृतिक विरासत के संदर्भ में पतन की अग्रिम अवस्था में भी एक अत्यधिक विकसित राष्ट्र है।

- शशि थरूर (अपने 'द ग्रेट इंडियन नॉवेल' में)



ग्लोबल वार्मिंग की चेतावनी

श्री देवेंद्र कुमार मिश्रा, लेखापाल

कितने संकट आने वाले हैं, आगामी वर्षों में,
देखो कैसे धरा बचेगी, उन असीम संघर्षों में,
सभी व्यस्त हैं बिना काम की बातों के संपोषण पर,
कोई बात नहीं करता है, पर्यावरण प्रदूषण पर,
एक झलक उसकी दिखलाने का प्रयास करता हूँ मैं,
कुछ निष्ठुर होकर बतलाने का प्रयास करता हूँ मैं,
जो बातें कानों को प्रिय हों, वही कहूँ ये सही नहीं,
आँख मूँदकर सब कुछ सह लूँ, मौन रहूँ ये सही नहीं,
कभी-कभी कुछ बातें हमको, कड़वी कहनी पड़ती हैं,
भरी सभा में सच कहने की हिम्मत करनी पड़ती है,
ऐसा ही मैं एक सत्य, कहने की कोशिश करता हूँ,
आर्त हृदय से भावों में बहने की कोशिश करता हूँ,
कितना लुट चुका, बचा कितना, मैं इसकी थाह कराता हूँ,
वसुधा पर आने वाले संकट से, आगाह कराता हूँ,

करो कल्पना जब वसुधा पर अंतिम बूँद नीर की हो,
कंठ सूखते हों, आँखों में अंतिम झलक पीर की हो,
जब होंठों पर प्यास लगी हो, नदी सरोवर सूखे हों,
जब खेतों में अन्न न हो, और बच्चे अपने भूखे हों,
बागों में केवल टूँठ पेड़, बस सपने में हरियाली हो,
फूलों, फलों और पत्तों के इंतज़ार में डाली हों,
सावन भादों में मेघों से, जब विहीन आकाश रहे,
अधरों पर, आँखों में, मन में, जब बाकी केवल प्यास रहे,
चारों तरफ़ उजाड़ दिखे, और धरती-धरती बंजर हो,
चेहरे बुझे-बुझे दिखते हों, खौफ़नाक सा मंज़र हो,
जलवायु परिवर्तन से, ये धरती जब अंगार बने,
दमा-अस्थमा, त्वचा रोग का रोगी जब संसार बने,

वर्तमान की भारी भूलें, तब शायद हम याद करें,
धरती हरी-भरी करने की, प्रकृति से फ़रियाद करें,
तब हमको आँखों में मोटरसाइकिल, कार दिखायी दे,
सीसों पर पड़ते फ़व्वारों की शायद धार दिखायी दे,
शायद ध्यान चला जाये, उन आधी खुली टोंटियों पर,
जो अतीत में फेंकी थी, कूड़े में पड़ी रोटियों पर,
अंतर्मन जब बोल उठे, हम थोड़ा तो डर सकते थे,
ये साफ़-सफ़ाई फटे पुराने कपड़ों से कर सकते थे,
हरे भरे पेड़ों को हमने काश नहीं काटा होता,
पॉलीथीन, प्लास्टिक को हमने काश नहीं पाटा होता,
काश प्रकृति के लिये हमारे हाथ में खंजर न होता,
तो अपनी धरती पर शायद ऐसा मंज़र न होता,
माना कि महज़ कल्पना है, पर ये दिन दूर नहीं है अब,
हमको और क्षमा करने को, प्रकृति मजबूर नहीं है अब,
वैश्विक तापमान बढ़ने का, कुछ आभास अभी से है,
महासागरों के उठने का, कुछ आभास अभी से है,
इस तापमान की वृद्धि को, गर अभी नहीं रोका हमने,
पेड़ काटने वालों को, गर अभी नहीं टोका हमने,
पानी व्यर्थ बहाने की, गर अनदेखी अब हमने की,
पर्यावरण प्रदूषण की, गर अनदेखी अब हमने की,
अगर नहीं रोका हमने, अब बढ़ने से आबादी को,
शायद नहीं बचा पायें हम, खुद अपनी बर्बादी को,
जितना उपलब्ध धरा पर हैं, सारे संसाधन सीमित हैं,
भोजन, हवा, साफ़ पानी, ये सारे साधन सीमित हैं,
सोचो क्या उपहार भला देंगे, हम आने वाली पीढ़ी को,
इंच-इंच हम काट रहे, उनके हिस्से की सीढ़ी को,
रोज़ कुल्हाड़ी मार रहे हैं, खुद अपने ही पाँवों पर,
नमक छिड़कते हैं खुद ही हम, देखो अपने घावों पर,
दूर नहीं होगा ये सब, केवल पेरिस के न्यौतो से,
वियना, मांट्रियल, क्योटो, कोपेनहेगन समझौतों से,
अगर चाहते हैं हम सब, परिवेश हमारा शुद्ध रहे,

धरती भी रहने लायक हो, और प्रदूषण अवरुद्ध रहे,
तो पर्यावरण बचाने का, हम महायज्ञ प्रारंभ करें,
नीर बचाना, पेड़ लगाना, प्रत्येक व्यक्ति आरंभ करे,
नहीं रहें केवल निर्भर हम, देशों के आमेलन पर,
सहमति बनती नहीं आजकल, बड़े-बड़े सम्मेलन पर,
आकाश नहीं, पाताल नहीं, इसकी शुरुआत जमीं से हो,
अब देश नहीं, परदेश नहीं, इसकी शुरुआत हमीं से हो,
माना हमने कुछ खोया है, पर अब भी शेष बहुत कुछ है,
जो चला गया छोड़ो उसको, अब भी अवशेष बहुत कुछ है,
माना कुछ देर हुई हमसे, माना संकट ने घेरा है,
अपना कर्तव्य निभाने को, जब जागो तभी सवेरा है।



धुआँ - धुआँ

सुश्री ज्योत सिंह
अतिथि रचनाकार

धुआँ – धुआँ हर जगह, कभी अंधेरा कभी उजाला
सिक्के के दो पहलू, यहीं है सृष्टि की धारा
देखूँ धुआँ तो डर लगे, पर उजाला देखूँ तो मन खिले
हवा सा बहता ये धुआँ, कहूँ हवा के साथ बहता धुआँ
कभी रोके सोच को और कभी दिखाए आईना
ये तो निर्भर है हम पर, कि माने किसका क्या मायना
माना है सिक्के के दो पहलू, पर क्यूँ ना देखे हमेशा उजाला
धुआँ – धुआँ है हर जगह, कभी अंधेरा कभी उजाला
चुन लो सिक्के का एक पहलू और वो है हमेशा उजाला ॥



अंतर्मन

श्री कृष्ण कुमार जांगिड़,
सहायक लेखा अधिकारी

सभी देखते तू दिखता कैसा, अंदर कैसा, किसे पड़ी है
अंतर्द्वंद्व में तू भी उलझा,
कहां ये आसान घड़ी है,
दो-दो जान समाए अंदर,
कौन-सा तू है, कौन जमाना,
आज फैसला करने को ये दोनों रूहें लड़ पड़ी हैं
तू जीते तो किसे पड़ी है,
जग जीते मुश्किल बड़ी है,
सभी देखते तू दिखता कैसा, अंदर कैसा, किसे पड़ी है।

जीवन में तू आगे बढ़ता,
अपनी धुन में गाता जा,
जो भी मिले, उसे गले लगा तू,
प्यार की आखिर किसे पड़ी है,
सभी देखते तू दिखता कैसा, अंदर कैसा, किसे पड़ी है।
जीवन की इस जंग में,
अपनी पहचान बड़ी है,
जो भी हो, तू खुदा का बंदा,
अपनी राह कठिन बड़ी है,
अपने आप को खोजता जा,
तुझे समझने की किसे पड़ी है,
सभी देखते तू दिखता कैसा, अंदर कैसा, किसे पड़ी है।



हिंदी से पहचान हमारी

श्री सूर्यकांत भारद्वाज
सहायक लेखा अधिकारी

हिंदी से पहचान हमारी, हिंदी का तुम मान करो
हिंद देश के हिंद जवानों हिंदी का सम्मान करो ।

हिंदी के कारण ही तो यह भारत हिंदुस्तान बना,
हिंदी विद्वानों के दम पर देश ये विश्व महान बना ।

हिंदी माँ के बेटे हो तुम, झुका शीश प्रणाम करो
हिंद देश के हिंद जवानों हिंदी का सम्मान करो ।

माँ का 'मदर', पिता का 'फादर', बहन का 'सिस्टर' हो गया,
पत्नी हो गयी 'मिसेज' और पति अब 'मिस्टर' हो गया,
इस 'मिस मिसेज मिस्टर' की जगह श्रीमती और श्रीमान करो
हिंद देश के हिंद जवानों हिंदी का सम्मान करो ।

विद्या का मंदिर भी अब तो 'कॉलेज' और 'स्कूल' बना
विद्वान हुआ है 'स्कोलर' और बेवकूफ अब 'फूल' बना
करो 'मैथ्स' को फिर से गणित, 'साइंस' को विज्ञान करो
हिंद देश के हिंद जवानों हिंदी का सम्मान करो ।

अंग्रेजी को विषयमात्र और हिंदी को अनिवार्य करो
हिंदी को अपनाकर पूर्णतः भारत का उत्थान करो
आओ मिल कर सभी फिर से यह आह्वान करो
ऐ हिंद देश के हिंद जवानों हिंदी का सम्मान करो ॥



तुम

श्री रूपेंद्र कौशल
कनिष्ठ अनुवादक

कौन हो तुम, क्या हो तुम?

भोर की पहली “किरण” हो तुम

तुम ही मेरी सुबह की “पूजा”,

तुम ही मेरी शाम की “वंदना” हो तुम।

तुम ही मेरी “उषा”,

तुम ही मेरी यादों की “स्मृति” हो तुम।

तुम ही मेरी कलम की “सुलेखा”

तुम ही मेरी ड्राफ्टर की “रेखा” हो तुम।

तुम ही मेरी साँझ की “लालिमा”

तुम ही मेरी सपनों की “रजनी” हो तुम।

तुम ही मेरी “कविता”

तुम ही मेरी “रचना” हो तुम।

तुम ही मेरी ख्यालों की “कल्पना”

तुम ही मेरी हाथों की “अल्पना” हो तुम।

आखिर कौन हो “तुम”?

तुम ही मेरे जीवन की “ज्योति”

तुम ही मेरे मन की “आराध्या” तुम।

तुम ही इस कविता का आधार हो,

तुम ही मेरी “प्रिया” हो,

हां, तुम ही मेरा प्यार हो “तुम”।



दुर्भाग्य

श्री गौरव कुमार पाण्डेय
सहायक लेखा अधिकारी

एक अनजान सड़क, कुछ अनजान लोग,
मैं देखकर उन्हें बस यूहीं गुजर रहा था।
थोड़ा अजीब सा था माहौल, एकदम नया सा
लोग देख मुझे मुंह फेरे खड़े थे।
बिलबिलाए कुत्ते और पागल सियार
गुर्राते हुए राह रोके खड़े थे।
कड़कड़ाती बिजलियां, मानो मेरे ऊपर गिरने को बेताब
विधाता के आदेश को लालायित खड़ी थीं।
विधाता की नियति भी, मुझे राम का पात्र दे
नई रामायण लिखने के मत में थी।
शायद चौदह वर्षों का वनवास उसे कम लगता था
तभी पासों के रण को घूत भवन सजा था।
निराशा, विपत्ति और तिरस्कार दरबार में ओजस्वी लगते थे
वही विश्वास, साहस और धैर्य ओजहीन हुए मुझे देखते थे।
गणिकाओं को वेदपाठ एवं वृहन्नलाओं का मंत्रोच्चार
मेरी नियति का फैसला करते हुए दिखते थे।
आकाश पीब और लहू बरसाकर मेरा राज्याभिषेक कर रहा था
देव दानवों से पृथक बना मैं, स्वयं दुर्भाग्य बन वहाँ खड़ा था।
किसी उरग के कराल विष से एक झष की भांति उद्विग्न रहा मैं
संपूर्ण विश्व, हर कालखंड में, नित नए रूप में अवतरित हुआ था।
कभी घूत सभा में भीष्म हुआ तो कभी दुशासन का भुजबल रहा था

पांचाली पर जब आक्षेप हुए, मैं कर्ण की जिह्वा का बल था।
दुर्योधन की जंचा था मैं, द्रोण का अशोभनीय मौन भी था,
कुरुक्षेत्र के भीषण रण में भी, उस मृत्यु का सारथी भी मैं था।
मेदिनी ने काल बनकर, रुधिर के पंक में रथ चक्र को जकड़कर
माधव को राधेय वध को प्रेरित किया था, मैं, हाँ मैं तब वासुदेव की जिह्वा बना था।

विजय धनुष रहित उस राधेय पर क्रुद्ध होकर, धनंजय ने
कायरता की हर सीमा को लांघकर, जब कराल विशिख संधान किए थे।

मैं भी तब वहीं था उस कृत्य का दर्शक बना था

क्षुधा से क्षुब्ध हो, खर्पर लिए उसके रुधिर को

मैं काल से भी दो पग आगे खड़ा था।

अनेकों भर्त्सना, अनगिनत श्राप देकर

एक दिवस ब्रह्मा ने मुझ पर दया कर

क्षणिक सौभाग्य फिर दुर्भाग्य का वर देकर

मुझे पृथा की गोद में पुनः स्थापित किया था।

वहाँ चहुँओर घोर अंधकार का नशा

मुझे मानो मदहोश सा करने लगा था।

एक क्षण को मानो एक श्वेत सुंदरी आती

मुझे अपने साथ आने को फुसलाती

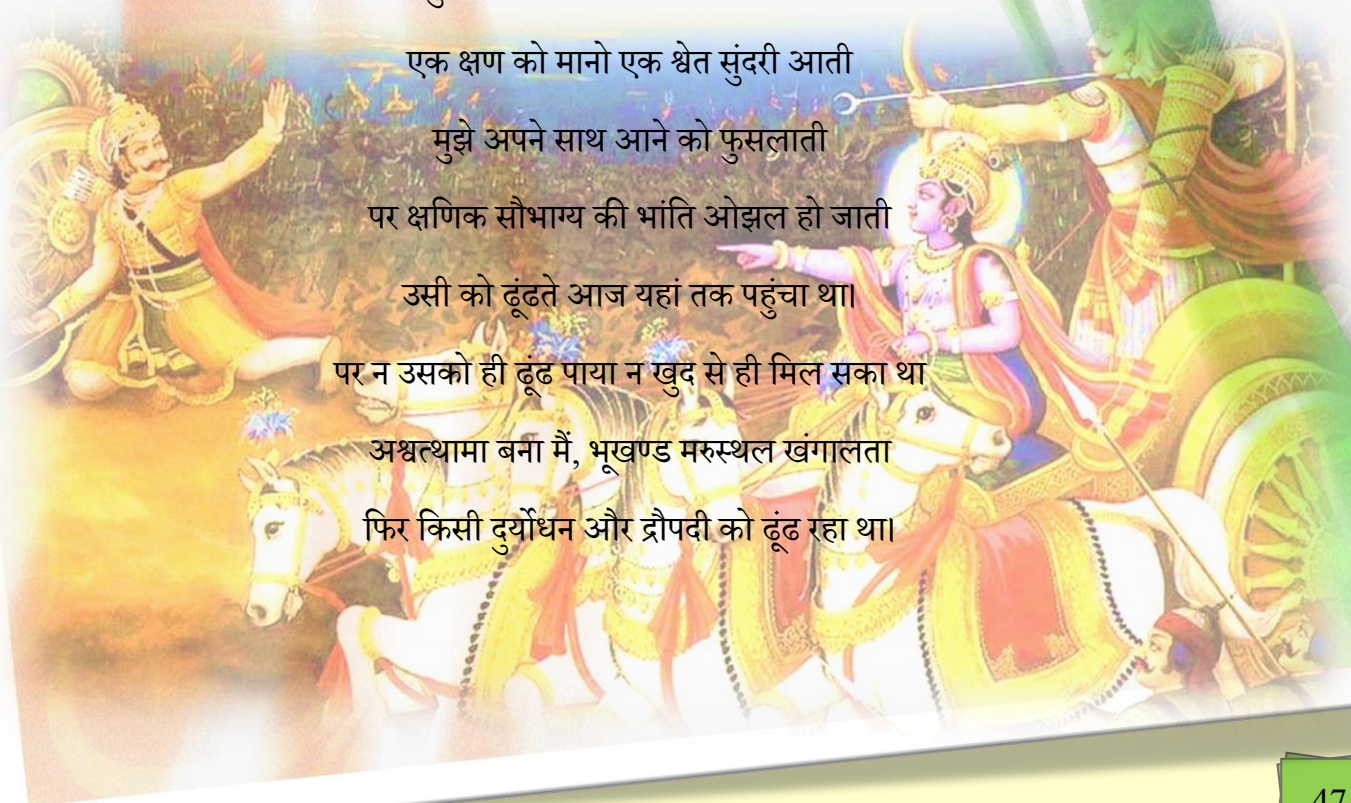
पर क्षणिक सौभाग्य की भांति ओझल हो जाती

उसी को ढूँढते आज यहां तक पहुंचा था।

पर न उसको ही ढूँढ पाया न खुद से ही मिल सका था

अश्वत्थामा बना मैं, भूखण्ड मरुस्थल खंगालता

फिर किसी दुर्योधन और द्रौपदी को ढूँढ रहा था।





चरित्रहीन

श्री राहुल मैत्रेय
वरिष्ठ लेखापाल

दहलीज पार करके एक औरत,
जब अपनी मर्यादा को लांघकर,
एक पुरुष के प्रेम में पड़ती है!
तो वो समाज की नजरों में
चरित्रहीन कहलाती है।
ता-उम्र एक जायज रिश्ते में,
जब उसे प्रेम नहीं मिलता।
तब थाम लेती है वो,
उस अनजान पुरुष का हाथ!
वो अनायास ही दौड़ पड़ती है
उस अनछुए पहलू के पास
और! सिमट जाती है उसमें।
जो उसे मुस्कराना सिखाता है,
उसे जीना सिखाता है और!
खुद से प्यार करना सिखाता है।
अपनी हर जिम्मेदारी को निभाते हुए
अगर वो खुद से प्रेम करती है।
तो वो चरित्रहीन कैसे हुई?
अगर हक है पुरुष को
मोहब्बत करने का तो
औरत को क्यों नहीं?
क्या खुश रहना
चरित्रहीनता की निशानी है?



हाशिये पर बैठी हूँ...

सुश्री ब्यूटी अंकिता
अतिथि रचनाकार

हाशिये पर बैठी हूँ ...
ऐ लहर बहा ले जा
मिला खुद से कुछ यूँ मुझे
तेरा नीला रंग मिला
हो जाऊँ नीली नीलम सी
पता न चले
कौन किसमें मिला
मिल मुझमें, रुतबा मिला
अपने दिल का मलबा मिला
खामोशी मिला, शोर मिला
उगते सूरज का भोर मिला
मिला थोड़ा नमक भी मुझमें
खारा एक मंजर मिला
धीमी-धीमी साज का
सुरमई खंजर मिला
गीला गिला मिटा कर
बीता हुआ कल मिला
नए पल को पलकों पर सजा
आने वाला पल मिला
मैं तुझे मिला तू मुझे मिला
छू मुझे, घोल खुद में
देख मेरा तन जाये घुला
मिला जुला फिर घुला-घुला
अपने मैं का मय पिला
हाशिये पर बैठी हूँ ...
ऐ लहर बहा ले जा ...





म्हारो राजस्थान

श्रीमती वंदना अग्रवाल
पत्नी श्री विवेक सिंघल, लेखापाल

राजस्थान की धरती, वीरों की भूमि,
जहाँ गूंजती है वीरता की कहानी।
जोधपुर, जयपुर, उदयपुर की गलियाँ,
रंग-बिरंगी चौकों में छुपी है जीवन की बखानी।

राजस्थान की धरती, वीरों की भूमि,
जहाँ गूंजती है वीरता की कहानी।
रंग-बिरंगे शहरों की ये गलियाँ,
जीवन की खूबसूरती का करती हैं बखानी।

राजस्थान की संस्कृति, अपनी अद्वितीयता का प्रतीक,
घूमर, कलबेलिया, भावई नृत्यों का अनूठा संगीत।
बंदनी, लहरिया, संगानेरी, और बागरू ब्लॉक प्रिंट की चिट्ठी,
वस्त्रों में छुपी है राजस्थान की अनोखी मिट्टी।

राजस्थान की धरती, वीरों की भूमि,
जहाँ गूंजती है वीरता की कहानी।
रंग-बिरंगे शहरों की ये गलियाँ,
जीवन की खूबसूरती का करती हैं बखानी।

जैसलमेर की रेत में छुपी है सपनों की शान,
बीकानेर की बाड़ी में गूंजती हैं राजपूतों की आना।
कोटा के किले में बजती है शौर्य की शहनाई,
अजमेर की दरगाह में गूंजती है भक्ति की वाणी।

बाड़मेर की बाड़ी में बजती है वीरता की ताल,
भीलवाड़ा की बगिया में खिलती है जीवन की भाल।
अलवर की आवाज़ में गूंजती है आज़ादी की पुकार,
बरान की बगिया में खिलती है जीवन की बहार।

दाल-बाटी-चूरमा, गट्टे की सब्जी, केर-संगरी,
स्वादिष्ट हैं अद्वितीय व्यंजन राजस्थानी
मेवाड़ी, मारवाड़ी, ढाकाड़ी, ढोली,
भाषाओं में छुपी है राजस्थान की विविधता की कहानी।

“ ऐसो है म्हारो राजस्थान ॥”



स्त्री

श्रीमती रंजना ठाकुर
अतिथि रचनाकार

स्त्री हैं तो क्या?
अब और हम नहीं सहेंगे!!
बेतुकी अनुचित बातों का
बोझ वहन अब नहीं करेंगे!!
तोड़ देंगे उन जंजीरों को
जिसने बांध रखा है हमको!!
छोड़ देंगे उन दहलीजों को
जिसने कैद किया है हमको!!

हमने लाज ओढ़ी थी लेकिन
तुमने दुपट्टा खींच लिया!!
गले का फंदा बनेगा वो
जिस आंचल को तार- तार किया!!
औरत है ममता की मूरत
प्रेम -भाव से सिंचित उपवन!!
कोमल -सौम्य- स्निग्ध- मनोरम
धैर्य -धर्म का अनुपम संगम!!

बेबसी का मुद्दा बहुत हो गया
अब ताकत को आजमायेंगे!!
लाचारी का पाठ छोड़ कर
हिम्मत का ध्वज फहरायेंगे !!
गलतफहमियां तुम मत पालो
औरत केवल मादकता है!!
तुम्हारी नजरों में वो शायद
भाव-भंगिमा-कामुकता है!!

मत छोड़ो तुम स्वाभिमान को
छिन्न-भिन्न तब हो जाओगे!!
दुर्गा- काली रूप धरे तो
प्राण बचाते फिर भागोगे!!
औरत की गरिमा को समझो
रखो श्रद्धा -स्नेह- सखा-सम
तिरस्कार अपराध तुम्हारा
नहीं चलेगा समस्त जीवन !!



कविताएं

श्री आविद खान
एम. टी. एस.

तनहाई

वो उम्र-भर सितम करके दर्द देते रहे,
कभी हंसाते तो कभी सलाते रहे।
महफिल-ए-गुलिस्तां में भी हम,
दर्द-ए-गम के आंसू बहाते रहे।
हर खुशी जिंदगी से रवां हो गई,
फिर भी तेरे गीत गुनगुनाते रहे।
अशक आए अंजन में बहुत मेरे,
फिर भी चाहत की दुनिया बसाते रहे।
थामा था दामन तूने उम्र भर के लिए,
फिर छोड़ तन्हा हमें क्यूं रुलाते रहे।
तुम बिन जीना मेरा मुश्किल हुआ,
फिर भी सदा मुस्कराते रहे।
चला था काफिला जो बड़े प्यार से,
किसको मालूम था ये डगर है कठिन,
वीरानियां हर तरफ थी मेरे,
ठोकरें दर-ब-दर हम यूं खाते रहे।
दे दिया दर्द उम्र भर के लिए,
खुद तो जाते हुए मुस्कराते रहे,
हम तो अशकों के मोती बहाते रहे।

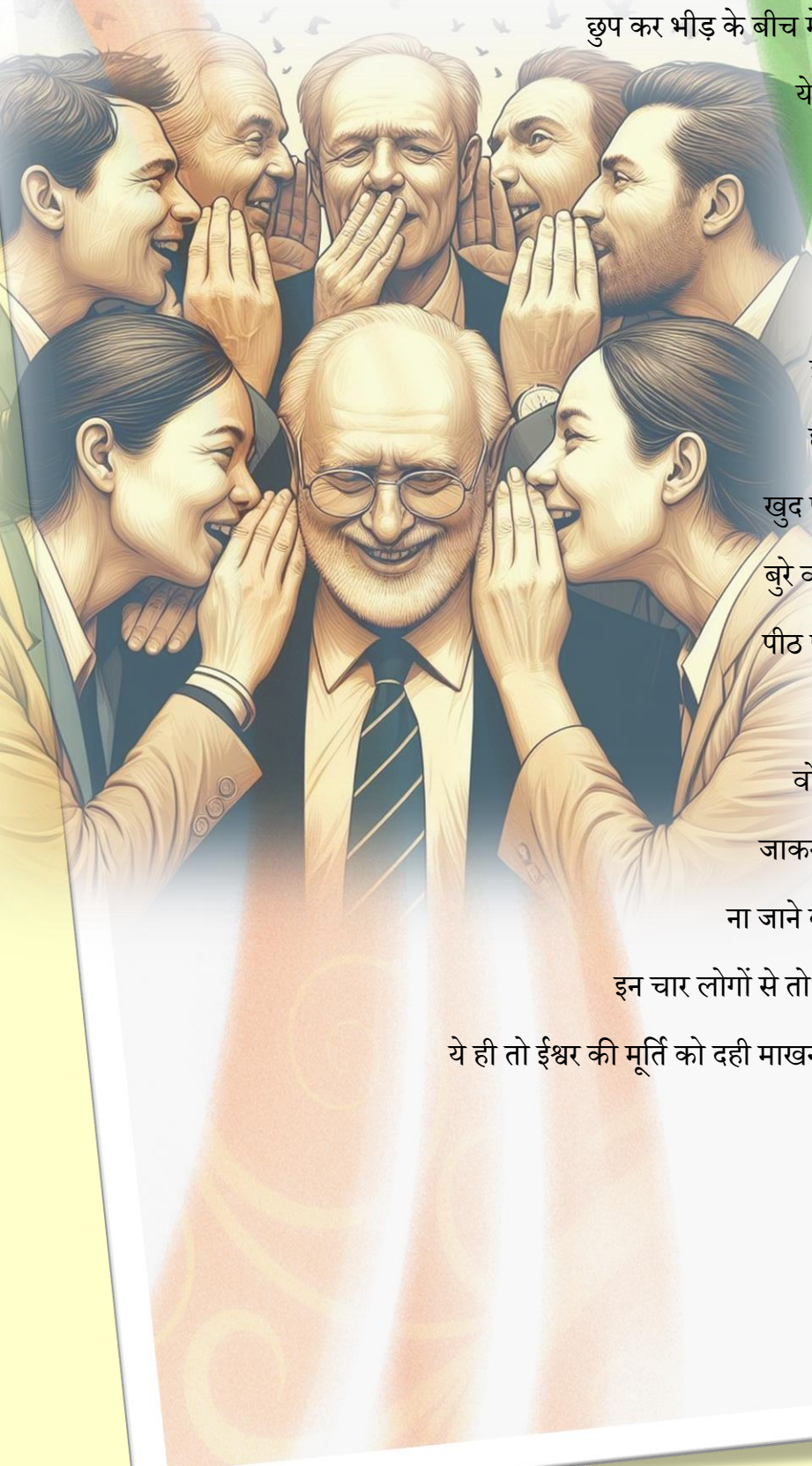
मेरी माँ

मेरी माँ, मेरे लिए ईश्वर की सबसे अद्भुत रचना है,
मेरी माँ संसार रूपी सागर में मेरी सबसे मजबूत नौका है,
मेरी माँ का दूध, उसका दिया भोजन और मधुर स्पर्श,
मेरे सुख और स्वास्थ्य का आधार है।
मेरी माँ मेरे बचपन से बुढ़ापे तक साथ रहने वाली सच्ची दुआ है
मेरी माँ प्रेम का शुद्धतम रूप है,
इसका कोई विकल्प नहीं है,
मेरी माँ से अधिक कोई विश्वसनीय नहीं है।
मेरी माँ मेरी सफलता में सच्ची खुशी
और विफलता में सच्ची हमदर्दी का नाम है।
मेरी माँ के पास मेरी भावनाओं को
समझने वाला अद्वितीय मनोविज्ञान है।
मेरी माँ जीवन की सबसे अनमोल चीजें मुझे देकर भी
बदले में कुछ नहीं चाहती,
वह तो निष्काम भाव, त्याग और बलिदान का
सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है।
मेरी माँ का प्यार और उसकी फटकार,
दोनों ही अमृत के समान है।
माँ की सेवा करना मेरा परम कर्तव्य है,
जिस पर मुझे अभिमान है।



चार लोग

श्री रूपेंद्र कौशल
कनिष्ठ अनुवादक



छुप कर भीड़ के बीच में, ये सबके कान भरते हैं।

ये चार लोग तो ईश्वर से भी नहीं डरते हैं।

भागी हो बेटी किसी की,

या किसी की बीवी हो झगड़ी।

घरवालों को खबर हो ना हो,

इन चार लोगों को खबर होती है तगड़ी।

हम पर गुजरे तो, तौबा-तौबा करते हैं।

खुद पर जो आन पड़े, बन बेचारे आहें भरते हैं।

बुरे वक्त में बन शुभचिंतक, खूब सलाहें देते हैं।

पीठ पीछे हंस हंसकर, खूब चटकारे भी लेते हैं।

सामने बैठ कर हमारे

वो हमारी खूब सराहना करते हैं।

जाकर फिर वो भीड़ में,

ना जाने क्या-क्या कहानियाँ गढ़ते हैं।

इन चार लोगों से तो शायद ईश्वर भी डरते हैं।

ये ही तो ईश्वर की मूर्ति को दही माखन खिलाया करते हैं।



जीवन की यह गंगा धारा !

डॉ. ईश्वरचंद्र रामचंद्र करकरे
अतिथि रचनाकार

यह धरती है इक फुलवारी
फूल यहाँ पर कुछ कांटे हैं
किसी किसी ने सुख साधे हैं
किसी किसी ने दुख बाँटे हैं।

परिस्थिति जिनकी अच्छी हैं
कभी नहीं कुछ कर पाते
जो जीवन संघर्ष कर रहे
वही हाथ कुछ धर पाते!

किसी-किसी ने बात टाल दी
किसी-किसी ने जानी
कहीं कीच में कमल खिले हैं
तो पाथर में पानी !

बादल बरसे कभी-कभी पर
बरखा ऋतु यह सावन लाए
मोर पपीहा गुंजन करते
बिरहन को ना सावन भाए!

पावस की है ऋतु जो आई
छाई हैं घनघोर घटाएँ
दूर गगन में क्षितिज जहाँ पर
दिखती हैं कुछ लाल छँटाएँ!

इस दुनिया का रंग निराला
कुछ जाने अनजाने हैं
देश धर्म पर जो मर मिटते
उनके अलग तराने हैं!

जीवन रेखा साँझ समाना
इस पथ आना उस पथ जाना
धूसर धुँधली धुँधली रेखा
कल किसने है मरण को देखा !

कभी आसमाँ नीला-नीला
कभी क्षितिज यह लाल हो रहा
आने जाने के इस पथ को
सदियों से यह काल ढो रहा !

जीवन की यह गंगा धारा
जिस पथ आए चले चलो तुम
बाहर चाहे जो भी होवे
अपने अंतः को खोजो तुम !



हिसाब

श्रीमती रंजना ठाकुर
अतिथि रचनाकार

महफ़िल से उठकर चल दिए
अब मुड़कर देखना कैसा
दिल और कहीं लगायेंगे
ऐसा दिल जनाब रखते हैं!

होती हैं कुछ शिकायतें
पर जाहिर नहीं करते कभी
हाँ, आपकी हर गिला का
मुकम्मल जवाब रखते हैं!

बेसबब-सी जिंदगी
होती है किसी और की
हम तो अपनी जिंदगी
बस, लाजवाब रखते हैं!

खुशियाँ किसी के साथ
हर घड़ी नहीं होती
अपने हर हाल को
हम बेमिसाल रखते हैं!

गुलशन में खिले हर गुल से
अपनी यारी कमाल की है
कांटे भी हैं खुशबू से भरे
ऐसा गुलाब रखते हैं!

आजमाया है हमने बहुत
दर्द को, बदगुमानी को
पर हमसे जीत मुश्किल है
ऐसा मिज़ाज रखते हैं!

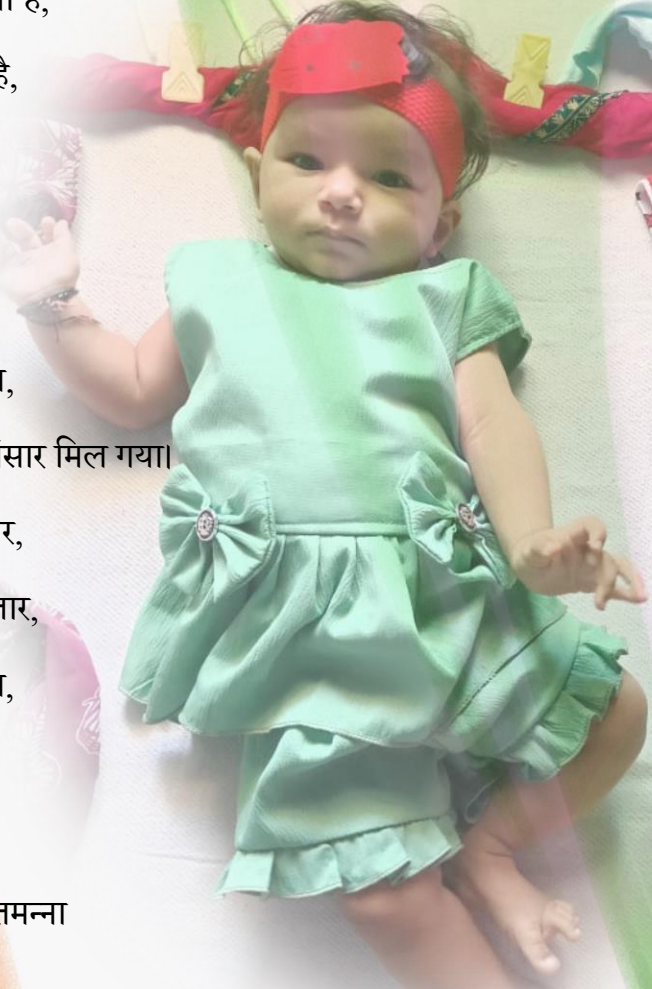
ना शोहरत ना दौलत
ना ही जन्नत का शौक है
हर दिल अजीज बन पाऊँ
ये छोटा-सा ख्वाब रखते हैं!!



बिटिया

श्री विवेक सिंघल
लेखापाल

बिटिया, तुम्हारी मुस्कान की कीमती चमक,
सूरज की पहली किरण, जैसे सब को जगा देती है,
तुम्हारी हंसी का जादू, दिलों को बहला देती है,
तुम्हारी मुस्कुराहट, हमें खुशी देती है।
तुम्हारे आने से, घर खुशियों से भर गया,
हर पल, हर क्षण, तुमसे ही प्यारा हो गया।
तुम्हारी मासूमियत से, हर दुःख पराया हो गया,
तुम्हारे साथ बिताए हर पल में, खुशियों का संसार मिल गया।
तुम्हारी खुशी के लिए, कुछ भी करने को तैयार,
तुम्हारे हर सपने को, पूरा करने का हमें है इंतजार,
तुम हो हमारी जिंदगी, तुम हो हमारी धूप-छाँव,
तुमसे ही मिलती हैं हमें, खुशियों की सौगात
हमेशा मुस्कुराती रहो, ऐसी हैं हमारी कामना,
तुम्हारे हर ख्वाब सच हो, बस यही है हमारी तमन्ना
तुम्हें मिले संसार की सारी खुशियाँ,
क्योंकि बिटिया,
तुम से ही है अब हमारी सारी दुनिया ॥





कानपुर

सुश्री सुष्मिता श्रीवास्तव
आशुलिपिक

कानपुर की गलियों में, बचपन की यादें बसी हैं,
मिट्टी की सुगंध में, प्यार की मिठास घुली है।

गंगा के किनारे, लहरों का खेल देख,
मन होता है वहीं, समय से परे रेत।

स्वतंत्रता संग्राम में, कानपुर का योगदान,
हमेशा हमें याद रहेगा, ऐसा है प्रमाण।

हरीश चंद्र, प्रेमचंद, गणेश शंकर विद्यार्थी,
कानपुर की संस्कृति, साहित्य में है सारथी।

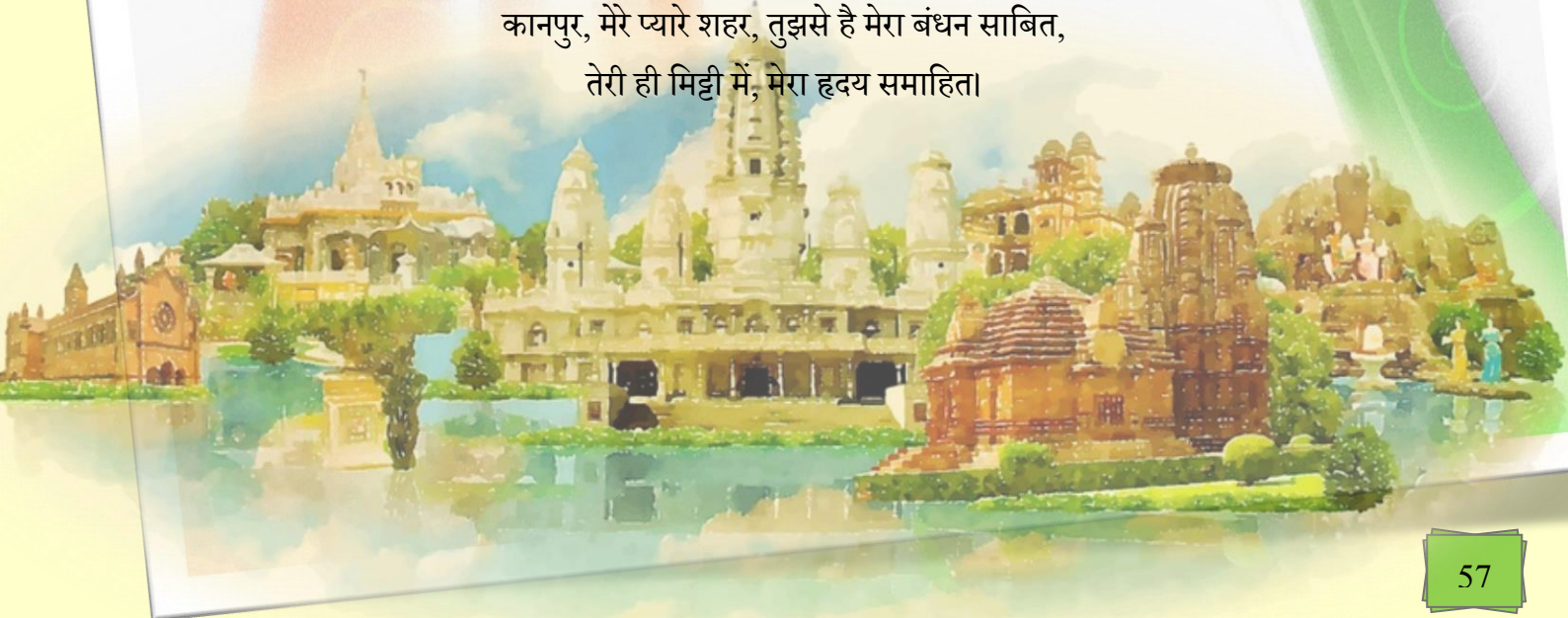
कानपुर की हरियाली, सोने की चिड़िया का स्वप्न,
हमेशा हमें प्रेरित करती, हमें बनाती सप्तर्षि सज्जन।

कानपुर के महलों में, इतिहास की महकी है,
समय के पन्नों पर, उनकी महिमा अनोखी है।

कानपुर के उद्योगों में, प्रगति की धुन है,
निरन्तर प्रयासों से, समृद्धि की चुनौती है।

कानपुर की प्रतिभाओं में, सपनों की उड़ान है,
स्वतंत्रता, सम्मान, समर्पण की पहचान है।

कानपुर, मेरे प्यारे शहर, तुझसे है मेरा बंधन साबित,
तेरी ही मिट्टी में, मेरा हृदय समाहित।





कामकाज

श्री सितांबर हाँसदा
वरिष्ठ लेखापाल

मेरे काम की मेज पर, मैं हूँ बहुत साफ-सुथरा बैठा,
कागजों और अव्यवस्थित फाइलों के बीच पैठा।
बाईं ओर फाइलें, दाईं ओर कॉफी,
सारे दिन काम करना,
सुबह से रात नहीं होती छोटी।
यहाँ एक कागज, वहाँ एक स्टेपलर,
अपनी पहिए वाली कुर्सी में, मैं जाता हूँ पसर,
लैटर्स आ रहे हैं, प्रिंटर गुर्ग रहा है,
देखो, मेरे साथ वाला साथी गाना गुनगुना रहा है,
दोपहर के भोजन का समय है और पेट कांप रहा है,
बराबर वाले खाली कमरे में, हर कोई इकट्ठा हो रहा है।
गपशप यहाँ, हँसी वहाँ,
काम के चक्कर से राहत कहाँ।
वापस मेरी सीट पर, मैं इस अचकन में फंसा,
रात शुरू हो गई, पर अभी भी छह नहीं बजा,
एक मुस्कान के साथ मैं काम करता हूँ,
मेरी विनम्र जबान में,
अभी और काम है बचा मेरे सामान में,
बस इसी तरह ऑफिस में दिन गुजरता है,
इस काम पर कहां किसी का वश चलता है।



पेंशन

श्री विद्या प्रकाश
सहायक लेखा अधिकारी

पेंशन आई, खुशी मनाई,
जीवन की नई कहानी लिखाई।

सुबह की चाय, बिना किसी वाया,
अब हम पर नहीं पाबंदी का साया।

नौकरी की चिंता, अब हमसे दूर,
पेंशन का मज़ा, लेना है जरूर।

नहीं कोई मीटिंग, नहीं कोई डेडलाइन,
सिर्फ आराम है, और खुशियों की लाइन।

पेंशन की दुनिया, होती है खाली,
हर पल मनाते हैं, जैसे हो हर दिन दीवाली।

पेंशन का दिन, फिर है आया,
खुशियों की बरसात हो जैसे भाया।

कोई काम नहीं, कोई फाइल नहीं और कोई भाग दौड़ नहीं,
अब सहकर्मियों के साथ मस्ती वाली खुशियों की बहार नहीं।
बॉस की पुकार नहीं और फटकार नहीं, पगार कटने की चीत्कार नहीं।

नौकरी के दिन, अब हमने छोड़े,
पेंशन के साथ, नया सफर मोड़े।

सुबह की सैर, शाम की चाय,
पेंशन का ज़माना, सच में है भाया।

हमने सोचा, पेंशन होगी सुनसान,
पर मिला खुशियों का एक नया फरमान।

पर क्या पेंशन वाकई में मिलेगी?
खुशियों की यह गठरी कब सजेगी?



बिल

श्री गौरव गुप्ता
वरिष्ठ लेखापाल

बिल पास हुआ, खुशी का नहीं कोई ठिकाना,
जैसे मिल गया हो, कोई अनमोल खजाना।

कागज के टुकड़े, स्टैंप की मुहर,
बिल पास होने पर, होती है खुशियों की लहर।

लेखा-जोखा, हिसाब-किताब,
सब कुछ होता है, बिल पास करने के बाद।

बिल का हिसाब, किताब का लेखा,
बिल पास करने में खिंचती हैं कई रेखा।

सरकारी दफ्तर, फाइलों का ढेर,
बिल पास होने पर, मन हो जाता है सवा सेरा।

सोचते हैं, क्या होता अगर,
बिल पास नहीं होता, तो क्या होता माजरा?
फिर तो सामने वाली सीट भी लगती है आगरा।

पर खुशी की बात, बिल पास हुआ,
मन में खुली, खुशियों की सराहना।





हिंदी

डॉ. ईश्वरचंद्र रामचंद्र करकरे
अतिथि रचनाकार

राष्ट्र का सम्मान है हिंदी
भारत माँ की शान है हिंदी
हिंदी का यशगान करो तुम
हिंदी का गुणगान करो !

तरुणों की ललकार है हिंदी
गीतों की झंकार है हिंदी
हिंदी का यशगान करो तुम
हिंदी का गुणगान करो !

भारत माँ के माथे की बिंदी
संस्कृति की संवाहक हिंदी
हिंदी का यशगान करो तुम
हिंदी का गुणगान करो !

वेदना की परिचायक हिंदी
संवेदना की सांत्वना की संवाहक हिंदी
हिंदी का यशगान करो तुम
हिंदी का गुणगान करो !

गोरी अंग्रेजी व्यापारी
क्यों सिर पे बिठाए बैठे हो
झूठी ऐसी शान लिए तुम
व्यर्थ में ऐसे ऐंठे हो
उठो-उठो हिंदी के पुत्रों
माता का यशगान करो तुम,
हिंदी का यशगान करो तुम
हिंदी का गुणगान करो !



कविता

श्री मदनगोपाल शर्मा
सेवा निवृत्त वरिष्ठ लेखापाल

झुक नहीं सकता

यह सिर कभी झुक नहीं सकता,
काफिला चल पड़ा है रुक नहीं सकता ।
कोई कुछ भी कहे कुछ भी समझे,
मैं किसी के कहने पर बहक नहीं सकता ।
मेरी सोच अपने आप में निराली है,
लोगों के भड़काने पर भड़क नहीं सकता ।
समय और परिस्थितियों की बात छोड़िए,
मैं स्वार्थ के लिए कभी बिक नहीं सकता ।
सियासत से दूर का रिश्ता नहीं,
अनवरत चल कर थक नहीं सकता ।

मनमानी

यह तो सचमुच मनमानी है,
खुल्लम खुल्ला शैतानी है ।
माना कहने की आजादी है,
कुछ भी बकबक तूफानी है ।
बुद्धि विवेक सब खो बैठे हैं,
ना अब आंखों में पानी है ।
शर्म लिहाज भूल गए हम,
बेहद कड़वी वाणी है ।
अड़ना, लड़ना और बहकना,
शायद सब पर भारी है ।





गज़ल

श्री ए.एच. खान

सेवा निवृत्त सहायक पर्यवेक्षक

एतबार मत करना

कभी किसी से प्यार मत करना,
इस दिल को बेकरार मत करना।
बेदर्द है जमाना एतबार मत करना,
तुम किसी से इकरार मत करना।
नेक काम में कभी देर मत करना,
तुम किसी से कभी तकरार मत करना।
बेरहम लोगों से कभी उम्मीद मत करना,
लोगों की बातों पर भरोसा मत करना।
खूब समझ लिया हमने सबको “हफीज़”
सिवा खुदा के किसी पर एतबार मत करना।

बेमिसाल

हां, मुझे तेरा इंतजार है,
हां, ये दिल बेकरार है,
हां, तुझपे एतबार है,
हां, मुझे तुझसे इकरार है,
हां, तू ही मेरे तसव्वुर में है,
हां, तू ही मेरा हमराज है,
हां, तू ही मेरा ग़म-गुसार है,
हां, तू ही मेरा करार है,
हां, तू ही मेरा चैन-सुकून है,
हां, तू ही मेरा गुलशन-ए-बहार है,
हां, तू ही मेरी निगाह में है “हफीज़”
हां, ए खुदा तू ही सानी, बेमिसाल है।

हिंदी पखवाड़ा – 2023

14 सितंबर 1949 को संविधान सभा में हिंदी को राजभाषा के रूप में अपनाया गया। राजभाषा के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए पहली बार 14 सितंबर 1953 को हिंदी दिवस मनाया गया और तभी से विभिन्न सरकारी संस्थानों में सितंबर मास हिंदी दिवस/सप्ताह/पखवाड़ा/मास मनाया जाता है। इसी क्रम में कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) – द्वितीय, मध्य प्रदेश, ग्वालियर में भी प्रत्येक वर्ष हिंदी पखवाड़े का आयोजन उत्साहपूर्वक किया जाता है।

राजभाषा विभाग द्वारा निर्देशानुसार हिंदी पखवाड़ा 2023 का शुभारंभ 14-15 सितंबर 2023 (हिंदी दिवस एवं तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन) को पुणे, महाराष्ट्र से हुआ। इस अवसर पर कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) – द्वितीय, मध्य प्रदेश, ग्वालियर के राजभाषा कर्मी भी पुणे, महाराष्ट्र में 14-15 सितंबर 2023 को आयोजित हिंदी दिवस एवं तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के हिस्सा बने। कार्मिकों को हिंदी में कार्य करने हेतु प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से दिनांक 18.09.2023 से दिनांक 26.09.2023 तक कार्यालय परिसर में विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं जिसमें कार्यालय के कार्मिकों की उत्साहपूर्वक भागीदारी रही।

हिंदी पखवाड़े का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन दिनांक 27.09.2023 को किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रधान महालेखाकार सुश्री गीताली तारे ने की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि हिंदी के वरिष्ठ साहित्यकार आचार्य जगदीश तोमर जी थे। समापन समारोह में सर्वप्रथम अध्यक्ष महोदया ने मुख्य अतिथि आचार्य जगदीश तोमर जी को शॉल भेंट कर

उनका स्वागत किया। तदुपरांत, मुख्य अतिथि, अध्यक्ष महोदया एवं समूह अधिकारियों द्वारा दीप प्रदीपन एवं माँ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया गया, साथ ही कार्यालय के कर्मचारियों द्वारा सरस्वती वंदना प्रस्तुत की गई। तत्पश्चात, वरिष्ठ लेखा अधिकारी/प्रशासन-प्रथम श्री कौशल किशोर चौधरी द्वारा राजभाषा से संबंधित गृह एवं सहकारिता मंत्री जी के संदेश का वाचन किया गया। फिर, मुख्य अतिथि ने अपने प्रभावशाली उद्बोधन में हिंदी के प्रचार-प्रसार से संबंधित अनेक बातें एवं सुझाव दिए तथा कार्यालय में अधिकांश कार्य हिंदी में निष्पादित किए जाने हेतु बधाई दी। मुख्य अतिथि के सारगर्भित एवं प्रेरणादायक उद्बोधन के पश्चात अध्यक्ष महोदया ने अधिकारियों/कर्मचारियों को संबोधित करते हुए कार्यालयीन कामकाज में सहज और सरल हिंदी के उपयोग के लिए कहा।

इसके पश्चात हिंदी पखवाड़ा-2023 के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया तथा हिंदी पखवाड़े के सफल आयोजन में योगदान देने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों को स्मृति चिह्न भेंट किया गया। इसी तारतम्य में कार्यक्रम की अध्यक्ष सुश्री गीताली तारे द्वारा मुख्य अतिथि को प्रतीक चिह्न भेंट किया गया।

अंत में हिंदी पखवाड़ा समारोह-2023 के मुख्य संयोजक एवं वरिष्ठ लेखा अधिकारी/प्रशासन श्री रवींद्र सिंह बिष्ट ने कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, कार्यक्रम की अध्यक्ष सुश्री गीताली तारे तथा सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए हिंदी पखवाड़ा समारोह 2023 की समाप्ति की घोषणा की।

हिंदी परखवाड़ा समारोह - 2023 के प्रतियोगिताओं के परिणाम

निबंध लेखन प्रतियोगिता, आयोजन दिनांक 18.09.2023

प्रथम विजेता	श्री कृष्ण कुमार जांगिड़, सहायक लेखा अधिकारी
द्वितीय विजेता	सुश्री स्नेहा कुमारी, सहायक लेखा अधिकारी
तृतीय विजेता	सुश्री श्रुति पांडेय, सहायक लेखा अधिकारी

नाय लेखन प्रतियोगिता, आयोजन दिनांक 20.09.2023

प्रथम विजेता	सुश्री काजल वर्मा, लेखापाल
द्वितीय विजेता	सुश्री श्रुति पांडेय, सहायक लेखा अधिकारी
तृतीय विजेता	श्री जय प्रकाश, सहायक लेखा अधिकारी

टिप्पण एवं प्रारूपण प्रतियोगिता, आयोजन दिनांक 21.09.2023

प्रथम विजेता	श्री मनीष कुमार सिंह, सहायक लेखा अधिकारी
द्वितीय विजेता	श्री नवीन कुमार कौशिक, सहायक लेखा अधिकारी
तृतीय विजेता	सुश्री काजल वर्मा, लेखापाल

राष्ट्र भक्ति गीत प्रतियोगिता, आयोजन दिनांक 22.09.2023

प्रथम विजेता	श्री अरब कुमार कौशिक, लेखा लिपिक
द्वितीय विजेता	सुश्री सुष्मिता श्रीवास्तव, आशुलिपिक
तृतीय विजेता	श्री बालकिशन डागौर, एम.टी.एस.

स्वरचित काव्य पाठ प्रतियोगिता, आयोजन दिनांक 25.09.2023

प्रथम विजेता	श्री गौरव कुमार पाण्डेय, सहायक लेखा अधिकारी
द्वितीय विजेता	श्री देवेन्द्र कुमार मिश्रा, लेखापाल
तृतीय विजेता	सुश्री काजल वर्मा, लेखापाल

अंत्याक्षरी प्रतियोगिता, आयोजन दिनांक 26.09.2023

प्रथम विजेता	श्री विश्वजीत कुमार, श्री योगेश बरोदिया, श्री जय प्रकाश, श्री सौरभ वर्मा
द्वितीय विजेता	श्री बालकिशन, श्री फारूख, श्री लक्ष्मण, श्री विचार सिंह

नारा लेखन प्रतियोगिता के विजेता

प्रथम पुरस्कार

राष्ट्रभाषा, राष्ट्रगान दोनों का करते हैं सम्मान,
राष्ट्र से है प्रेम हम सबको मां समान,
इसी प्रेम के कारण एक दिन
हिंदी बोलेगा सारा जहान।



सुश्री काजल वर्मा, लेखापाल

द्वितीय पुरस्कार

आओ इस पर चर्चा करें,
इस पर भी बात करें,
हिंदी में ही भाषण दें,
हिंदी में ही संवाद करें।



सुश्री श्रुति पांडेय, सहायक लेखा अधिकारी

तृतीय पुरस्कार

जैसे देश विविध है, वेश विविध है,
वैसे विविध हमारी हिंदी है।
विविध राष्ट्र को जोड़े है जो,
वह भाषा अपनी हिंदी है।



श्री जय प्रकाश, सहायक लेखा अधिकारी, तृतीय पुरस्कार

श्री कृष्ण कुमार जांगिड़
सहायक लेखा अधिकारी

भारतवर्ष में सभी को साथ लेकर चलने की सोच दर्शाता है। उक्त वाक्य में पृथ्वी के सभी प्राणी जैसे मानव, पशु, पौधे एवं सूक्ष्मजीवों के आपसी समन्वय की महत्ता को भी उजागर किया गया है।

नवीनतम जी-
20 सम्मेलन का
आयोजन प्रथम बार
भारत की राजधानी नई दिल्ली में
09 से 10 सितंबर 2023
को किया गया।



3 INDIA

इस वर्ष के सम्मेलन में
प्रमुखतया सतत विकास,
अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय सुधार,
श्रमिक अधिकार एवं उनके
उत्थान, सार्वजनिक बुनाई, हरित
विकास के समझौते

नेतृत्व के उत्थान पर अधिक बल दिया गया है। भारत की पहल पर अफ्रीकन संघ को जी20 की स्थायी सदस्यता प्रदान कर दी गई जो कि ये दर्शाता है कि भारत वैश्विक विभाजन को दूर करने एवं उभरती हुई अर्थव्यवस्था की मांगों और उनके विचारों को एक मंच दिए जाने का समर्थन करता है। सम्मेलन में भारत, मध्य-पूर्व यूरोप के मध्य व्यापार संधि को अमल में लाए जाने बाबत



समझौता पत्र पर हस्ताक्षर किए गए जो कि भारत की उभरती हुई आर्थिक एवं व्यापारिक छवि को सुदृढ़ करता है। भारत द्वारा उक्त सम्मेलन के दौरान विभिन्न सदस्य राष्ट्रों के साथ द्विपक्षीय बातचीत भी भारत के राष्ट्रों के साथ निजी संबंधों की घनिष्ठता को दर्शाता है। भारत के द्वारा अपनी आधुनिक तकनीकी दक्षता के साथ ही धरोहर, संस्कृति एवं परंपराओं का भी प्रदर्शन किया गया जो कि दर्शाता है कि भारत विज्ञान एवं परंपरा के संबंध में विश्वपटल पर एक अग्रणी देश है। उक्त विषय में सम्मेलन में शामिल अन्य राष्ट्रों के प्रतिनिधियों द्वारा भारत की इस “विविधता में एकता” की पृष्ठभूमि की पुरजोर सराहना की गई।

संक्षेप में, विश्वपटल के अग्रणी राष्ट्रों के इस समूह की मेजबानी के सफल आयोजन ने भारत

को एक मजबूत और सक्षम राष्ट्रों की श्रेणी में ला खड़ा किया है एवं भारत की राजनीतिक एवं व्यापारिक कूटनीतियों ने भारत की “वसुधैव कुटुंबकम्” की सोच को वैश्विक स्तर पर स्थापित किया है। कमजोर एवं अन्य विकासशील देशों को साथ लेकर चलने की भारत की सोच को अग्रणी देशों के मंच पर साझा करने से भारत की वैश्विक समस्याओं पर चर्चा एवं उनके समाधान में अग्रणी भूमिका निभाने वाली छवि प्रखरित हुई है एवं विश्व-भर में जगत कल्याण को प्राथमिकता देने वाली सुदृढ़ मानसिकता का परिचय दिया गया है। उक्त जी-20 समूह की मेजबानी ने भारत को विश्व में व्याप्त विविध चुनौतियों पर पार पाने के लिए अन्य देशों के सहयोग एवं समर्थन के काबिल बना दिया है कि जगत कल्याण के लिए भारत वर्ष किसी भी दिशा में कार्य करने के लिए तत्पर है।



मानव शरीर के तंत्रिका तंत्र (Nervous System) के बारे में हमारा वर्तमान ज्ञान 5000 वर्ष पहले लिखे गए वेदों में दिग्ग मानव शरीर के आंतरिक विवरण के साथ बिल्कुल सटीक बैठता है। फिर प्रश्न उठता है कि क्या वेद सचमुच धार्मिक पुस्तकें हैं या मानवीय शरीर के तंत्रिका तंत्र की रचना और औषधि विज्ञान की पुस्तकें हैं?

– रेले (यहूदी लेखक)



आत्मनिर्भर भारत – स्वदेशी उत्पादन का महत्व

सुश्री स्नेहा कुमारी
सहायक लेखा अधिकारी

वर्तमान युग वैश्वीकरण का युग है आज संपूर्ण विश्व एक धागे में मानो पिरो दिया गया है किंतु वर्ष 2019 दिसंबर में आई वैश्विक महामारी कोविड-19 में मानो पुनः हमें आत्मनिर्भरता का पाठ पढ़ाया हो।

आत्मनिर्भरता का अर्थ होता है किसी भी चीज के लिए स्वयं पर निर्भर करना। यह प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की महत्वाकांक्षी योजनाओं में से एक है जिसे प्रधानमंत्री जी ने 12 मई 2020 को घोषित किया था। यह उस समय लाया गया जब हमारा देश महामारी की चपेट में था। आपदा को अवसर में बदलना इस योजना का मुख्य उद्देश्य है। इस अभियान के मुख्यतः निम्न पाँच स्तंभ हैं:-

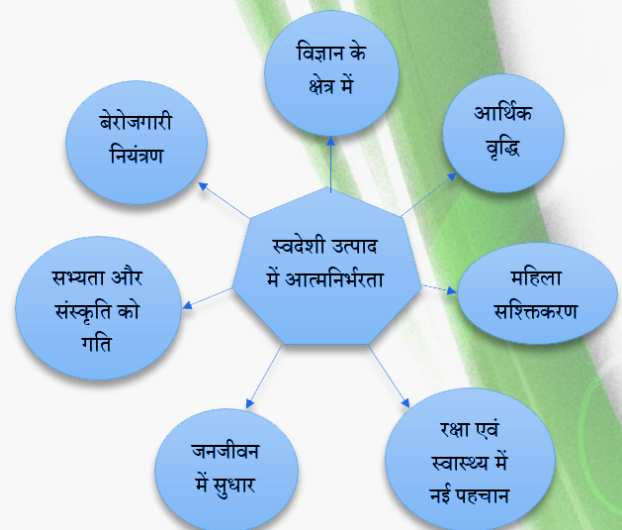


इन स्तंभों के द्वारा मोदी जी एक ऐसी अर्थव्यवस्था का निर्माण करना चाहते हैं जो बड़ी-बड़ी छलांग लगाए न कि छोटे-छोटे कदम चले।

इस अभियान के द्वारा सरकार ने महामारी के दौरान बेरोजगार हुए लोगों की मदद करने व लॉकडाउन की स्थिति से उभरने के लिए प्रधानमंत्री

गरीब कल्याण व प्रधानमंत्री स्व-निधि आदि योजनाएं चलाई जिसका बजट 20 लाख करोड़ था जो देश की जीडीपी का लगभग दस प्रतिशत था इसमें मोदी जी ने “वॉकल फॉर लोकल” एवं “दुनिया के लिए बनाओ” आदि का नारा दिया और इस प्रकार भारत पुनः स्वदेशी निर्माण व उत्पाद की ओर अग्रसर हुआ। इसके जरिए सरकार ने एम.एस.एम.ई. पर भी विशेष ध्यान दिया ताकि अधिक से अधिक वस्तुओं का निर्माण देश के भीतर ही हो सके और कॉविड-19 के प्रभाव से हुई क्षति से उबर सके।

देश के विकास में स्वदेशी उत्पाद का निम्न प्रकार से अपना ही महत्व होता है:-



01. विज्ञान के क्षेत्र में :- चंद्रयान-3 की सफलतापूर्वक लैंडिंग ने देश का सीना गर्व से चौड़ा कर दिया है। स्वदेश निर्मित इतनी कम लागत में इस सफलता में संपूर्ण विश्व को यह दिखा दिया है कि भारत कैसे खुद को गुलामी से आत्मनिर्भरता

की ओर लाया है और चांद के दक्षिण ध्रुव में पहुंचने का विश्व इतिहास बनाया है। इसके अतिरिक्त ऐसे कितने उदाहरण जैसे मंगलयान, आदित्य-एल.1 आदि जिसने आत्मनिर्भरता में स्वदेशी उत्पादों के महत्व को उजागर किया है।

02. **बेरोजगारी नियंत्रण** :- मेक इन इंडिया ने देश में कई रोजगार उत्पन्न किए, जिसने लघु उद्योगों व छोटी दुकानों को बढ़ावा दिया है जिससे देश में बेरोजगारी में कमी हुई है और आतंकवाद व नक्सलवाद पर भी प्रहार किया गया है।

03. **महिला सशक्तिकरण**

को बढ़ावा :- छोटे-छोटे शहरों व गाँवों या उद्योगों में सरकार द्वारा सहयोग से उन्हें गति मिली है, जिससे बेरोजगार महिलाओं के घर तक सुनिश्चित हो सका है। क्योंकि सरकार ने हस्त निर्मित वस्तुओं को बढ़ावा देने हेतु कई योजनाएं जैसे “वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट” चलाई है।

04. **रक्षा/स्वास्थ्य** :- एक समय था जब सरकार को रक्षा सामग्री हेतु दूसरे देशों पर निर्भर था किंतु आज इतना सक्षम हो गया है कि ब्रह्मोस मिसाइल जैसे प्रचंड उपकरणों को कई देशों को निर्यात कर रहा है। रक्षा उपकरणों के निर्यात में भारत विश्व में चौथे स्थान पर पहुंच गया है। कॉविड-19 के समय भारी संख्या में पीपीटी उत्पाद व वैक्सिन निर्माण में मिली सफलता ने यह सिद्ध कर दिया कि अब भारत आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर हो चुका है और अपने स्वदेशी उत्पादों के जरिए न केवल स्वयं का कल्याण कर रहा है अपितु

अन्य देश भी इस से लाभान्वित हो रहे हैं। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है कि कई देशों को मुफ्त में वैक्सीन व पीपीटी दी गई हैं।

05. **सभ्यता और संस्कृति को गति** :-

भारत अपनी सभ्यता और संस्कृति व विविधता के लिए विश्व प्रसिद्ध है तथा स्वदेशी उत्पाद में इसकी झलक देखी जा सकती है, जिसका एक अलग महत्व है। आत्मनिर्भर अभियान के जरिए जनजातियों की संस्कृति को बचाया जा रहा है।

06. **जनजीवन में सुधार व आर्थिक वृद्धि** :-

स्वदेशी निर्मित उत्पाद सस्ते होते हैं, जिसके कारण इसकी पहुँच साधारण लोगों तक सुगमता से हो पाती है, जिससे जनजीवन का सुधार व आर्थिक वृद्धि को गति मिलती है तथा उनके जीवन स्तर में वृद्धि होती है।

अतः कहा जा सकता है कि आत्मनिर्भरता में स्वदेशी उत्पादों का एक विशेष महत्व है।

इसका महत्व तो 1905 की स्वदेशी आंदोलन व 1921 के असहयोग आंदोलनों में देखा जा सकता है, जब गांधी जी ने विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया था और स्वदेशी को अपनाने का नारा दिया था। देश की स्वतंत्रता के पश्चात स्वदेशी उत्पाद महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। माननीय प्रधानमंत्री जी ने यह स्पष्ट कर दिया है कि आत्मनिर्भरता का अर्थ आत्मकेंद्रित नहीं है अपितु स्वयं के विकास से विश्व के विकास में योगदान करना है। अतः आशा है कि जल्द ही हमारा देश पूर्ण रूप से आत्मनिर्भर बन जाएगा और पुनः विश्वपटल पर शीर्ष स्थान हासिल करेगा।





आत्मनिर्भर भारत – स्वदेशी उत्पादन का महत्व

निबंध - तृतीय पुरस्कार

सुश्री श्रुति पांडे

सहायक लेखा अधिकारी

अपने हृदय में नए-नए सपने सजाओ,
खुद को एवं संपूर्ण भारत को आत्मनिर्भर बनाओ ॥

विगत 100 वर्षों में पूरे विश्व में विभिन्न प्रकार की महामारियाँ देखी गयी हैं परंतु कोविड-19 का प्रकोप बहुत ही वृहत् और अत्यंत कष्टकारी था। इसने पूरे विश्व के समक्ष हजारों नई चुनौतियाँ लाकर रख दी और जीवन थम सा गया।

आज के इस दौर में जहाँ वैश्वीकरण अपने उच्चतम स्तर पर है, वहाँ 12 मई 2020 को हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने आखिर क्यों आत्मनिर्भर भारत अभियान की घोषणा की ?

आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत 20 लाख करोड़ रु. की राशि आवंटित हुई थी, जिसका मूल उद्देश्य था कि भारत में विभिन्न क्षेत्रों में आपसी सामंजस्य बैठा कर उत्पादन में आने वाली समस्याओं का निराकरण किया जा सके एवं वे युवा जो अपना व्यापार शुरू करना चाहते हैं उन्हें आर्थिक रूप से सहायता प्राप्त हो सके।

एक आम नागरिक होने के नाते यह समझना थोड़ा मुश्किल था कि आखिर इससे क्या लाभ होगा। इसके लिए इतिहास के पन्नों को टटोलना बहुत जरूरी है।

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में स्वदेशी अभियान की भूमिका अनमोल रही है। वह स्वदेशी

अभियान ही था जिसके कारण विदेशियों की जड़ें कमजोर हो पाई थी एवं जो उत्पादन भारतवासी कर रहे थे उसने हर वर्ग में समानता का भाव उत्पन्न किया था। अलग-अलग क्षेत्रों में चल रहे प्रयासों को एक जुट किया था और हमारी आजादी की लड़ाई को नया रूप और नई दिशा प्रदान की थी।

आज इस दौर में आत्मनिर्भर होना इसलिए महत्वपूर्ण है जिससे हम स्वयं की आवश्यकताओं

को तो पूर्ण कर ही सकें साथ ही विश्व स्तर पर निर्यात बढ़ा कर आर्थिक रूप से परिपक्वता हासिल कर सकें।



आत्मनिर्भर भारत अभियान के मुख्यतः 5 आधार स्तंभ हैं :- अर्थव्यवस्था, सिस्टम, इन्फ्रास्ट्रक्चर, डेमोग्राफी एवं डिमांड।

इन सभी में एक चीज जो इन सबको जोड़ती है वो है इच्छाशक्ति। हमारे देश ने कभी भी वेंटीलेटर और स्वास्थ्य संबंधी उपकरणों की इतने बड़े स्तर पर उत्पादन की प्रक्रिया संपूर्ण रूप से भारत ने यह साबित कर दिया कि हम किसी भी क्षेत्र में उत्पादन को उसकी चरम सीमा तक पहुंचा सकते हैं।

अब केवल याद यह रखना है कि यह उत्साह और जोश सिर्फ जरूरत के वक्त ही ना दिखे, यह हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होना चाहिए जिससे हम प्रतिदिन कुछ नया बनाएं, कुछ नया सीखें युवा वर्ग नौकरी करने की जगह नौकरियाँ एवं रोजगार उत्पन्न करने की क्षमता उत्सर्जित करें।

यदि हम ध्यान दें तो हम पाएंगे की बहुत सी बड़ी कम्पनियों के उच्च पदों पर भारतीय मूल के लोग बैठे हुए हैं जैसे कि गूगल, माइक्रोसॉफ्ट आदि। अब समय आ गया है कि वह युवा वर्ग जो होनहार है, जिसके अंदर तकनीकी समझ है, जिसके अंदर खतरा मोल लेने की क्षमता है उसे वह सारी सुविधाएं प्रदान हो जो एक उद्योग को बढ़ावा देती है।

इस अभियान की सर्वश्रेष्ठ बात यह है कि इसमें हर वर्ग का ध्यान रखा गया है चाहे वह लघु उद्योग हो, कृषि, एम.एस.एम.ई., महिला वर्ग आदि हर वर्ग को आसान ऋण प्राप्त हो यह प्राथमिकता है।

वह व्यापार जो किसी कारण से बंद हो गए थे उन्हें पुनः बल देने की बात भी कही गई है। इस अभियान ने महिला वर्ग का उत्साह वर्धन किया है एवं युवा वर्ग अनेक नए बिजनस मॉडल लेकर सामने आया है। इसी अभियान के चलते भारत में

“यूनिफोर्न इकोसिस्टम” बन गया है एवं कई छोटे स्टार्ट-अप को विश्व स्तर पर सम्मानित किया गया है।

जब उत्पादन भारत के हाथों में होगा तो हमारी आयात पर निर्भरता कम होगी जिससे हमारी अर्थव्यवस्था मजबूत होगी, हमारा उद्देश्य निर्यात की तरफ बढ़ता रहेगा, जिससे जीवन जीने का स्तर हो या फिर शिक्षा का स्तर हर जगह बढ़ोत्तरी होगी। नए अवसरों का उत्सर्जन होगा और समाज में हर वर्ग का व्यक्ति आत्मनिर्भर बनने में विश्वास करेगा।

ब्रेन ड्रेन की समस्या का अंत होने से देश दोगुनी गति से तरक्की की राह पर चलेगा और भारत को विश्वगुरु बनने की प्रतिस्पर्धा में आगे ले जाने के लिए आत्मनिर्भर होना हमारे जीवन एवं प्रतिदिन के कार्यों में झलकना चाहिए, जिससे जो चीजें हमने कुछ दशकों बाद समझी आने वाली पीढ़ी इन सब चीजों को बचपन से देखकर ही सीख सके और सपनों की उड़ान उन्मुक्त तरह से भर सके।

अतः “वोकल फॉर लोकल” का नारा याद रखते हुए हर नागरिक का यह कर्तव्य है कि अपने स्तर पर आत्मनिर्भरता स्वयं के जीवनशैली का हिस्सा बनाएं और भारत की आधुनिकता को गगनचुंबी स्तर पर पहुँचाएं।





खेलकूद एवं सांस्कृतिक गतिविधियाँ

श्री गौरव प्रताप सिंह
कल्याण सहायक

अप्रैल-2023 से मार्च-2024 तक खेलकूद एवं सांस्कृतिक गतिविधियाँ

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग की पश्चिम क्षेत्रीय एवं अंतर क्षेत्रीय वर्ष 2023-24 तक खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन।

1. भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग पश्चिम क्षेत्रीय कैरम प्रतियोगिता जो दिनांक 31.10.2023 से 02.11.2023 तक कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) छत्तीसगढ़, रायपुर द्वारा आयोजित की गई थी जिसमें कार्यालय की संयुक्त टीम ने विजेता होने का गौरव प्राप्त कर अंतर क्षेत्रीय कैरम प्रतियोगिता में खेलने की पात्रता हासिल की।
2. भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग पश्चिम क्षेत्रीय टेबल टेनिस प्रतियोगिता जो दिनांक 07.11.2023 से 09.11.2023 तक कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) राजस्थान जयपुर द्वारा आयोजित की गई थी जिसमें कार्यालय की संयुक्त टीम ने खेलने की पात्रता हासिल की।
3. भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग की अंतर क्षेत्रीय वैंटरन प्रतियोगिता जो कि दिनांक 01.12.2023 से 02.12.2023 तक कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) हिमाचल प्रदेश, शिमला जिसमें Men's 40+ आयु वर्ग में श्री सुजय चतुर्वेदी ने विजेता होने का गौरव प्राप्त किया।
4. भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग पश्चिम क्षेत्रीय बैडमिंटन प्रतियोगिता जो दिनांक 08.01.2024 से 11.01.2024 तक कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) छत्तीसगढ़ रायपुर द्वारा आयोजित की गई थी जिसमें कार्यालय की संयुक्त टीम ने विजेता होने का गौरव प्राप्त कर अंतर क्षेत्रीय बैडमिंटन प्रतियोगिता में खेलने की पात्रता हासिल की।
5. भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग पश्चिम क्षेत्रीय हॉकी प्रतियोगिता जो दिनांक 03.01.2024 से 04. 01.2024 तक कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) छत्तीसगढ़ रायपुर द्वारा आयोजित की गई थी, जिसमें कार्यालय की संयुक्त टीम ने विजेता होने का गौरव प्राप्त कर अंतर क्षेत्रीय हॉकी प्रतियोगिता में खेलने की पात्रता हासिल की।
6. भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग पश्चिम क्षेत्रीय फुटबॉल प्रतियोगिता जो दिनांक 13.02.2024 से 15.02.2024 तक कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) राजस्थान जयपुर द्वारा आयोजित की गई थी जिसमें कार्यालय की संयुक्त टीम ने उपविजेता होने का गौरव प्राप्त कर अंतर क्षेत्रीय फुटबॉल प्रतियोगिता में खेलने की पात्रता हासिल की।

राष्ट्रीय स्तर वर्ष 2023-24 खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन

1. कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) - द्वितीय, मध्य प्रदेश, ग्वालियर में कार्यरत सुश्री हिमानी चतुर्वेदी का चयन मध्य प्रदेश टीम की ओर से 37वें राष्ट्रीय गेम्स-2023 जो दिनांक 29.10.2023 से 11.02.2023 तक पणजी, गोआ में आयोजित की गई थी, में भाग लिया, जिसमें तृतीय स्थान प्राप्त कर कार्यालय का नाम रोशन किया।
2. कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) - प्रथम एवं द्वितीय म.प्र. ग्वालियर में कार्यरत, श्री सुजय चतुर्वेदी एवं सुश्री हिमानी चतुर्वेदी का चयन मध्य प्रदेश टेबल टेनिस टीम की ओर से सीनियर नेशनल टेबल टेनिस चैंपियनशिप-2023 जो कि दिनांक 16.12.2023 से 22.12.2023 तक पंचकुला, हरियाणा में आयोजित की गई थी में भाग लिया।

अखिल भारतीय सिविल सेवा वर्ष 2023-24 खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) – द्वितीय, मध्य प्रदेश, ग्वालियर में कार्यरत श्री विजय माहोर, एवं श्री के.राम चन्द्रन का मध्य प्रदेश कैरम टीम में चयन किया गया था, जिन्होंने दिनांक 10.02.2024 से 15.02.2024 तक पटना, बिहार में आयोजित प्रतियोगिता में भाग लिया।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) – प्रथम एवं द्वितीय, मध्य प्रदेश, ग्वालियर की ओर से खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) – प्रथम एवं द्वितीय, मध्य प्रदेश, ग्वालियर को मुख्यालय की ओर भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग 2023-24 अंतर क्षेत्रीय हॉकी प्रतियोगिता के आयोजन की जिम्मेदारी सौंपी गई है जिसका सफल आयोजन दिनांक 01.04.2024 से 05.04.2024 तक कराया गया। इस प्रतियोगिता के विजेता दिल्ली लेखपरीक्षा एवं उपविजेता पी.ए.जी. पंजाब की टीम रही।



फुटबॉल की उपविजेता टीम - स्थान जयपुर



हॉकी की विजेता टीम - स्थान रायपुर



बैडमिंटन की विजेता टीम - स्थान रायपुर



कैरम की विजेता टीम - स्थान रायपुर

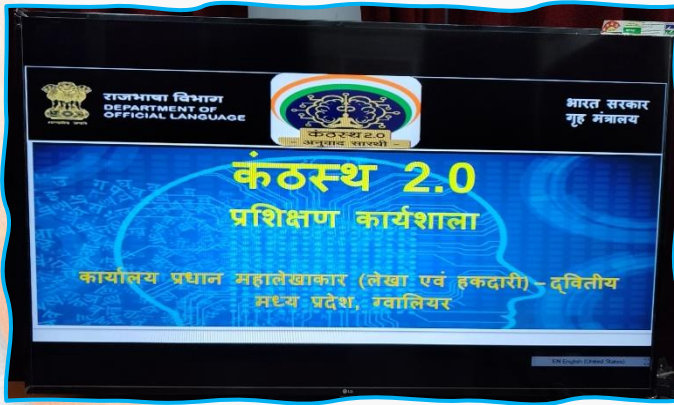


ग्वालियर में आयोजित अंतर क्षेत्रीय हॉकी प्रतियोगिता की दिल्ली लेखापरीक्षा की विजेता टीम



ग्वालियर में आयोजित अंतर क्षेत्रीय हॉकी प्रतियोगिता की पी.ए.जी. पंजाब की उपविजेता टीम

कंठस्थ 2.0 – कार्यशाला



दिनांक 27.06.2023 को अनुवाद टूल कंठस्थ 2.0 पर आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला में प्रशिक्षण देते हुए कनिष्ठ अनुवादक श्री रुपेंद्र कुमार कौशल

हिंदी प्रोत्साहन योजना वर्ष 2022-23

वर्ष में 20 हजार शब्द हिंदी में लिखने हेतु निम्न अधिकारियों/कर्मचारियों को वर्ष 2022-23 के लिए पुरस्कृत किया गया:-



श्री मुकेश खंडेलवाल,
सहायक पर्यवेक्षक

प्रथम पुरस्कार



श्री गौरव गुप्ता,
वरिष्ठ लेखापाल

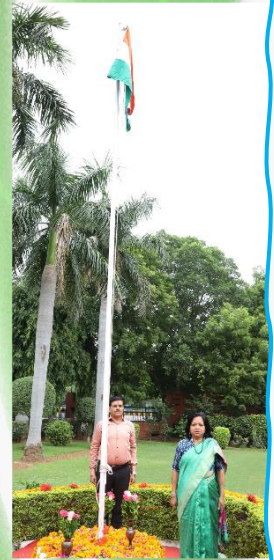
द्वितीय पुरस्कार



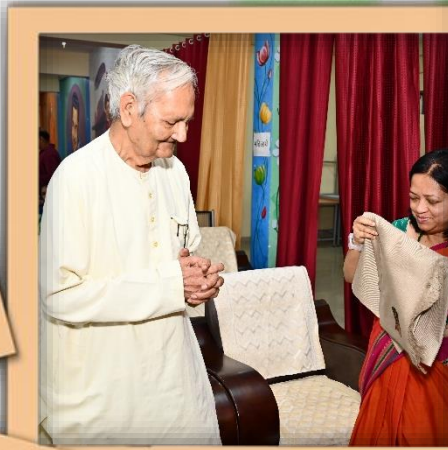
सुश्री काजल वर्मा,
लेखापाल

तृतीय पुरस्कार

स्वतंत्रता दिवस - 2023



हिंदी पखवाड़े की झलकियाँ



हिंदी पखवाड़े की झलकियाँ



अंतरराष्ट्रीय योग दिवस





सतर्कता जागरूकता सप्ताह के अवसर पर प्रधान महालेखाकार
महोदया का कार्मिकों को संबोधन



ऑडिट सप्ताह - 2023



लेखा हकदारी एवं लेखापरीक्षा कार्यालयों के समूह अधिकारी



अनुभव साझा कार्यक्रम



क्रिकेट प्रतियोगिता





संवाद प्रतियोगिता



शिल्प कला प्रदर्शनी



स्थानीय शासन लेखापरीक्षा पर वार्ता



प्रधान महालेखाकार महोदया के कर कमलों द्वारा वृक्षारोपण



वृक्षारोपण करते उपमहालेखाकार एवं वरिष्ठ उपमहालेखाकार



प्रधान महालेखाकार महोदया के साथ अन्य अधिकारी/कर्मचारी गण (वृक्षारोपण सदस्य)



रक्तदान शिविर



प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता



प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के प्रतिभागी



ऑडिट सप्ताह समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह



ऑडिट सप्ताह समापन पर विजेताओं को पुरस्कार वितरण



प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के उपविजेता

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस समारोह - 2024





नराकास, ग्वालियर द्वारा आयोजित प्रतियोगिताओं में कार्यालय की उपलब्धियां



उपमहालेखाकार/प्रशासन (दाएं) राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए एवं राजभाषा पत्रिका 'वीरांगना' दोनों को द्वितीय स्थान प्राप्त करने पर प्रशस्ति-पत्र प्राप्त करते हुए



वर्ष 2023-24 में नराकास में संपन्न हुई विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता

कार्यालय की पत्रिका 'वीरांगना' के 72-73वें संयुक्तांक' एवं राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु नराकास, ग्वालियर द्वारा प्रदत्त प्रशस्ति



SUPREME COURT OF INDIA
सर्वोच्च न्यायालय
Dedicated to Nation in Public Interest

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ग्वालियर

* प्रशस्ति पत्र *

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ग्वालियर द्वारा नगर में स्थित समस्त केंद्रीय कार्यालयों/उपक्रमों/निगमों द्वारा वर्ष 2022-23 में "राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट कार्य" करने हेतु कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी-द्वितीय), मध्य प्रदेश, ग्वालियर को "द्वितीय स्थान" प्राप्त करने पर सम्मानित किया जाता है।

ग्वालियर
दिनांक:- 23.02.2024

अध्यक्ष

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ग्वालियर,

एवं महालेखाकार

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम),

मध्य प्रदेश, ग्वालियर



SUPREME COURT OF INDIA
सर्वोच्च न्यायालय
Dedicated to Nation in Public Interest

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ग्वालियर

* प्रशस्ति पत्र *

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ग्वालियर द्वारा नगर में स्थित समस्त केंद्रीय कार्यालयों/उपक्रमों/निगमों द्वारा वर्ष 2022-23 में विभागीय हिंदी पत्रिका का "वर्ष में एक पत्रिका प्रकाशित करने वाले कार्यालयों" में कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी-द्वितीय), मध्य प्रदेश, ग्वालियर को "वीरांगना" के श्रेष्ठ प्रकाशन हेतु "द्वितीय" स्थान प्राप्त करने पर सम्मानित किया जाता है।

ग्वालियर
दिनांक:- 23.02.2024

अध्यक्ष

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ग्वालियर,

एवं महालेखाकार

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम),

मध्य प्रदेश, ग्वालियर



भारत की एतिहासिक धरोहर "ग्वालियर किला"